

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई



वार्तापत्र



२५ नोव्हेंबर २००७

मा. यशवंतराव चव्हाण यांना २३व्या
स्मृतीदिनानिमित्त विनम्र अभिवादन

क्षणचित्रे

सन २००६ चा यशवंतराव चव्हाण राष्ट्रीय पुरस्कार मा. नारायण मूर्ती व मा. सुधा मूर्ती यांना प्रदान करण्यात आला. त्याप्रसंगी व्यासपीठावरील प्रमुख मान्यवर - मा. सुधा मूर्ती, तत्कालिन राजस्थानच्या मा. राज्यपाल व विद्यमान मा. राष्ट्रपती श्रीमती प्रतिभाताई पाटील, केंद्रीय कृषी मंत्री व यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानचे अध्यक्ष मा. ना. शरदचंद्र पवार व मा. नारायण मूर्ती.



सन २००६ चा यशवंतराव चव्हाण राष्ट्रीय पुरस्कार मा. नारायण मूर्ती यांना प्रदान करताना यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानचे अध्यक्ष व केंद्रीय कृषी मंत्री मा. ना. शरदचंद्र पवार सोबत प्रतिष्ठानचे उपाध्यक्ष मा. हुसेन दलवाई, मा. सुधा मूर्ती व मान्यवर.

महाराष्ट्र शासन आणि यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित 'सर्वांगीण शैक्षणिक गुणवत्ता विकास कार्यक्रमात' आपले विचार मांडताना प्रतिष्ठानच्या विश्वस्त मा. खा. सुप्रियाताई सुळे सोबत व्यासपीठावर उपस्थित - प्रधान सचिव शालेय शिक्षण (तत्कालिन) मा. आनंद कुलकर्णी, मा. विजयसिंह मोहिते पाटील (ग्रामविकास मंत्री) व मान्यवर.



क्षणचित्रे

आ. नितीन राऊत यांच्या सत्कार प्रसंगी नागपूर विभागीय केंद्राचे अध्यक्ष श्री. गिरीश गांधी, डॉ. अक्षयकुमार काळे, प्रा. वामनराव निवाळकर, प्रा. सुरेश द्वादशीवार, खासदार दत्ताजी मेघे, आमदार नितीन राऊत, श्री. विजय जिचकार व मान्यवर.



महाराष्ट्र महिला व्यासपीठ व महिला विकास मंडळ कुलाबा आयोजित 'उत्तुंग भरारी' कार्यक्रमात प्रधान सचिव मा. चित्कला झुत्शी यांचा पुष्पगुच्छ देऊन सन्मान करताना महाराष्ट्र महिला व्यासपीठाच्या संयोजक श्रीमती रेखा नार्वेकर.

कोकण विभागीय केंद्र, रत्नागिरीच्या वतीने दिनांक २२/३/२००७ रोजी लांजा येथे बचत गटातील महिलांना प्रशिक्षणाचे वेळी उद्बोधन करताना श्रीमती कांचन ताई परुळेकर, बसलेले डावीकडून महिला व्यासपीठाच्या सचिव श्रीमती प्राची शिंदे, मा. सदस्य श्री. महमद रखांगी, श्री. सुनिल शिर्के व श्रीमती नंदा शेलार.



दि. २९,३०,३१ मार्च २००७ या कालावधीत कोकण विभागीय केंद्र, रत्नागिरीच्या वतीने बचत गटातील महिलांनी बनविलेल्या उत्पादनाचे भव्य विक्री व प्रदर्शन आयोजित करण्यात आले होते. त्याच्या उद्घाटनप्रसंगी उपस्थित महिला वर्ग व बचत गटातील महिलांनी उत्पादित केलेल्या वस्तूंचे स्टॉल.



बी. रघुनाथ स्मृतिदिन काव्यसंध्येत रसिकांना संबोधित करतांना ज्येष्ठ कवि मा. श्री. दि. इनामदार, व्यासपीठावर श्री. विजय कान्हेकर, श्री. सचिन मुळे, अध्यक्ष श्री. नंदकिशोर कागलीवाल, प्रा. विसुभाऊ वापट, श्री. सतिश कागलीवाल व मान्यवर. दिनांक ७ सप्टेंबर २००७, विभागीय केंद्र, औरंगाबाद.

यशवंतराव चव्हाण यांच्या ९४व्या जयंतीच्या पूर्वसंध्येस विभागीय केंद्र नाशिक तर्फे आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल असलेल्या मुला-मुलींना टी-शर्ट, टोपी व पुस्तक वाटप करण्यात आले. त्याप्रसंगी दिशा क्लासेसची विद्यार्थिनी कु. निर्मला तेजनकर आपले मनोगत व्यक्त करतांना. व्यासपीठावर डावीकडून श्री. मुकूल भोसले, श्री. विश्वास ठाकूर, अॅड. विलास लोणारी, सौ. वर्षा ठाकूर, सौ. ज्योती ठाकूर, श्री. संजय होळकर, सौ. दिपाली मानकर, श्री. राजेंद्र सुर्यवंशी, श्री. विनायक रानडे, श्री. विनय अंधारे, श्री. ईश्वर जगताप व श्री. संजय पवार.



नागपूर विभागीय केंद्र, आयोजित महात्मा गांधी जयंती निमित्त व्याख्यानमालेत प्रा. सुरेश द्वादशीवार आपले विचार मांडताना, सोबत अध्यक्ष श्री. गिरीश गांधी व अॅड. अक्षयकुमार काळे.



विभागीय केंद्र, लातूरचे वतीने कायदेविषयक चिकित्सा केंद्राचे उद्घाटन करताना लातूर जिल्हा व सत्र न्यायाधिश मा. श्री. अनंतराव लकुळकर, अध्यक्ष डॉ. जे. एम्. वाघमारे, श्री. भाऊसाहेब गोरे, अॅड. जाधव, श्री. हरिभाऊ जवळगे व अॅड. पाटील.





यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई

ट्रस्ट रजि. नं. एफ. १०६४३, दिनांक १७ सप्टेंबर १९८५, सोसायटी रजि. नं. एम. एम. एच./बी. ओ. एम. -५३९/८५

यशवंतराव चव्हाण सेंटर, जन. जगन्नाथराव भोसले मार्ग, मुंबई - ४०० ०२१.

● विश्वस्त मंडळ सदस्य ●

- | | |
|---------------------------------------|--------------|
| १. मा. श्री. शरदराव पवार | अध्यक्ष |
| २. मा. श्री. हुसेन दलवाई | उपाध्यक्ष |
| ३. मा. श्री. अरुण गुजराथी | कार्याध्यक्ष |
| ४. मा. श्री. श. गं. काळे | सरचिटणीस |
| ५. मा. डॉ. रवींद्र बापट | कोषाध्यक्ष |
| ६. मा. श्री. मोहन धारिया | |
| ७. मा. श्री. शिवाजीराव पाटील-निलंगेकर | |
| ८. मा. श्री. दिलीप वळसे-पाटील | |
| ९. मा. प्रा. पी. बी. पाटील | |
| १०. मा. श्री. राम प्रधान | |
| ११. मा. श्री. गुलाम गौस | |
| १२. मा. श्री. लक्ष्मण माने | |
| १३. मा. श्री. वसंतराव कार्लेकर | |
| १४. मा. श्री. ज्ञानेश्वर खैरे | |
| १५. मा. सौ. सुप्रिया सुळे | |
| महाराष्ट्र शासन प्रतिनिधी | |
| १६. मा. श्री. उमेशचंद्र सरंगी | |
| मा. मुख्यमंत्र्यांचे प्रधान सचिव | |
| १७. — | |

● कार्यकारिणी मंडळ सदस्य ●

- | |
|--|
| १. मा. श्री. शरदराव पवार |
| २. मा. श्री. हुसेन दलवाई |
| ३. मा. श्री. अरुण गुजराथी |
| ४. मा. श्री. श. गं. काळे |
| ५. मा. डॉ. रवींद्र बापट |
| ६. मा. श्री. जयंत पाटील |
| ७. मा. श्री. राम ताकवले |
| ८. मा. श्री. ना. धों. महानोर |
| ९. मा. श्री. बापूसाहेब काळदाते |
| १०. मा. श्री. रा. सु. गवई |
| ११. मा. श्री. एन. के. पी. साळवे |
| १२. मा. श्री. के. बी. आवाडे |
| १३. मा. श्री. श्रीनिवास पाटील |
| १४. मा. श्री. गिरीश गांधी |
| १५. मा. सौ. सुप्रिया सुळे |
| १६. मा. श्री. शिवाजीराव गि.पाटील |
| १७. मा. श्री. अंकुशराव टोपे |
| १८. मा. श्री. अप्पासाहेब ऊर्फ सा. रे. पाटील |
| श्री दत्त शेतकरी सहकारी साखर कारखाना लि., शिरोळ |
| १९. मा. श्री. शामराव पा. पाटील |
| मा. अध्यक्ष, सह्याद्री सहकारी |
| साखर कारखाना, कराड (पदसिद्ध) |
| २०. मा. श्री. यशवंतराव गडाख |
| २१. मा. श्री. माणिकराव पाटील |
| अध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य सहकारी बँक लि. (पदसिद्ध) |
| महाराष्ट्र शासन प्रतिनिधी |
| २२. मा. श्री. उमेशचंद्र सरंगी |
| मा. मुख्यमंत्र्यांचे प्रधान सचिव |

कार्यकारी समिती

- | | |
|---------------------------|------------------------------|
| १. मा. श्री. शरदराव पवार | ५. मा. डॉ. रवींद्र बापट |
| २. मा. श्री. हुसेन दलवाई | ६. मा. श्री. श्रीनिवास पाटील |
| ३. मा. श्री. अरुण गुजराथी | ७. मा. सौ. सुप्रिया सुळे |
| ४. मा. श्री. श. गं. काळे | |

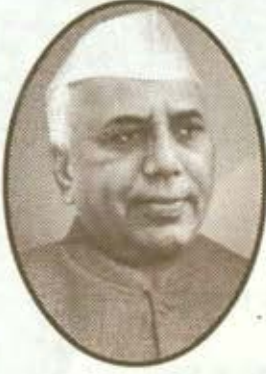


यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई

| | | |
|---|---------------------|---|
| विभागीय केंद्र, कऱ्हाड | अध्यक्ष | श्री. राम प्रधान |
| विभागीय केंद्र, पुणे | अध्यक्ष | डॉ. राम ताकवले |
| विभागीय केंद्र, नागपूर | अध्यक्ष | श्री. गिरीश गांधी |
| विभागीय केंद्र, नाशिक | अध्यक्ष | श्री. विनायकराव पाटील |
| विभागीय केंद्र, रत्नागिरी | अध्यक्ष | श्री. भाऊसाहेब नेवाळकर |
| विभागीय केंद्र, औरंगाबाद | अध्यक्ष | श्री. नंदकिशोर कागलीवाल |
| विभागीय केंद्र, लातूर | अध्यक्ष | डॉ. जनार्दन वाघमारे |
| मुख्य कार्यालय | आर्थिक सल्लागार | श्री. प्रभाकर जोशी |
| सृजन | संकल्पना व संयोजिका | श्रीमती सुप्रिया सुळे |
| महाराष्ट्र महिला व्यासपीठ | संयोजिका | श्रीमती रेखा नार्वेकर |
| नवमहाराष्ट्र युवा अभियान | संयोजक | श्री. दत्ता बाळसराफ |
| कृषी व सहकार व्यासपीठ | निमंत्रक | श्री. बी. डी. पवार |
| कायदेविषयक सहाय्य व सल्ला फोरम | सदस्य सचिव | श्री. म. बा. पवार |
| वार्तापत्र | मानद संपादक | श्री. दत्ता बाळसराफ |
| यशवंतराव चव्हाण राष्ट्रीय ग्रंथालय | ग्रंथालय सल्लागार | श्री. वा. रा. कामत |
| | ग्रंथपाल | श्री. अनिल पाझारे |
| यशवंतराव चव्हाण सभागृह व कलादालन | व्यवस्थापक | श्री. विजय देसाई |
| यशवंतराव चव्हाण माहिती व तंत्रज्ञान प्रबोधिनी | संचालक | ब्रिगेडीअर - श्री. सुशील गुप्तन |
| | मुख्य विपणन अधिकारी | श्री. विक्रम वासुदेव |
| प्रथम - प्राथमिक शिक्षण उपक्रम | कार्यकारी सचिव | श्रीमती फरीदा लांबे |
| मानद वास्तु विशारद | | मे. शशी प्रभू अॅण्ड असोसिएट्स |
| सांविधिक लेखा परिक्षक | | मे. सी. व्ही. के. असोसिएट्स. मुंबई |
| अंतर्गत हिशोब तपासनीस | | मे. टेंबे आणि म्हात्रे, चार्टर्ड अकाउंटंट |



विचारधन



“बेकारी आणि वैफल्यामुळे हिंसेला प्रोत्साहन मिळते आणि त्यामुळे लोकशाहीच संकटात सापडण्याचा धोका निर्माण होऊ लागतो. अशा वेळी हिंसा निपटून काढावी, नेस्तनाबूत करावी, असेही सांगितले जाते. पण दंडूकशाही मार्गाने हिंसा निपटून काढण्याने मूळ प्रश्नांचे गांभीर्य कमी होत नाही. उलट वाढतच राहते. यासाठी समाजाच्या मूलभूत प्रश्नांच्या सोडवणुकीसाठी, आर्थिक व सामाजिक विकासाच्या निश्चित कार्यक्रमाचा आराखडा तयार करणे, देशाची राष्ट्रीय संपत्ती वाढवून संपत्ती व उत्पन्न यांच्यांत समता प्रस्थापित करणे आणि झालेल्या विकासाचा लाभ देशातील तरुणांनाही वाटला जात आहे, हे दाखवून देणे, अशी महत्त्वाची कार्ये आपल्याला शक्य करून दाखवावी लागतील.”

- यशवंतराव चव्हाण

अनुक्रमणिका

| | |
|---|----|
| माहिती - तंत्रज्ञान प्रबोधिनी सन्मान प्रमाणपत्र..... | ४ |
| संपादकीय..... | ५ |
| मराठी विज्ञान परिषद - स्व. यशवंतराव चव्हाण..... | ७ |
| मा. डॉ. अनिल काकोडकर - सन्मानपत्र..... | १२ |
| मा. ना. शरदचंद्र पवार - सन्मानपत्र..... | १४ |
| उपक्रम : कार्यवृत्त | |
| नवमहाराष्ट्र युवा अभियान - कार्यवृत्त | १६ |
| महाराष्ट्र महिला ब्यासपीठ - कार्यवृत्त | २० |
| कार्यदेविषयक सहाय्य व सल्ला फोरम - कार्यवृत्त | २२ |
| कविता - 'कायदा नसता तर'..... | २६ |
| यशवंतराव चव्हाण राष्ट्रीय ग्रंथालय - कार्यवृत्त | २७ |
| सृजन - कार्यवृत्त | ३० |
| विभागीय केंद्र कोकण - कार्यवृत्त | ३१ |
| विभागीय केंद्र नागपूर - कार्यवृत्त..... | ३३ |
| विभागीय केंद्र औरंगाबाद - कार्यवृत्त | ३९ |
| कृषी सहकार ब्यासपीठ व पुणे विभागीय केंद्र - कार्यवृत्त..... | ४२ |
| विभागीय केंद्र कराड - कार्यवृत्त..... | ४८ |
| विभागीय केंद्र. नासिक - कार्यवृत्त..... | ५५ |
| विभागीय केंद्र. लातूर - कार्यवृत्त..... | ५७ |
| माहिती तंत्रज्ञान - प्रबोधिनी..... | ५९ |
| राज्यस्तरीय पारितोषिक - मान्यवरांची नावे | ६२ |
| सी - डॅक | ६३ |
| प्रतिष्ठानची विक्रीसाठी असलेली प्रकाशने..... | ६४ |

बर्ष : दहावे

अंक : विसावा

यशवंतराव चव्हाण
प्रतिष्ठान, मुंबईचे
वार्तापत्र

सातवी विनामूल्य वितरणासाठी

● प्रकाशन

२५ नोव्हेंबर २००७

मा. यशवंतराव चव्हाण यांची २३वी पुण्यतिथी

● सल्लागार

मा. शरद काळे

मा. रवींद्र थापट

मा. ज्ञानेश्वर खैरे

● मानद संपादक

दत्ता वाढसराफ

● आभार

प्रतिष्ठानचे सर्व अधिकारी,
कर्मचारी व कार्यकर्ते यांनी
दिलेल्या सहकार्याबद्दल आभार

● अक्षरजुळवणी आणि छपाई
सानप प्रिन्टींग प्रेस, मुंबई - २.

हे वैमासिक मुद्रक-प्रकाशक-संपादक

श्री दत्ता वाढसराफ यांनी

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान,

मुंबई करिता,

सानप प्रिन्टींग प्रेस

३६२, जगन्नाथ शंकररोट मार्ग,

ठाकुरद्वार पोस्टाशेजारी,

मुंबई - ४०० ००२

दूरध्वनी क्र. : २२०१ ०६२२

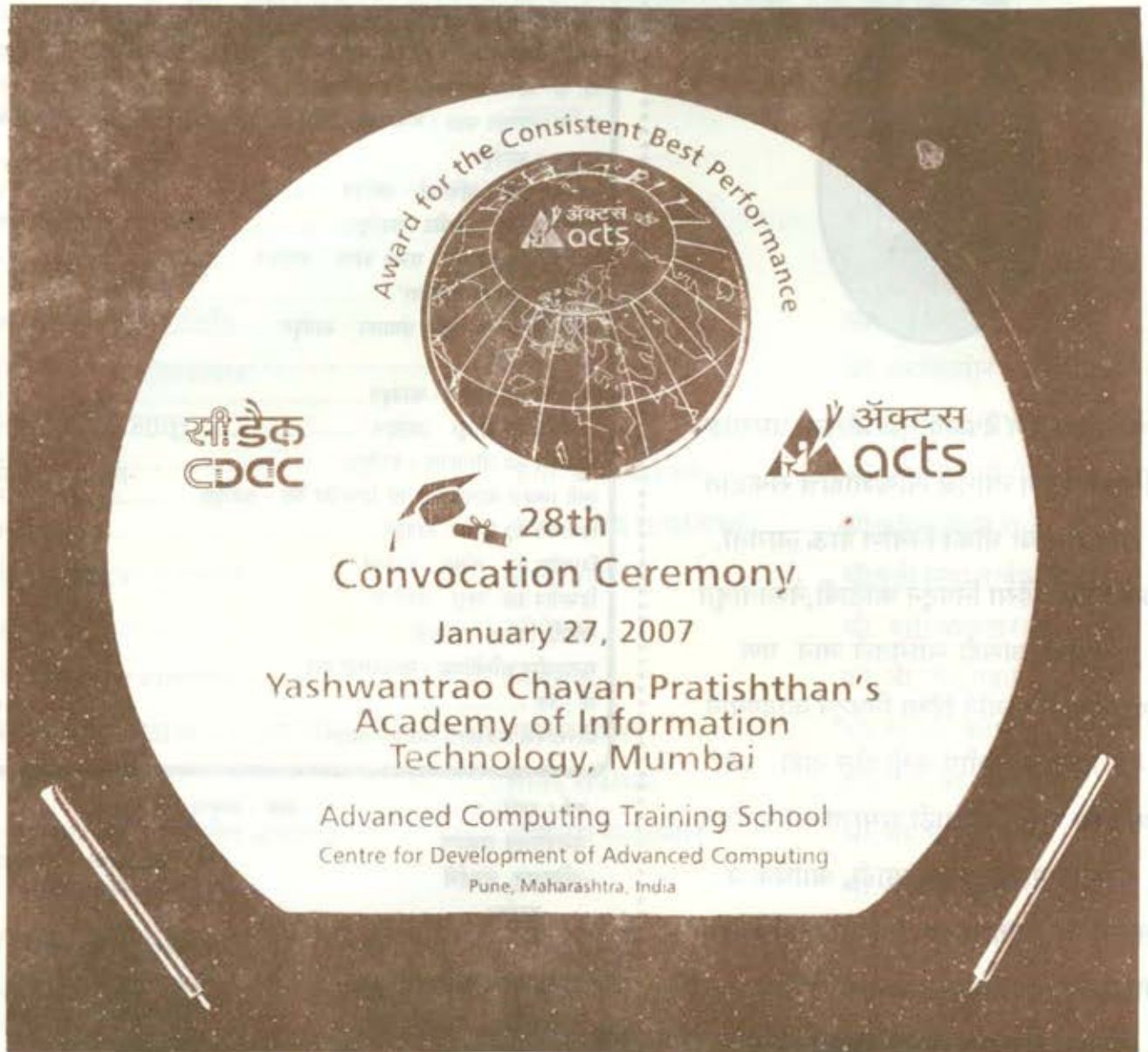
येथे छापून यशवंतराव चव्हाण केंद्र,

जनरल जगन्नाथराव भोसले मार्ग,

मुंबई - ४०० ०२१,

येथून प्रकाशित केले.

नोंदणी क्र. ७१५८७/९९



The 28th Convocation Ceremony of C-Dac was held on 27th January 2007 at Pune. Yashwantrao Chavan Pratishthan's Academy of Information Technology was awarded for consistent Best Performance amongst all C-Dac training Centres in the Country in all Institute were awarded in the Ceremony.

Congratulations !



संपादकीय

स्वर्गीय यशवंतराव चव्हाण यांच्या २३ व्या स्मृतीदिनी यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानच्या वार्तापत्राचा हा अंक आपल्या हाती देत आहोत. चव्हाण साहेबांचे नवमहाराष्ट्राच्या निर्मितीत मोठ्या प्रमाणावर योगदान आहे, हे सर्वमान्य आहे. समाजधुरिणांनी त्यांच्या उमेदीच्या काळात दिलेल्या योगदानाचे नंतर काळाच्या ओघात मूल्यमापन होते तेव्हा त्या लोकोत्तर व्यक्तीच्या कार्याचे महत्त्व समजून येते. चव्हाण साहेबांनी महाराष्ट्राच्या बांधणीच्या काळात आपल्या प्रभावी व पारदर्शी व्यक्तीमत्वामुळे, आचरणातून व जाणीवपूर्वक निर्णय घेऊन राज्याच्या प्रशासकीय, राजकीय, सांस्कृतिक व सामाजिक क्षेत्रासाठी विकासाचा एक आदर्श घालून दिला आहे. त्यांनी व्यापक जनहिताच्या घालून दिलेल्या दिशेने आपण वाटचाल करीत आहोत. चव्हाण साहेबांच्या प्रसन्न, शालीन व आदरणीय व्यक्तीमत्वामुळे राजकारण व समाजकारणाच्या क्षेत्रात महाराष्ट्राने प्रगल्भ काळ निर्माण झालेला पाहिला आहे. महात्मा गांधी व पंडित नेहरू यांच्या नेतृत्व गुणातून स्वातंत्र्याच्या वेळी जी नेतृत्वाची दुसरी फळी उभी राहिली त्या नेतृत्वाने देशाला व राज्याला संकटाच्या, टंचाईच्या काळातून समर्थपणे बाहेर काढले होते. चव्हाण साहेबांचे हे योगदान महाराष्ट्राच्या पुढील पिढ्या जाणून आहेत. मराठी विज्ञान परिषदेच्या सदस्यांसमोर चव्हाण साहेबांनी ७ डिसेंबर १९६८ साली केलेल्या भाषणातील काही भाग या वार्तापत्रात समाविष्ट केला आहे. या भाषणाच्या वाचनातून चव्हाणसाहेबांचे विज्ञान व तंत्रज्ञान क्षेत्राबाबतचे विचारही कसे कालोत्तर होते याची प्रचिती येते.

मा. चव्हाण साहेबांच्या पुण्यतिथीदिनी म्हणजेच २५ नोव्हेंबर २००७ ला यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबईचा प्रतिष्ठेचा यशवंतराव चव्हाण सामाजिक एकात्मता / विज्ञान तंत्रज्ञान राज्यस्तरीय पारितोषिक २००७ हा पुरस्कार नामवंत अणुवैज्ञानिक डॉ. अनिल काकोडकर यांना प्रदान करण्यात येत आहे. त्यांना प्रदान करण्यात येणारे सन्मानपत्र या वार्तापत्रात छापले असून वाचकांनी ते आवर्जून वाचावे. त्यांचे मनःपूर्वक अभिनंदन.

गेली चार दशके राज्याच्या व देशाच्या राजकारणात अग्रणी असणारे मा. ना. शरदचंद्र पवारसाहेबांना उत्कृष्ट संसदपटू पुरस्कार नुकताच प्रदान करण्यात आला. त्यांना उत्कृष्ट संसदपटू पुरस्कार प्रदान करताना दिलेले सन्मानपत्र या वार्तापत्रामध्ये समाविष्ट केलेले आहे. यशवंतराव चव्हाण साहेबांच्या आदर्शानुसार सर्वसामान्य माणसांना व ग्रामीण भागाला



केंद्रस्थानी ठेऊन त्यांचे हित साधण्याचा प्रयत्न पवार साहेबांनी केला आहे. स्थानिक स्वराज्य संस्थेपासून, मुंबईचे विधानभवन व दिल्लीच्या संसदभवनार्पितचा पवारसाहेबांचा प्रवास व त्यांचे राजकारण, समाजकारण, साहित्य आणि संस्कृती कला-क्रिडा क्षेत्रातील कार्य सर्वांनाच मार्गदर्शक व प्रेरक आहे.

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानची विविध विभागीय केंद्रे व मुख्यालय यांचेकडून काही चांगले समाजपयोगी उपक्रम मागील वर्षात राबविले गेले. या कार्यक्रमांचा आढावा वार्तापत्रात घेण्यात आला आहे. अपंगांचे हक्क व पुनर्वसन, गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षण, महिला बचत गटांसाठीचे सक्षमीकरणाचे प्रयत्न यांना चांगलीच गती मिळाली आहे. विधी साक्षरता, करियर मार्गदर्शन, समाजकार्य प्रशिक्षण, किशोर-किशोरी प्रशिक्षण, महाविद्यालयीन साहित्यविषयक स्पर्धा, युवा सामाजिक कार्यकर्त्यांसाठी पुरस्कार असे विद्यार्थी व युवा पिढीसाठी विविध स्वरूपाचे उपक्रम सुरू आहेत. महाराष्ट्रात न्यायालयीन कामकाज मराठीतून व्हावे, असा प्रयत्न विविध संस्था गेली अनेक वर्षे करीत आहेत. त्या विषयाबाबत प्रतिष्ठानने एक उत्तम ग्रंथ प्रकाशित केला असून 'ग्रंथाली'च्या वतीने त्याचे वितरण सुरू आहे.

मा. यशवंतरावजींचे स्मरण करुन हाती घेतलेले कार्य तडीस नेण्याचा संकल्प करु या व त्यासाठी नव्या पिढीशी संवाद व समन्वयाची प्रक्रीया सातत्याने सुरू ठेवूया.

आपला

(दत्ता बाळसराफ)

मानद् संपादक



मराठी विज्ञान परिषद

(७ डिसेंबर १९६८)

- स्व. यशवंतराव चव्हाण

मराठी विज्ञान परिषदेने दोन वर्षांपूर्वी महाराष्ट्रात विज्ञानसेवा व विज्ञानप्रसार संघटितरीत्या करण्यासाठी जो उपक्रम सुरू केला, तो समक्ष पाहण्याची, परिषदेच्या कार्यकर्त्यांना भेटण्याची मला इच्छा होती. वेळेअभावी मला ते जमले नाही. पण त्या परिषदेचे विविध उपक्रम, तिचे आतापर्यंतचे कार्य यांची माहिती मला सतत मिळत होती. मराठी विज्ञान परिषदेचे हे कार्य अत्यंत मोलाचे आहे. काळाची आजची गरज ओळखून, ते व्यापक करण्याचा कार्यकर्त्यांचा प्रयत्न आहे, हे पाहून मला समाधान वाटले. ते व्यक्त करण्यासाठी आणि आपणाला भेटून या विषयासंबंधी माझे काही विचार आपणापुढे ठेवण्यासाठी मी आलो.

विज्ञानसेवेचा किंवा प्रसाराचा विचार करताना माझ्या मते त्याच्या दोन प्रमुख अंगांचा विचार केला पाहिजे. एक तर मानव जातीसमोर आज जी संकटांची परंपरा उभी आहे, ती नाहीशी करण्यासाठी, निसर्गाचे गूढ उकलून, मानवाला जास्तीत जास्त शक्ती प्राप्त करून देणारे संशोधन करणे आणि अशा प्रकारच्या संशोधनास प्रोत्साहन देणे. दुसरे, जे माझ्या मते जास्त व्यापक कार्य आहे, समाजात विज्ञान-विचाराचा प्रसार व प्रचार करून समाजच विज्ञाननिष्ठ बनविणे. हे काम करण्यासाठी मात्र आपणास जास्त कष्ट घ्यावे लागतील, प्रयत्नांची पराकाष्ठा

करावी लागेल. विज्ञानाचे मूळ स्वरूपच तर्कसंगत, बुद्धिसंमत विचार असे आहे. हा विचार जनतेच्या मनात दृढमूल झाल्यावरच आपण एक आधुनिक समाज निर्माण करू शकतो. जुन्या सनातन कल्पना समाजातून काढून टाकण्याचा हाच एक कार्यक्षम उपाय आहे. या दिशेने जितक्या जलद वाटचाल होईल. तितक्या लवकर आपला देश व समाज प्रगतिशील राष्ट्रांच्या मालिकेत जाऊन बसेल.

माझ्या या म्हणण्याचा अर्थ असा मात्र नाही, की विज्ञान परिषदा संशोधनकार्यास उत्तेजन देण्याकरिता काही करू शकत नाहीत किंवा त्यांनी काही करू नये. या कार्यक्षेत्रात त्यांना भरीव कामगिरी करून दाखविता येईल. संशोधन - कार्यासाठी आर्थिक साहाय्य मिळवून देणे, या कार्यातील अडीअडचणी समजावून घेऊन, त्या समाजापुढे, शासनापुढे मांडणे, वेगवेगळ्या क्षेत्रात इतर राज्यांमध्ये कार्य करणाऱ्या व्यक्तींशी संपर्क ठेऊन एकमेकांना मदत व सहकार्य करणे वगैरे अनेक कार्यक्रम संशोधकांना मदत म्हणून व त्यांच्या कार्यास उत्तेजन म्हणून विज्ञान परिषदा हाती घेऊ शकतात व त्यांनी हे कार्य हाती घेतले पाहिजे. विज्ञानसेवेस वाहिलेल्या परिषदा आज असताना जे कष्ट शं. बा. दीक्षित किंवा केरूनाना छत्रे यांना घ्यावे लागले, तसे कष्ट किंवा त्रास आजच्या संशोधकांना घ्यावा लागू नये. एवढेच



नव्हे, तर त्यांनी अंगीकारलेले कार्य तडीस नेण्यासाठी प्रोत्साहन मिळावे, या दृष्टीने विज्ञान परिषदेसारख्या संस्था भरीव कामगिरी करू शकतात व त्यांनी ती करावी. आज आपले शास्त्रज्ञ देशांतर करीत आहेत, त्यांचे कारण समाजाची अनास्था हेही आहे. मराठी विज्ञान परिषदेसारख्या संस्थेने शास्त्रज्ञांच्या या स्थितीची जाण दाखविली पाहिजे. दुसरे एक काम करण्यासारखे आहे. ते असे, की परदेशात असलेले विविध शास्त्रांचे विद्यार्थी व संशोधक यांची जंत्री करून, त्यांच्याशी सतत संपर्क ठेवला, तर आपल्या संशोधन - कार्याशी आपल्या देशबांधवांचा संबंध आहे, त्यांना त्याबद्दल आस्था आहे, हे परदेशातील संशोधकांना अशा उपक्रमामुळे समजले. शास्त्रांचे देशांतर कमी करण्यासाठी अशा संपर्काचा जास्त उपयोग होईल. सरकारलाही अशा तऱ्हेच्या उपक्रमापासून लाभ होईल. एवढ्या प्रचंड देशात, शेवटी स्वहिताची जपणूक करण्यासाठी अशा सामाजिक संस्थांनाच पुढाकार घ्यावा लागेल. शासन हे काही सर्वसाक्षी नाही किंवा सर्वज्ञही होऊ शकत नाही.

गेल्या वीस वर्षांत भारतात झालेल्या स्थित्यंतराचा आपण जर विचार केला, तर एक गोष्ट ठळकपणे डोळ्यात भरते. ती म्हणजे आर्थिक विकास व औद्योगिकीकरणासाठी आम्ही सुरू केलेली प्रचंड मोहिम, खऱ्या अर्थाने विज्ञानाचा उपयोग मोठ्या प्रमाणावर आपल्या देशात स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतरच होऊ लागला आहे, असे म्हटले, तर ती अतिशयोक्ती होणार नाही. पुष्कळ प्रमाणात आपण संशोधनात्मक कार्याबद्दल पाश्चात्य प्रगतिशील राष्ट्रांवरच अवलंबून राहिलो आहोत. एका विशिष्ट मर्यादित

हे ठीक आहे. पण आता औद्योगिकीकरणाची सुरुवात झाल्यावर आपल्याला या क्षेत्रातसुद्धा आत्मनिर्भर कसे होता येईल, याचा विचार केला पाहिजे. त्याकडे लक्ष दिले पाहिजे. जनमत निर्माण करून व संशोधन - कार्याचे महत्त्व देशातील उद्योगपतींना पटवून देण्याचे कार्य मराठी विज्ञान परिषदेसारख्या संस्थांनी हाती घेतले पाहिजे.

विज्ञान संशोधनाच्या दोन शाखा आहेत. एक मूलभूत संशोधनाची, तर दुसरी उपयोजित (अप्लाइड) संशोधनाची. देशाची सर्वांगीण प्रगती होण्यासाठी आपल्याला कोणत्या प्रकारच्या संशोधनाची नितांत गरज आहे, याचा सांगोपांग विचार वैज्ञानिकांनी व अर्थशास्त्रज्ञांनी केला पाहिजे. बऱ्याच लोकांच्या तोंडून भारतातील मूलभूत विज्ञान - संशोधनाचा दर्जा व त्याचा जागतिक दर्जा यातील तफावत पाहून नैराश्याचे उद्गार ऐकू येतात. मला ही भाषा पटत नाही. या क्षेत्रात आपणास फार मोठी मजल गाठावयाची आहे, ही वस्तुस्थिती आहे. पण ही तुलनाच मुळी युक्तीसंगत नाही. कारण आर्थिक प्रगतीच्या बाबतीत सुद्धा पाश्चात्य देशांपेक्षा आपण फार मागे आहोत. दुसरी गोष्ट म्हणजे, मूलभूत संशोधनासाठी विपुल साहाय्य लागते. ते देणे आजच्या परिस्थितीत आपणास कितपत शक्य आहे, याचाही नीट विचार केला गेला पाहिजे. शिवाय आणखी एक गोष्ट लक्षात ठेवली पाहिजे आणि ती ही, की आपल्या देशातील मूठभर तंत्रज्ञांचा देशाला जास्तीत जास्त लाभ करून देण्याच्या दृष्टीने कसा उपयोग करून घेता येईल. हे तंत्रज्ञ जर आपण मूलभूत संशोधनात गुंतवून ठेवले, तर त्यांच्या कार्याचा



देशाच्या औद्योगिकीकरणाला जलदगती देण्यासाठी उपयोग होण्यास फार विलंब लागेल. पण ते तंत्रज्ञ जर मूलभूत विज्ञानाची जी प्रगती प्रगत देशांमध्ये झाली आहे, त्याचा उपयोग करून उपयोजित (अप्लाइड) संशोधन करू लागले, तर देशाच्या औद्योगिकीकरणाला व विकासाला लवकर फायदा मिळू शकेल. आज वस्तुस्थिती अशी आहे, की मूलभूत वैज्ञानिक संशोधन राष्ट्रांच्या भौगोलिक कक्षा ओलांडून पलीकडे गेले आहे. विज्ञानाचे हे आंतरराष्ट्रीय स्वरूप गेल्या वीस वर्षांत अधिक स्पष्ट झाले आहे. त्यामुळे भारताला अशा वैज्ञानिक संशोधनाचे फायदे मिळत राहतीलच. आता शेकडो विद्यार्थी परदेशात जाऊन शिक्षण घेत आहेत. तेथे संशोधन करीत आहेत. त्यांच्यामार्फत ही शास्त्रविषयक ज्ञानाची देवाण - घेवाण होत आहे. त्याचा फायदा आपल्याला नेहमीच मिळेल. पण आज खरी गरज आहे, ती उपयोजित संशोधन (अप्लाइड रिसर्च) वाढविण्याची. आपण या देशाचे जीवनमान वाढविण्याचा अत्यंत निकाराने प्रयत्न करीत आहोत. पण या देशाचे प्रश्नच एवढे गुंतागुंतीचे व प्रचंड आहेत, की तेथे आपल्याला अत्यंत आधुनिक विज्ञानाचे साहाय्य घेतल्याखेरीज पुढे जाता येणार नाही. शिवाय हा विकास जलद रीतीने आपणास घडवून आणावयाचा आहे. म्हणून आज गरज आहे, ती जगात विज्ञानाची जी बाजारपेठ आहे, तेथे जाऊन आपल्याला उपयुक्त असे विज्ञान मिळविण्याची व त्याचा आपल्या देशाच्या विकासास कसा उपयोग होईल, याचा अभ्यास करण्याची. एके काळी विष्णूशास्त्री चिपळूणकरांनी इंग्रजी विद्येला वाधिणीचे दूध म्हटले. आता फार मोठ्या प्रमाणावर अशाच

विज्ञानविद्येच्या दुधाची या देशाला फार गरज आहे.

मी असे म्हणत नाही, की मूलभूत समस्यांवर संशोधन भारतीयांनी करूच नये. जरूर करावे. पण देशाची आर्थिक परिस्थिती लक्षात घेता व औद्योगिकीकरणाची आजची गरज पाहता मला असे वाटते, देशाची आजची निकड उपयोजित संशोधनाची आहे. आज जी औद्योगिक क्रांतीची लाट भारतात आली आहे, तिच्यात जोम निर्माण करण्याकरीता व तिला आत्मनिर्भर करण्यासाठी प्रतिलिपीपासून सुरुवात करून, पाश्चात्य देशातील शोध अनुकूल, योग्य करून शेवटी नवशोधापर्यंत मजल गाठावयाची खटपट भारतीयांनी केली पाहिजे. आज कितीतरी विज्ञान स्नातक दरवर्षी आमच्या विश्वविद्यालयातून पदव्या घेऊन बाहेर पडत आहेत. बहुतेक हे तरुण नोकऱ्यांच्या मागे लागतात. ही जी पांढरपेशेपणाची वृत्ती आहे, त्या वृत्तीत बदल घडवून आणण्याचा प्रयत्न झाला पाहिजे. त्यांच्यातील जे हुशार विद्यार्थी असतील, त्यांना उत्तेजन देऊन त्यांच्या विशिष्ट क्षेत्रामधील औद्योगिक समस्या त्यांच्या नजरेस आणून दिल्या पाहिजेत. त्यांवर संशोधन करण्यास त्यांना उद्युक्त केले पाहिजे. उद्योगपतींनासुद्धा या बाबतीत जाणीव देऊन त्यांच्याकडून सहकार्य व आर्थिक साहाय्य या तरुण संशोधकांना मिळवून दिले पाहिजे. मराठी विज्ञान परिषदेसारख्या संस्था, विश्वविद्यालयांच्या मदतीने हे कार्य सहजपणे हाताळू शकतात. विद्यार्थीदशेत जर अशा संशोधनाचे संस्कार विद्यार्थ्यांच्या मनावर झाले, त्यांच्यांत संशोधनाची आवड निर्माण केली, तर त्यांच्यांत एक प्रकारचा विश्वास निर्माण होईल आणि विश्वविद्यालयातून



बाहेर पडल्यानंतर ते विश्वासाने, जिद्दीने संशोधनकार्य चालू ठेऊ शकतील, अशी मला खात्री आहे. तुम्ही - आम्ही सर्वांनी जर या दृष्टीने प्रयत्न केला, व संशोधन कार्यात जर धनार्जनाची क्षमता निर्माण केली, तर आज विज्ञान - स्नातकांमध्ये जी नोकरी करण्याची प्रवृत्ती दिसून येते, तिला आळा बसेल व संशोधकांच्या संख्येत भर पडून संशोधन कार्य व्यापक प्रमाणावर सुरू होईल. विज्ञान - संस्थांनी आजच्या उद्योगधंद्यांच्या विविध गरजा कशा भागवता येतील, याची पाहणी व अभ्यास सतत चालविला, निदान त्याला उत्तेजन दिले, तर भारताच्या औद्योगिक क्रांतीला अधिक वेग येईल.

भारतातील विज्ञानाच्या संशोधनात विविधता आली पाहिजे. देशातील वास्तवतेची व त्याच्या शास्त्रविषयक गरजांनी त्यात जाण हवी आहे. औद्योगिक क्रांतीला विज्ञानाचे निकडीचे साहाय्य हवे आहे. जपानसारख्या देशाकडून आपल्याला पुष्कळ शिकण्यासारखे आहे. उपयोजित संशोधनावर भर देऊन देशाचा कायापालट कसा होऊ शकतो, याचे एक उत्कृष्ट उदाहरण म्हणजे जपान आहे.

पण विज्ञानाकडे केवळ भौतिक दृष्टीने पाहून चालणार नाही. विज्ञान ही आधुनिक काळातील संजीवनी विद्या आहे. भारताला अशा संजीवनीची नितांत गरज आहे. कारण आपल्याला नुसते यंत्र नको आहे. त्या यंत्राबरोबर येणारे आधुनिक मन हवे आहे. आधुनिक मन हे कधीही स्थितीशील राहत नाही. ते चौफेर पाहते. इतर राष्ट्रांच्या प्रगतीचा सतत अभ्यास करते. असे आधुनिक मन भारताला हवे आहे.

वस्तुस्थिती अशी आहे, की आपल्या देशाच्या मनावर पुराणमतवादाचे प्रचंड ओझे आहे.

आत्मसंतुष्टता वा निष्क्रियता ही त्यातूनच येते. भारताच्या संदर्भात विज्ञान म्हणजे केवळ भौतिक सुखे निर्माण करणारी शक्ती असून, सामाजिक परिवर्तन घडविणारी ती सामाजिक शक्ती ठरणार आहे.

विज्ञानामुळे विज्ञाननिष्ठ समाज कसा निर्माण होतो, हे युरोपने सिद्ध केले आहे. युरोपमध्ये औद्योगिक क्रांतीबरोबरच लोकशाही समाजरचना आकार घेऊ लागली. औद्योगिक क्रांतीची सामाजिक दोषस्थळे व त्यातून येणारी आर्थिक विषमता

जेव्हा विचारवंतांना दिसली, तेव्हा समाजवादाची आर्थिक विचारसरणी पुढे आली. युरोपमध्ये आज राजकीय पद्धतीत वेगळेपणा असला, तरी लोकशाही राष्ट्रे व कम्युनिस्ट राष्ट्रे आधुनिक विज्ञानाच्या साहाय्यानेच विकासक्षम झाली, हे निर्विवादच आहे. या सर्व औद्योगिक क्रांतीने तेथील समाजाच्या मनाची घडणूक बदलली. चंद्रावर जाऊ इच्छिणारा व अंतराळ जिंकू इच्छिणारा समाज किंवा दोन युद्धांच्या भीषण अग्निदिव्याला तोंड देऊनही, धैर्य खचून देता पुन्हा झपाट्याने प्रगती करणारा आकांक्षी समाज हा या विज्ञाननिष्ठेतून निर्माण झाला, हे आपण लक्षात घेतले पाहिजे. निसर्ग जिंकणाऱ्या विज्ञानालाही एक साहसी मन लागते. कल्पकता लागते. अदम्य, अशरण व एक प्रकारची बेगुमान वृत्ती लागते. पाश्चात्य राष्ट्रांनी विज्ञानाच्या साहाय्याने ही निसर्ग जिंकण्याची ईर्ष्या सामान्य नागरिकांत निर्माण केली. त्यामुळे तो सारा समाजच जिवंत



आहे. उत्साहाने तुडुंब भरलेला आहे. त्याला नाविन्याची ओढ आहे. काही तरी शोधणारे व धडपड करणारे मन आणि शरीर ही त्या समाजाची फार मोठी संपत्ती आहे. विज्ञान अशाच समाजात फुलते फळते.

भारताच्या समाजाचा विचार केला, तर आपणास या दृष्टीने किती प्रगती करावयाची आहे, हे बुद्धिमतांना सहज पटेल. भारताला ती साहसप्रियता हवी आहे. पाण्याच्या प्रवाहाला आतून जशी ओढ असते, तशीच ओढ समाजाच्या जीवनप्रवाहात असेल, तर तो संकटांचे पहाड फोडून पुढे जातो. ती ओढ त्याला सतत पुढे नेते. समाजजीवनाचे ते गतिशील, बुद्धिनिष्ठ रूप आपणाला दिसावयास हवे आहे. हे रूप आपल्या शिक्षणामधून विद्यार्थ्यांना दिसावयास हवे.

या विज्ञानाची मूल्ये प्रयत्नपूर्वक शिक्षणातून रुजविली गेली, तर त्याचे परिणाम आमच्या राजकीय व सामाजिक विचारसरणीवर दिसू लागतील. विज्ञाननिष्ठ समाज निर्माण करावयाचा असेल, तर बुद्धिमतांनी विज्ञान परिषदेसारख्या व्यासपीठावर एकत्र येऊन त्या प्रश्नाचा सर्वांगीण विचार केला पाहिजे. आपला समाज कृषीनिष्ठ असल्याने देशाचे संपूर्ण औद्योगिकीकरण होऊनच नवा औद्योगिक व विज्ञाननिष्ठ समाज निर्माण होईल, असे मानणे व्यवहाराला धरून होणार नाही. म्हणून कृषी औद्योगिक समाजसुद्धा विज्ञानवादी कसा करावयाचा, हा आपल्यापुढील खरा प्रश्न आहे.

यासाठी बुद्धिमतांना समाजाशी समरस होऊन ही विज्ञानवादी चळवळ चालवावी लागेल. म्हणून साहित्यात व

वृत्तापत्रात या चळवळीकडे लक्ष द्यावे लागेल. शेतकरी व कामगार यांच्यावर विज्ञानाचे संस्कार करणारे वाङ्मय निघू लागले आहे, ही समाधानाची गोष्ट आहे. पण आता मोहरा ग्रामीण विभागाकडे वळविला पाहिजे. खेडुतांनाही विज्ञानाची ओळख कशी करून देता येईल, याचा विचार केला पाहिजे. आपले खेडूत नव्या साधनांचा सुजाण वापर करू शकतात, याचा पुरावा शेतकऱ्यांनी पंजाब, महाराष्ट्र वा अन्यत्र दाखविला आहे.

आपले राष्ट्र सध्या क्रांतिसदृश अवस्थेतून जात आहे. याच काळात आधुनिकतेची मूल्ये, विज्ञानवादी प्रेरणा आपण नव्या तरुणांना दिल्या, तर त्यांची स्वप्ने आपण आपल्या लहानपणी पाहिलेल्या स्वप्नांपेक्षा भव्य व वेगळ्या क्षितिजांकडे झेप घेणारी असतील. आज प्रादेशिकवाद, भाषावाद, जातीयवाद यांच्या आवर्तात आपण सापडलो, त्याच प्रगती रोखणाऱ्या या खड्ड्यात आम्ही अडकून पडलो, तर भारत हे एक प्रतिगामी राष्ट्र होईल. जग चंद्राकडे, अंतराळाकडे पाहत असताना आम्ही मात्र या क्षुद्र निष्ठा जपत आहोत, हा विसंवाद तरुणांच्यापुढे ढळढळीतपणे मांडला, तर ते बेडया तोडतील. भारताची शास्वशुद्ध पुनर्रचना करण्यासाठी असे विज्ञानवादी तरुण निर्माण झाले पाहिजेत. हे स्वप्न कोणी तरी भारतीय तरुणांपुढे रंगविले पाहिजे. त्याच दृष्टीने महाराष्ट्रापुरते हे कार्य मराठी विज्ञान परिषद करील, अशी मला आशा आहे.

(शब्दाचे सामर्थ्य या मा. राम प्रधान यांच्या ग्रंथातून)



यशवंतराव चव्हाण विज्ञान तंत्रज्ञान राज्यस्तरीय पारितोषिक २००७

मा. डॉ. अनिल काकोडकर

सन्मानपत्र

मा. डॉ. अनिल काकोडकर यांचा जन्म ११ नोव्हेंबर १९४३ रोजी मध्यप्रदेशातील बडवाणी या गावी झाला. त्यांचे प्राथमिक शिक्षण मध्यप्रदेशातील खरगोण येथे आणि माध्यमिक व महाविद्यालयीन शिक्षण मुंबईत झाले. मुंबईच्या व्हि. जे. टी. आय. या नावाजलेल्या अभियांत्रिकी महाविद्यालयातून त्यांनी बी. ई. (मॅकेनिकल) ही पदवी संपादन केली. १९६९ मध्ये त्यांनी नॉटिंगहॅम विद्यापीठातून 'एक्सपेरिमेंटल स्ट्रेस ॲनलिसिस' या विषयात एमएससी, पदवी संपादन केली.

नॉटिंगहॅम विद्यापीठात प्रवेश घेण्यापूर्वी १९६४ साली डॉ. काकोडकर चेंबूर येथील भाभा अणु संशोधन केंद्रात रुजू झाले. तेथील एक वर्षाच्या 'अणुविज्ञान आणि तंत्रज्ञान' या विषयातील प्रशिक्षणात त्यांनी पहिला क्रमांक मिळविला व त्या प्रशिक्षणात त्यांनी मिळविलेल्या गुणांचा उच्चांक अद्यापही अबाधित आहे.

१९६४ पासून १९९६ पर्यंत डॉ. काकोडकर यांनी भाभा अणु संशोधन केंद्रात अनेक महत्त्वाच्या प्रकल्पांमध्ये काम केले व त्या क्षेत्रात सखोल आणि सविस्तर अनुभव मिळविला. अणुभट्टीच्या प्रचालनातील अभियांत्रिकी समस्या संशोधनातून सोडवून जडजल भट्ट्यांशी संबंधित विविध प्रणालींचा विकास केला. तसेच या संवेदनशील प्रक्रियामधील धोके ओळखून सुरक्षिततेच्या नव्या पद्धती शोधून भारताला या तंत्रज्ञानात स्वयंपूर्ण बनविले.

१८ मे १९७४ रोजी भारताने पोखरण येथे जो

शांततापूर्ण अणुस्फोटाचा प्रयोग केला त्याच्याशी संबंधित मोजक्या व्यक्तित्मध्ये डॉ. काकोडकर होते. त्यानंतर मे १९९८ मध्ये पोखरण येथे ज्या अणुस्फोटांच्या चाचण्या करण्यात आल्या त्यामध्येही त्यांची महत्त्वाची भूमिका होती.

ध्रुव अणुभट्टीचे संकल्पचित्र बनविण्यामध्ये आणि ती अणुभट्टी उभारण्यामध्ये डॉ. काकोडकर यांचे योगदान महत्त्वाचे होते. या प्रकल्पाच्या निमित्ताने अभियांत्रिकीतील बीम वेल्डींग, रिअॅक्टिव्ह फॅब्रिकेशन, विविध धातूंची वेल्डिंगने सांधे जुळणी करणे अशा प्रकारचे नवीन तंत्रज्ञान डॉ. काकोडकरांनी विकसित केले. राजस्थान व कल्पकम येथील जुन्या भट्ट्या बंद पडण्याच्या मार्गावर असताना डॉ. काकोडकर यांनी आपल्या अभियांत्रिकी कौशल्याने त्यांना संजीवनी दिली व या अणुभट्ट्या अजूनही चालू आहेत.

१९९६ साली डॉ. काकोडकर यांची भाभा अणुसंशोधन केंद्राचे संचालक म्हणून नियुक्ती झाली. त्यानंतर २००० साली एकविसाव्या शतकाच्या उंबरठ्यावर डॉ. काकोडकर अणुशक्ति आयोगाचे अध्यक्ष व भारत सरकारच्या अणुशक्ति विभागाचे सचिव झाले.

डॉ. काकोडकर यांच्या नेतृत्वाखाली भारताच्या अणुशक्ति कार्यक्रमांमध्ये अनेक नवनवीन उपक्रम सुरू करण्यात आले आहेत. या उपक्रमामुळे अणुऊर्जेची निर्मिती क्षमता ३९०० मेगावॉट पासून लवकरच ७३०० मेगावॉटपर्यंत वाढेल. अणुऊर्जेची निर्मिती वाढविण्यासाठी युरेनियम आणि झिरकोनियमचे उत्पादन वाढविण्याचे व



व्यापारी तत्वावरील पहिला फास्ट ब्रीडर रिअॅक्टर चालू करण्याचे श्रेय डॉ. काकोडकरांना जाते.

भारताच्या अणुशक्ती कार्यक्रमाला व या क्षेत्रातील उच्च दर्जाच्या संशोधनाला व तंत्रज्ञानाला जगन्मान्यता मिळवून देण्यात डॉ. काकोडकरांच्या वैज्ञानिकांचा व कल्पक अभियंत्यांचा सिंहाचा वाटा आहे.

एकीकडे अणुऊर्जेचे उत्पादन वाढविण्यावर भर देत असताना अणुशक्तीचा लाभ सर्वसामान्य जनतेला कसा देता येईल याचाही अणुशक्ती विभाग सातत्याने प्रयत्न करीत आहे. अन्न टिकवण्यासाठी गॅमा किरणांचा वापर, तेलबिया आणि डाळीचे उत्पादन वाढविणाऱ्या जाती शोधणे, रोगनिदान आणि रोगोपचारासाठी किरणोत्सारांचा वापर, घनकचऱ्यातून ऊर्जा निर्मिती आणि समुद्राच्या खान्या पाण्याचे गोड्या पाण्यात रूपांतर करणे ह्यासारख्या सामान्य जनतेच्या हिताशी निगडित असणाऱ्या बाबींना डॉ. काकोडकरांनी विशेष महत्त्व देऊन या क्षेत्रांमध्ये साधलेली प्रगति लक्षणीय आहे. त्यांच्या पुढाकाराने भाभा अणुसंशोधन केंद्र व पुणे, मुंबई, कोल्हापूरसारखी विद्यापीठे यांच्या परस्पर सहकार्याने संशोधनाला चालना देण्याचे कार्य सुरू झाले आहे. अणुऊर्जा निर्मितीमध्ये देशांतर्गत मोठ्या प्रमाणावर उपलब्ध असलेल्या थोरियमचा उपयोग वाढवून युरेनियमवरील परावलंबन कमी करावे यादृष्टीने डॉ. काकोडकर प्रयत्नशील आहेत व त्यासाठी उन्नत जडजल अणुभट्टीचा आराखडा निर्माण करणाऱ्या गटाचे ते नेतृत्व करीत आहेत.

ही राष्ट्रीय स्तरावरील संवेदनशील व जबाबदारीची कामे पार पाडीत असताना त्यांनी एक शास्त्रज्ञ म्हणून २५० पेक्षा अधिक शास्त्रीय निबंध व अहवाल लिहिलेले आहेत. डॉ. काकोडकरांच्या असाधारण कामगिरीची नोंद घेऊन त्यांना अनेक राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय सन्मान मिळालेले

आहेत. डॉ. काकोडकर हे इंडियन नॅशनल अॅकॅडमी ऑफ इंजिनिअरींग, इंडियन अॅकॅडमी ऑफ सायन्सेस व नॅशनल अॅकॅडमी ऑफ सायन्सेसचे सन्माननीय सदस्य आहेत; तसेच मुंबईच्या आय. आय. आय. टी. च्या संचालक मंडळाचे व आयुकाच्या (इंटर युनिव्हर्सिटी सेंटर फॉर अॅस्ट्रॉनॉमी व अॅस्ट्रोफिजिक्स, पुणे) संचालक मंडळाचे अध्यक्ष आहेत. १९९७ मध्ये त्यांना रॉकवेल मेडल फॉर एक्सलन्स प्रदान करण्यात आले. अनेक विद्यापीठांनी त्यांना सन्माननीय डॉक्टरेट दिलेली आहे. भारत सरकारतर्फे त्यांना १९९८ मध्ये पद्मश्री व १९९९ मध्ये पद्मभूषण या उच्च सन्मानांनी गौरवित करण्यात आले.

स्वतंत्र भारताचे पहिले पंतप्रधान पंडित जवाहरलाल नेहरू यांनी दूरदृष्टीने अणुविज्ञान व अणुऊर्जा या क्षेत्रांमध्ये देश अग्रेसर रहावा यासाठी डॉ. होमी भाभा यांच्या सारख्या थोर शास्त्रज्ञावर जबाबदारी सोपवून या आधुनिक यशोमंदिराचा पाया रचला. त्यावर कळस चढविण्याचे काम या विभागातील अनेक वैज्ञानिक व अभियंते डॉ. काकोडकरांच्या समर्थ नेतृत्वाखाली करीत आहेत. या क्षेत्रात जागतिक स्पर्धेत देश आघाडीवर राहिल व कच्च्या मालाची उपलब्धता, यंत्रसामग्री, संशोधन व तंत्रज्ञान या बाबतीत अधिकाधिक स्वयंनिर्भरता प्राप्त होईल या दृष्टीने डॉ. काकोडकर यांनी जे अमूल्य योगदान दिले आहे त्याचा उचित गौरव करण्यासाठी यशवंतराव चव्हाण विज्ञान तंत्रज्ञान राज्यस्तरीय पारितोषिक २००७ आज दिनांक २५ नोव्हेंबर २००७ रोजी मा. यशवंतरावांच्या पुण्यस्मृतिदिनी प्रदान करताना यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबईला विशेष आनंद होत आहे.

मुंबई

शरद पवार

दिनांक २५ नोव्हेंबर २००७

अध्यक्ष, यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई



AWARD FOR OUTSTANDING PARLIAMENTARIAN, 2003

PRESENTED

TO

SHRI SHARAD PAWAR, M. P.

BY

THE PRESIDENT OF INDIA

CITATION

SHRI SHARAD PAWAR has been a distinguished public figure in our national life for more than four decades. A sagacious political leader, a renowned parliamentarian, and an outstanding administrator, SHRI SHARAD PAWAR has shown courage and determination to chart his own course in the vast political map of India. Rational and progressive in thought and deeds, he has, with tireless enthusiasm and tenacity of purpose, made significant contributions in strengthening parliamentary democracy in the country.

A people's leader par excellence, who has retained their confidence ever since he entered politics in 1967, SHRI SHARAD PAWAR has, by his righteous conduct and unimpeachable character, enriched our public life. A dynamic leader with a strong grassroots support base, he has a rare understanding of the pulse of the people and their needs and urges. All through his illustrious public career, he has addressed the interests and concerns of the common man with a sensitive and humane approach. SHRI SHARAD PAWAR has won approbation from all sections of political opinion for his practical wisdom and down-to-earth appeal, which set him apart from many of his contemporaries. His idea of a progressive and modern Maharashtra, his pioneering strategies for its economic and industrial transformation, and his innovative administrative policies in leading the most industrialized State for four terms as its Chief Minister speak volumes of his sagacity and far-sightedness.

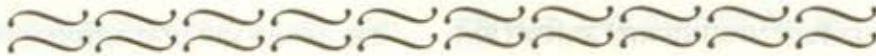


A seasoned parliamentarian, SHRI SHARAD PAWAR is a shining example of the finest traditions of our parliamentary life. He made his mark as a member of the Houses of the Maharashtra Legislature; he was also a vigilant Leader of the Opposition in the two Houses. As a member of the Lok Sabha for six terms, and also as the Leader of the Opposition in the Twelfth Lok Sabha, SHRI SHARAD PAWAR has shown great maturity in dealing with complex political issues. His speeches in Parliament are well known for their straightforwardness and lucidity. They reflect his extraordinary grasp of details. He has also lent his considerable experience and expertise in strengthening our Parliamentary Committees. Over the years, he has held charge of several important portfolios in the Union Cabinet with great distinction. Today, as the Union Minister of Agriculture, and Consumer Affairs, Food and Public Distribution, SHRI SHARAD PAWAR is striving zealously to safeguard the interests of our farmers, which proves his mettle as a very effective and astute negotiator on their behalf.

Considering his long and distinguished parliamentary career, it is most appropriate that the Indian Parliamentary Group should bestow the Outstanding Parliamentarian Award for the year 2003 on SHRI SHARAD PAWAR.

NEW DELHI;
September 13, 2007
Bhadrapada 22, 1929 (Saka)

INDIAN PARLIAMENTARY GROUP,
PARLIAMENT HOUSE.





नवमहाराष्ट्र युवा अभियान

★ कार्यवृत्त ★

नवमहाराष्ट्र युवा अभियानाचे काम संयोजक श्री. दत्ता बाळसराफ व सहसंयोजक श्री. विश्वास ठाकूर तसेच अपंग विकास मंचाचे काम समन्वयक श्री. विजय कान्हेकर तसेच कार्यालयीन संघटक श्री. सुरेश पाटील व मिनल सावंत हे पहातात.

दि. ११ मार्च २००७ :- पुरंदर स्नेह सामाजिक संस्था, खारघर यांच्या संयुक्त विद्यमाने श्रमिक हॉल, दादर येथे एड्स प्रतिबंधक मार्गदर्शन कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. संजय जाधव, विजय कसबे यांनी या कार्यक्रमाच्या आयोजनाची जबाबदारी पार पाडली. या कार्यशाळेस ६० ते ७० व्यक्तींनी सहभाग घेतला.

दि. ११ मार्च २००७ धोंडू चॅरिटेबल ट्रस्ट, परेल यांच्या संयुक्त विद्यमाने परेल येथे माहितीच्या अधिकार अधिनियम २००५ मार्गदर्शन कार्यशाळा घेण्यात आली. या कार्यशाळेत प्रमोद पाटील, यांनी मार्गदर्शन केले. प्रसाद सारंग यांनी आयोजनाची जबाबदारी पार पाडली. या कार्यशाळेत ६० व्यक्तींनी सहभाग दर्शविला. सुरेश पाटील तसेच नवमहाराष्ट्र युवा अभियानचे इतर कार्यकर्ते या कार्यक्रमास उपस्थित होते.

दि. १८ मार्च २००७ - पुरंदर स्नेह सामाजिक संस्था, खारघर यांच्या संयुक्त विद्यमाने श्रमिक हॉल, दादर येथे एड्स प्रतिबंधक मार्गदर्शन कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. संजय जाधव, विजय कसबे, अनिल चाळके, शमीम खान, श्रद्धा अकोलकर यांनी या कार्यक्रमाच्या आयोजनाची

जबाबदारी पार पाडली. या कार्यशाळेस ६० ते ७० व्यक्तींनी सहभाग घेतला.

दि. १ एप्रिल २००७ :- राज्यस्तरीय अपंग क्रीडा स्पर्धा २००७ नाशिक येथे पार पाडल्या. या कार्यक्रमाच्या 'झेप' या स्मरणिकेच्या प्रकाशनासाठी एक अनौपचारिक स्नेहमेळावा नाशिक येथे घेण्यात आला. दत्ता बाळसराफ, सुरेश पाटील, अनिल चाळके, शंकर साळवे, श्रद्धा अकोलकर, रमेश सांगळे, वासंती शेवाळे, सिद्धेश्वर डुकरे इत्यादी कार्यकर्ते उपस्थित होते.

दि. ८ एप्रिल २००७ :- पुरंदर स्नेह सामाजिक संस्था, खारघर यांच्या संयुक्त विद्यमाने खारघर येथील गोखले हायस्कूल येथे माहितीचा अधिकार अधिनियम २००५ या विषयावर कार्यशाळा घेण्यात आली. या कार्यशाळेत नवी मुंबई परिसरातील वाशी, सानपाडा, जुईनगर, कोपरखैराणे, पनवेल, कळंबोली व खारघर परिसरातील विविध लोकांनी सहभाग घेतला. कार्यशाळेची प्रस्तावना संजय जाधव यांनी केली. प्रमोद पाटील यांनी माहितीच्या अधिकारावर मार्गदर्शन केले. प्रज्योत मोरे यांनी अभियानाच्या कार्याविषयी थोडक्यात माहिती दिली. रमेश मेनन यांनी उपस्थितांचे व पाहुण्यांचे आभार मानले.

दि. ११ एप्रिल २००७ :- शैक्षणिक गुणवत्ता विकास कार्यक्रम याबाबत प्रतिष्ठानमध्ये बैठक. दत्ता बाळसराफ, विश्वास ठाकूर, विजय कान्हेकर इत्यादी. उपस्थित होते.



दि. १५ एप्रिल २००७ मोफत आरोग्य तपासणी आणि मोफत औषध वाटप शिबीर, गाव : सोनावळे, ता : मुरबाड, जि. ठाणे
पिर्नेकल क्लब, महाराष्ट्र महिला आर्थिक विकास महामंडळ, ठाणे जिल्हा यांच्या संयुक्त विद्यमाने मोफत आरोग्य तपासणी शिबीर भरविण्यात आले होते. शिबिरात छोट्या शस्त्रक्रिया (Abscess Removal) करण्यात आल्या.

या शिबिराचा लाभ एकूण ५४५ रुग्णांनी घेतला. आसपासच्या छोट्या गावातील लोकांनीही शिबीराचा लाभ घेतला. सर्व रुग्णांना एक महिना पुरेल एवढे औषध देण्यात आले.

सदर शिबिरात डॉ. जयेश कतीरा (जनरल), डॉ. रुपेश सिंग (जनरल), डॉ. अशोक राठोर (बाल रोगतज्ज्ञ), डॉ. विनय जेजूरीकर (दंत विशारद), हितेन पांचाळ (फिजियोथेरेपी) इत्यादी उपस्थित होते. नवमहाराष्ट्र युवा अभियानचे श्री. दत्ता बाळसराफ, श्री. विद्याधर खंडे, मिनल सावंत, सुरेश पाटील, सिद्धेश्वर डुकरे इत्यादी उपस्थित होते.

दि. १६, १७ व १८ एप्रिल २००७ :- महाराष्ट्र महिला व्यासपीठ यांच्या संयुक्त विद्यमाने वडाळा येथे किशोरी शिबिराचे आयोजन करण्यात आले होते. १८ वर्षांच्याआतील २५ मुलींनी या शिबिरात सहभाग घेतला. याचे उद्घाटन मुख्याध्यापिका श्रीमती संगिता कदम यांच्या हस्ते सावित्रीबाई फुले यांच्या प्रतिमेस हार घालून करण्यात आले. कार्यक्रमाची प्रस्तावना विजय कसबे यांनी केली. तसेच वासंती शेवाळे यांनी महिला विभागाच्या विविध उपक्रमांची माहिती दिली. पहिल्या दिवशी दत्ता बाळसराफ, श्रीमती रेखा नावेंकर, श्रीमती विजया चौहान इत्यादींनी मार्गदर्शन केले. तसेच श्री. वसंत खेडेकर, मंजुश्री भालेराव, श्रीमती माधुरी शर्मा यांनी विविध विषयावर मार्गदर्शन केले.

दि. २०, २१ व २२ एप्रिल २००७ :- आदिवासी सहजशिक्षण परिवार आणि राष्ट्रसेवा दल यांच्या संयुक्त विद्यमाने मासवण, ता. पालघर, जि. ठाणे येथे किशोर - किशोरी शिबीर घेण्यात आले. १४ ते १६ या वयोगटातील ६० मुला - मुलींनी या शिबिरात भाग घेतला. शालेय व शालाबाह्य अशा दोन्ही गटातील मुले - मुली यात होत्या. गिरीश वळिंबे, शकुंतला मंकड, अशोक रुपनेर, धनंजय सरदेशपांडे, राजेश बहाळकर, शरद कुलकर्णी, दीपा देशमुख इत्यादी. मान्यवरांनी मार्गदर्शन केले.

प्रतिष्ठानच्यावतीने तुषार जैन व प्रज्योत मोरे यांनी स्वयंसेवक म्हणून या शिबिरात सहभाग दिला तसेच सहसंयोजक विश्वास ठाकूर यांनी स्वखर्चाने शिबिरासाठी शंभर पुस्तके भेट दिली.

दि. २० मे २००७ :- कायदेविषयक सहाय्य व सल्ला फोरम वे न्याय युवा संघ अर्नाळा यांच्या संयुक्त विद्यमाने युवा कार्यकर्त्यांसाठी एक दिवसीय विधी साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले होते. या कार्यशाळेला अॅड. म. बा. पवार, अॅड. हॅमंत केंजाळकर, अॅड. प्रमोद ढोकळे, अॅड. अजय केतकर यांनी मार्गदर्शन केले. या कार्यशाळेचे आयोजन शमीम खान यांनी केले. नवमहाराष्ट्र अभियानाचे अनिल चाळके, प्रज्योत मोरे यांनी समन्वयक म्हणून काम पाहिले.

दि. २९ व ३० मे २००७ :- यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई विभागीय केंद्र औरंगाबाद व नवमहाराष्ट्र युवा अभियान यांच्या संयुक्त विद्यमाने तापडीया नाट्यमंदिर औरंगाबाद, येथे 'व्हिजन करियर'चे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमास नवमहाराष्ट्र युवा अभियान, मुंबईचे दत्ता बाळसराफ, प्रा. सुनिल चव्हाण, सिद्धेश्वर डुकरे इत्यादी उपस्थित होते.



दि. २ जून २००७ :- श्री छत्रपती अॅडव्हेंचर ऑर्गनायझेशन, महाराष्ट्राच्यावतीने जागतिक पर्यावरण दिन आणि शिवराज्याभिषेक दिनाचे औचित्य साधून आयोजित करण्यात आलेली तेरावी राज्यस्तरीय साहसी रायगड प्रदक्षिणा मोहिम पार पडली. नवमहाराष्ट्र युवा अभियानचे, मुंबई महापौर पुरस्कार सन्मानित अपंग गिर्यारोहक अनिल चाळके यांच्या कुशल नेतृत्वाखाली ढगाळ वातावरणात ही मोहिम पार पडली.

दि. १२ जून २००७ :- अपंगांच्या विविध समस्याबाबत मा. उपमुख्यमंत्री आर. आर. पाटील यांच्या समवेत घेण्यात आलेल्या निर्णयासाठी मा. मुख्य सचिव यांच्याबरोबर बैठक. प्रधान सचिव रमेश उबाळे व इतर संबंधीत अधिकारी यांनी याचे आयोजन केले होते. दत्ता बाळसराफ, विजय कान्हेकर, सुरेश पाटील या बैठकीस उपस्थित होते.

दिनांक :- १७/०६/२००७ :- मोफत आरोग्य तपासणी आणि मोफत औषध वाटप शिबीर

स्थळ :- निगडे, (तळेगाव), पो. आंबळे, ता. मावळ, जि. पुणे

पिन्कल क्लब आणि यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, नवमहाराष्ट्र युवा अभियानतर्फे ह्या वर्षी दुसरा कॅम्प निगडे, ता. मावळ, जि. पुणे येथे पार पडला. सालाबादप्रमाणे पिन्कल क्लब आणि यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानचे कार्यकर्ते आणि डॉक्टर टीम डॉ. जयेश कतीरा (जनरल), डॉ. रुपेश सिंग (जनरल), डॉ. गायकवाड (दंतचिकित्सा), डॉ. संपत (स्त्रीरोगतज्ज्ञ), हितेन पांचाळ (फिजियोथेरेपी) उपस्थित होते. एकूण २७७ रुग्णांना तपासण्यात आले. सर्व साधारण रुग्ण हे अशक्त (रक्त पुरवठा कमी) आणि आरोग्यासंबंधी निगा न

राखणे असे आढळले. ज्येष्ठ रुग्णांना व्यायाम आणि शरीराची निगा कशी राखावी हे सांगितले. तसेच औषधे Tonic, B-Complex, Hematanic, Cough Syrup, Skin range, Antibiotics इत्यादी वाटण्यात आले. काही रुग्णांना (Cronic, disabled) मुंबईतील के. ई. एम. तसेच जे. जे. रुग्णालयात पुढील उपचारास सुचवले. सदर रुग्णांची जबाबदारी प्राचार्य श्री. दत्ता बाळसराफ (इंद्रायणी महाविद्यालय, तळेगाव) यांनी घेतली.

या कार्यक्रमास मावळचे तहसिलदार डॉ. संपत खिल्लारे, नवमहाराष्ट्र युवा अभियानचे श्री. दत्ता बाळसराफ, दीपा देशमुख सिद्धेश्वर डुकरे इत्यादी उपस्थित होते.

दि. २२ जून २००७ :- शहीद भगतसिंग जन्मशताब्दी वर्ष समिती राज्यस्तरीय बैठकीस पुणे येथे मा. दत्ता बाळसराफ उपस्थित होते. अध्यक्षस्थानी न्या. पी. बी. सावंत हे होते.

दि. १४ जुलै २००७ :- गंधालीतर्फे आयोजित 'विकासाच्या सार्थ दिशा' या विषयावर पुणे येथे परिसंवादात सहभाग प्रमुख मार्गदर्शक डॉ. कुमार सप्तर्षी, माधव चव्हाण शरद कुलकर्णी.

दि. २४ जुलै २००७ :- महाराष्ट्र राज्य शिक्षण हक्क अभियान, मुंबईद्वारा आयोजित आंदोलनात आझाद मैदान येथे सहभाग.

दि. २५ जुलै २००७ :- मा. बाबासाहेब कुपेकर विधानसभा अध्यक्ष यांच्या दालनात अभियानाचे हितचंतक श्री. फारुक नाईकवडी यांच्या 'स्टिल फ्रेम' या पुस्तक प्रकाशन समारंभ सहभाग कार्यक्रमास मा. नामदार सुनिल तटकरे, मा. ना. सतेज पाटील, श्री. अभिनव कुंभार उपस्थित होते.

दि. ८ ऑगस्ट २००७ :- अपंगांच्या विविध प्रश्नांसंदर्भात मा. मंत्री दिलीप वळसे पाटील यांच्या बरोबर



बैठक. उपस्थिती मा. सुप्रियाताई, दत्ता बाळसराफ, विजय कान्हेकर इत्यादी.

दि. १४ ऑगस्ट २००७ :- महाराष्ट्र राज्य शिक्षणहक्क अभियानातर्फे जनता केंद्र ताडदेवपासून ऑगस्ट क्रांती मैदानापर्यंत 'कॅन्डल मार्च' चे आयोजन. सहभाग मा. खा. सुप्रियाताई सुळे यांच्यासह विजय कसबे, सुरेश पाटील, उज्वल जाधव, गिरीष परदेशी, डॉ. दिलीप निंबार्ते, रमेश कदम, विरेंद्र भाट इत्यादी.

दि. २३ ऑगस्ट २००७ :- महाराष्ट्र राज्य अपंग वित्त व विकास महामंडळ यांच्याबरोबर अपंगांसाठी फळबाग लागवड प्रशिक्षण व अर्थसहाय्य कार्यशाळा घेणेबाबत बैठक. मा. वसंत संख्ये, सुहास काळे, विजय कान्हेकर, सुरेश पाटील इत्यादी उपस्थित होते.

दि. २० सप्टेंबर २००७ :- महाराष्ट्र राज्य अपंग वित्त व विकास महामंडळ व यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, विभागीय केंद्र औरंगाबाद यांच्या सहकार्याने तापडिया नाट्यमंदिर औरंगाबाद येथे अपंगांसाठी फळबाग लागवड प्रशिक्षण व अर्थसहाय्य कार्यशाळा घेण्यात आली. अभियानाचे दत्ता बाळसराफ सुरेश पाटील, शंकर साळवे इत्यादी हजर होते.

दि. २ ऑक्टो. २००७ :- जिल्हा शल्यचिकित्सक, जिल्हा रुग्णालय ठाणे व अपंग हक्क विकास मंचद्वारा आयोजित अपंगांना मोफत अवयव वाटप शिबीराचा कार्यक्रम. सुरेश पाटील, अनिल चाळके, शंकर साळवे यांचा सहभाग.

माहितीचा अधिकार अधिनियम २००५

प्रशासनातील पारदर्शकता, भ्रष्टाचाराला आळा आणि नागरिकांचा प्रशासनातील सहभाग या उदात्त हेतूने अस्तित्वात असलेल्या माहितीचा अधिकार अधिनियम २००५

या कायद्याच्या अधिक माहितीसाठी अभियानातर्फे प्रत्येक सोमवारी विनामूल्य माहिती सल्ला सहाय्य केंद्र सुरू करण्यात आले आहे. माहितीच्या अधिकाराच्या चळवळीतील कार्यकर्ते व तज्ज्ञ श्री. प्रमोद पाटील हे मार्गदर्शन करतात. तसेच मुंबई बाहेरील नागरिकांना पत्रव्यवहाराद्वारे सल्ला देण्यात येतो.

१४ ऑगस्ट २००७ स्वातंत्र्यदिनानिमित्त सायंफेरी :

अमरावती

१४ ऑगस्ट २००७ रोजी नवमहाराष्ट्र युवा अभियान व संघर्ष बहुउद्देशीय संस्था अमरावती यांच्या संयुक्त विद्यमाने महात्मा फुले नगर, नवसारी व पठाणपुरा, अमरावती येथे स्वातंत्र्यदिनानिमित्त सायंफेरी काढण्यात आली. यामध्ये अनेक युवक व युवतीनी तसेच अनेक महिलांनी यात भाग घेतला. या फेरीचे उद्घाटन संघर्षचे दिगांबर मेश्राम यांनी केले. या कार्यक्रमास प्रमुख मार्गदर्शक म्हणून प्रफुल्ल कुकडे, मुकुंद देशमुख, समीर मासोदकर, अंकिता गावंडे, यांनी भाग घेतला.

या स्वातंत्र्य फेरीत सुमारे २०० युवक, युवती व कार्यकर्त्यांनी भाग घेतला.

समाजकार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग - २००७

प्रतिवर्षाप्रमाणे घेण्यात येणाऱ्या प्रशिक्षण वर्गाची सुरुवात या वर्षी दि. २ सप्टेंबर २००७ पासून झाली आहे.

| दिनांक | विषय | |
|---------|-----------------------|----------------------------|
| | प्रथम सत्र | द्वितीय सत्र |
| २/९/०७ | — | स्व परिचय |
| ९/०९/०७ | गट कार्य, वैशिष्ट्ये | गट कार्य, सहकार्य, नेतृत्व |
| २३/९/०७ | व्यक्ती सहयोग केसवर्क | समुपदेशन |



महाराष्ट्र महिला व्यासपीठ

★ कार्यवृत्त ★

महाराष्ट्र महिला व्यासपीठाचे कार्य आणि जबाबदारी संयोजक रेखा नार्वेकर त्यांची पूर्णवेळ सहकारी शोभा लोंढे यांच्या सहकार्याने सांभाळत असतात. शिवाय अनेक महिला व महिलासंस्था यांचे विविध कार्यक्रम व उपक्रमांच्या निमित्ताने सहकार्य आणि सहभाग सातत्याने मिळत असते.

महाराष्ट्र महिला व्यासपीठाची प्रमुख उद्दिष्टे पुढीलप्रमाणे आहेत.

- १) महिला प्रबोधन - विविध कार्यक्रम उपक्रमांच्या माध्यमापासून
- २) महिलांचे कायदेविषयक शिबीर
- ३) महिला विकासाचे विविध कार्यक्रम
- ४) महिलांच्या बचतगटाना मार्गदर्शन करणे.
- ५) स्वबळावर आर्थिकबाबतीत समर्थ होण्यासाठी लघुउद्योग, कुटीरउद्योगाची प्रात्यक्षिके आणि माहिती कार्यशाळा आयोजित करणे.
- ६) भविष्यकाळात देशाची आत्मविकसीत सुदृढ सशक्त महिला नागरीक होण्यासाठी युवती व किशोरवयीन मुलींची प्रशिक्षण शिबीरे आयोजित करणे.
- ७) विविध क्षेत्रातील कर्तबगार महिलांच्या मुलाखतींचा कार्यक्रम 'उत्तुंग भरारी' उपक्रमाच्या माध्यमातून आयोजित करून युवती व महिला यांना मार्गदर्शन व प्रोत्साहन देणे.
- १) दिनांक १०, १४, २७ फेब्रुवारी रोजी वांद्रे, कुलाबा, नाहूर गाव, चेंबूर (पेस्तन सागर) येथे बचतगट स्थापन करण्यात येऊन त्यांना मार्गदर्शन करण्यात आले. आश्विनी मयेकर यांनी सहकार्य केले. प्रत्येक बचत गटात २५

ते ४० महिला सभासद झाल्या.

दिनांक १७ व १८ फेब्रु. ०७ रोजी 'छत्रपती संभाजी नाशिक केंद्र येथे राज्यस्तरीय अपंग क्रीडा स्पर्धा आयोजित केल्या. यावेळी वासंती शेवाळे, मंजुश्री भालेराव, माधुरी शर्मा या व्यासपीठाच्या कार्यकर्त्या उपस्थित होत्या.

दिनांक ८ मार्च २००७ रोजी महिला व्यासपीठाच्या कार्यालयात बचतगटाच्या ९० महिला एकत्र आल्या. आंतरराष्ट्रीय महिला दिनाच्या निमित्ताने अनेकांनी आपले विचार प्रकट केले. त्यानंतर यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान ते चर्चगेट स्टेशन पर्यंत रॅलीचे आयोजन करण्यात आले. शिवाय इतर अनेक महिला संस्थांच्या जागतिक महिला दिनानिमित्त झालेल्या कार्यक्रमात व्यासपीठाच्यावतीने सहकार्य करण्यात आले.

दिनांक १५ मार्च २००७ रोजी टिळकनगर चेंबूर येथे बाल विकास सेवा योजना सहकार्याने महिला मेळावा घेण्यात आला. श्री कुसुम वैसावे यांचे सहकार्य मिळाले.

दिनांक २० मार्च २००७ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी महाड येथे दलिताना चवदार तळ्यात प्रवेश देऊन २० मार्च या दिवशी क्रांती केली होती. या क्रांती दिनांच्या निमित्ताने चेंबूर बचत गटातील महिलांनी महाडला उपस्थित राहून कार्यक्रमाचे आयोजन केले. त्यास उत्तम प्रतिसाद मिळाला.

दिनांक २९ मार्च २००७ दिल्ली येथे आयोजित केलेल्या दलित महिला परिषदेस शोभा लोंढे उपस्थित राहिल्या. जगभरातील ६०० महिला यावेळी एकत्र आल्या होत्या.

१४ एप्रिल २००७ रोजी नारायणगाव येथील



तमाशात काम करणाऱ्या महिलांची भेट व्यासपीठाच्या कार्यकर्त्यांनी घेतली. त्यांना मार्गदर्शन केले.

१६/१७/१८ एप्रिल २००७ रोजी महाराष्ट्र महिला व्यासपीठ व नवमहाराष्ट्र युवा अभियान या प्रतिष्ठानच्या दोन विभागांच्या संयुक्त विद्यमाने वडाळा येथील नॉलेज सेंटरमध्ये किशोरवयीन मुलींना मार्गदर्शन करण्यासाठी कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. संयोजक रेखा नावेंकर यांनी यावेळी व्यासपीठाच्या कार्याची सविस्तर माहिती सांगितली. उज्वला पोंगुर्लेकर, अनिता पगारे, मंजुश्री भालेराव, दत्ता बाळसराफ (नव महाराष्ट्र युवा अभियानचे संयोजक) इत्यादींच्या सहकार्याने ही कार्यशाळा यशस्वी ठरली.

मे व जून महिन्यामध्ये कुलाबा, गोवंडी, मुलुंड, मानखूर्द, कुर्ला, भांडूप, बांद्रे येथील बचतगटाना भेटी देऊन त्यांना मार्गदर्शन करण्यात आले. नाहूर गाव - मुलुंड येथील महिलांना रेशनिंगसाठी येणाऱ्या अडचणी दूर करण्यासाठी दिडशे महिलांनी सही केलेला तक्रार अर्ज दाखल करण्यात आला. शोभा लोंढे यांनी हे काम सांभाळले.

६ ऑगस्ट २००७ रोजी प्रतिष्ठानमध्ये मुंबई संघटन समितीची बैठक संयोजक रेखा नावेंकर यांच्या अध्यक्षतेखाली घेण्यात आली. प्रा. स्नेहजा रुपवते व संघटन समितीचे अनेक कार्यकर्ते यावेळी उपस्थित होते.

२० ऑगस्ट २००७ सेन्ट्रल इन्स्टिट्यूट ऑफ फिशरीज एज्युकेशन या प्रख्यात संशोधन संस्थेच्या सहकार्याने घेण्यात आलेल्या कार्यशाळेस शोभा लोंढे व आश्विनी मयेकर उपस्थित राहिल्या.

२६ ऑगस्ट २००७ रोजी श्री नारायणराव आचार्य विद्या निकेतन माहूल रोड चेंबूर येथे किशोरवयीन मुलींसाठी कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. यावेळी संयोजक रेखा नावेंकर यांनी कार्यशाळा घेण्यामागचा उद्देश मुलींना समजाऊन सांगितला.

संस्थेचे विश्वस्त आणि मुख्याध्यापक श्री. पाटील यांनीही आपले मनोगत व्यक्त केले. 'स्वपरिचय आणि सामाजिक भान' तसेच 'स्त्री-पुरुष नाते संबंधातील जागृकता' या विषयावर अनिता पगारे उज्वला पोंगुर्लेकर यांनी मार्गदर्शन केले.

२९ सप्टेंबर २००७ रोजी युवती व महिलांना मार्गदर्शन व प्रोत्साहन मिळावे यासाठी 'उत्तुंग भरारी' कार्यक्रमांतर्गत भारतीय प्रशासकीय सेवेतील व भारतीय पोलीस सेवेतील कर्तबगार महिलांना निमंत्रित करण्यात आले होते. महाराष्ट्र महिला व्यासपीठाने कुलाबा महिला विकास मंडळाच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित केलेल्या या कार्यक्रमास बहुसंख्येने स्त्री व पुरुष उपस्थित होते. यावेळी मा. मनिषा म्हैसकर - महासंचालक माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय, मा. चित्कला झुत्शी - अप्पर मुख्य सचिव गृहविभाग, डॉ. प्रज्ञा सरवदे - अप्पर पोलीस आयुक्त - अॅन्टी करप्शन ब्युरो या उपस्थित होत्या. वासंती वर्तक यांनी या सर्वांशी संवाद साधला. आय. ए. एस. परिक्षेत प्रथम आलेल्या डॉ. आश्विनी जोशी यांचा यावेळी स्मृतिचिन्ह देऊन सन्मान करण्यात आला. संयोजक रेखा नावेंकर यांनी सर्वांचे स्वागत, प्रास्ताविक व व्यासपीठाची माहिती सांगितली. य. च. प्रतिष्ठानचे उपाध्यक्ष मा. हुसेन दलवाई यावेळी प्रमुख अतिथी म्हणून उपस्थित होते. महिलामंडळाच्या पदाधिकार्यांनीही यावेळी मनोगत व्यक्त केले.

३० सप्टेंबर २००७ रोजी महाराष्ट्र राज्य सहकारी बोर्ड लि. च्या संयुक्त विद्यमाने 'महिला अल्पमुदत प्रशिक्षण कार्यक्रम' घेण्यात आला. शिवशक्ती को. हौ. सोसा. नाहूरगाव - मुलुंड येथे झालेल्या या कार्यशाळेत ५० महिलांनी सहभाग घेतला. शालिनी गायकवाड यांचे बहुमूल्य सहकार्य लाभले. यावेळी टोमॅटो सॉस बनविणे, मेणबत्त्या बनविणे इत्यादींचे प्रशिक्षण देण्यात आले. महिलांना आर्थिक बाबतीत सक्षम करण्यासाठी अशी प्रशिक्षण शिबीरे खूपच उपयुक्त ठरत आहेत.



कायदेविषयक सहाय्य व सल्ला फोरम

* कार्यवृत्त *

सर्वसाधारणपणे कायदेविषयक सहाय्य व सल्ला हा मूलभूत हक्क समजला जातो. भारतीय संविधानाच्या अनुच्छेद ३९ - क मध्ये खालील तरतूद करण्यात आली आहे.

“राज्य, हे कायद्याची यंत्रणा राबवताना समान संधीच्या तत्वावर न्यायाची अभिवृद्धी होईल याची निश्चिती करील, आणि विशेषतः आर्थिक किंवा अन्य निःसमर्थतेमुळे कोणत्याही नागरिकाला न्याय मिळविण्याची संधी नाकारली जाणार नाही, याची शाश्वती देण्यासाठी अनुरूप विधी विधानाद्वारे किंवा योजनाद्वारे किंवा अन्य कोणत्याही मार्गाने कायदेविषयक सहाय्य मोफत उपलब्ध करून देईल.”

वरील तरतुदीला अनुसरून केंद्र शासनाने “विधी सेवा प्राधिकरण अधिनियम, १९८७” नावाचा कायदा केला आहे. हा कायदा संपूर्ण भारत देशाला लागू आहे. सर्वसाधारणपणे या कायद्याची अंमलबजावणी शासकीय यंत्रणेमार्फत केली जाते. परंतु या कायद्याचे कलम ४(म) (न), ५ व ८ मध्ये अशी तरतूद करण्यात आली आहे की या कायद्याची अंमलबजावणी अशासकीय संस्था, सार्वजनिक न्यास किंवा विद्यापीठ यांच्यामार्फत सुद्धा करता येईल. या तरतुदींना अनुसरून यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानने ही योजना राबविण्याचा निर्णय घेतला. तसेच प्रतिष्ठानच्या घटनेच्या Rules and Regulations मध्ये या बाबतची तरतूद केली आहे. त्यामुळे हे काम आता साधे राहिले नसून त्याला कायदेशीर स्वरूप (Statutory) प्राप्त झाले

आहे. हे काम चालू ठेवणे आता बंधनकारक झाले आहे. म्हणूनच या योजनेची अंमलबजावणी करण्यासाठी प्रतिष्ठानने यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान कायदेविषयक सहाय्य व सल्ला फोरम नावाच्या विभागाची निर्मिती केली आहे. या विभागामध्ये अंदाजे ३५ वकील व समाजसेवक काम करित असून ते आपली निस्वार्थ सेवा या योजनेसाठी देत आहेत.

वरील विभागामार्फत सर्वसाधारणपणे खालील प्रकारचे काम केले जाते.

१. समाजातील गोर - गरीब व तळागाळातील लोकांना कसल्याही प्रकारचा भेदभाव न करता मोफत तोंडी सल्ला देणे.
२. प्रसंगी गुंतागुंतीच्या प्रश्नासंबंधी सखोल अभ्यास करून गरजू लोकांना कायदेविषयी सल्ला देणे.
३. काही वेळा पत्रव्यवहाराद्वारे गरजू लोकांना कायदेविषयी सल्ला देणे.
४. पक्षकारांच्या तंट्यामध्ये सामोपचाराने तडजोड घडवून आणणे.
५. संबंधित न्यायालयाच्या सहकार्याने लोक न्यायालयांचे आयोजन करणे.
६. विधी विषयामध्ये संशोधन करून प्रचलित कायद्यांमध्ये सुधारणा सुचविणे किंवा नवीन कायद्याचे प्रारूप तयार करून वैधानिक प्रस्ताव राज्य शासनाला किंवा केंद्र शासनाला पाठविणे.
७. कायद्यांची विशेष माहिती करून देण्यासाठी तज्ञांची विशेष



व्याख्याने आयोजित करणे.

८. सामान्य लोकांना कायद्यांची माहिती करून देण्यासाठी विधी साक्षरता कार्यशाळांचे आयोजन करणे.

अभ्यास करून प्रस्ताव तयार करण्यासाठी फोरमच्या ३० समीत्या नेमल्या जातात. अशा उपसमीत्यांच्या बैठका खाली दर्शविलेल्या दिवशी झाल्या.

| अ. क्र. | उपसमीतीचे नाव | दिनांक | विषय |
|---------|--|-----------------|---|
| १ | मुंबई उच्च न्यायालय अधिकारी समिती | १६ जून २००७ | जिल्हा न्यायालयांचे भाषेतील न्याय निर्णयांचे संकलन करून प्रकाशित करण्याबाबत. |
| २. | मुंबई उच्च न्यायालय अधिकारी समिती | ७ जुलै २००७ | मराठी न्याय निर्णय प्रकाशित करण्याबाबत. |
| ३. | प्रतिष्ठानच्या सर्व विभागांची सुकाणू समिती | २२ ऑगस्ट २००७ | ज्येष्ठ नागरिकांचा मेळावा - २००७ च्या आयोजनासंबंधी विचार करणे. |
| ४. | ज्येष्ठ नागरिक संघांच्या प्रतिनिधी समिती | ४ सप्टेंबर २००७ | ज्येष्ठ नागरिकांचा मेळावा - २००७ च्या आयोजनासंबंधी विचार करण्यासाठी बालकल्याण केंद्र विलेपार्ले येथे झालेली बैठक. |

९. विधी शाखेच्या विद्यार्थ्यांसाठी मूट कोर्ट स्पर्धा, निबंध स्पर्धा व वक्तृत्व स्पर्धा यांचे आयोजन करणे.

त्यानुसार गेल्या आठ महिन्यात म्हणजेच १ फेब्रुवारी २००७ ते ३० सप्टेंबर २००७ या अवधीमध्ये फोरमकडून करण्यात आलेल्या कामाचा आढावा खालीलप्रमाणे आहे.

१) फोरमची बैठक :- योजनेच्या अंमलबजावणी बाबत विचार करून धोरणात्मक निर्णय घेण्यासाठी आणि कार्यकर्त्यांना मार्गदर्शन करण्यासाठी दरमहा दुसऱ्या शुक्रवारी फोरमच्या मासिक बैठका घेतल्या जातात. त्यानुसार गेल्या आठ महिन्यामध्ये फोरमच्या आठ बैठका झाल्या.

२) उपसमीत्यांच्या बैठका :- एखाद्या विषयासंबंधी सखोल

३) कायदेविषयक सल्ला केंद्र :- गोरगरीब व सामान्य लोकांना कायदेविषयक तोंडी सल्ला देण्यासाठी दर शुक्रवारी सायंकाळी ५.०० ते ७.०० या वेळात प्रतिष्ठानच्या ग्रंथालयामध्ये सल्ला केंद्र चालविले जाते. गेल्या आठ महिन्यात या केंद्राच्या ३५ बैठका झाल्या. या अवधीमध्ये ७० लोकांनी या केंद्राची लाभ घेतला.

४) मोफत समुपदेशन व तडजोड केंद्र :- दर मंगळवारी सायंकाळी ५.०० ते ७.०० या वेळात समुपदेशन व तडजोड केंद्राचे आयोजन करण्यात येते.

५) आपल्या कायद्याची माहिती करून घ्या (Know your Law Lecture Series) :- या व्याख्यानमाले अंतर्गत दरमहा किंवा



तीन महिन्यातून एकदा कायदे पंडितांचे विशेष व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात येते.

६) विधी साक्षरता कार्यशाळा :- लोकांना सामाजिक किंवा त्यांच्या दैनंदिन जीवनाशी संबंधित असलेल्या कायद्यांची माहिती करून देण्यासाठी विविध प्रकारच्या विधी साक्षरता कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात येते. यासाठी समाजाच्या वेगवेगळ्या घटकांसाठी वेगवेगळे प्रकल्प तयार करण्यात आले आहेत.

उदाहरणार्थ - पौर्गंडावस्थेतील मुले व मुली, महाविद्यालयीन विद्यार्थी, ज्येष्ठ नागरिक, महिला, सहकारी गृहनिर्माण संस्थांचे सदस्य, सार्वजनिक न्यासाचे विश्वस्थ, सार्वजनिक संस्थांचे सदस्य आणि सर्वसामान्य जनता इत्यादी. गेल्या आर्थिक वर्षामध्ये या सर्व घटकांसाठी विधी साक्षरता कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले. त्यांचा तपशील खाली दर्शविल्याप्रमाणे आहे.

(६)-१). फोरम व रमाई महिला विकास समिती, चेंबूर यांच्या संयुक्त विद्यमाने त्रिमूर्ति चाळ, रामगड (प.) येथे दिनांक २५ फेब्रुवारी २००७ रोजी महिलांसाठी एका विधी साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले. १०० पेक्षा जास्त महिला उपस्थिती होत्या. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी होते. श्री. उत्तम गीते हे अध्यक्षस्थानी होते.

(६)-२). फोरम व डॉ. आंबेडकर विधी महाविद्यालय, वडाळा यांच्या संयुक्त विद्यमाने त्या महाविद्यालयामध्ये विधी शाखेच्या विद्यार्थ्यांसाठी दिनांक ११ मार्च २००७ रोजी एका विधी कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले. १०० पेक्षा जास्त विद्यार्थी उपस्थित होते. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी होते. प्राचार्य माधवी हे अध्यक्षस्थानी होते.

(६)-३) फोरम व आचार्य मराठे महाविद्यालय, चेंबूर यांच्या

संयुक्त विद्यमाने त्या महाविद्यालयामध्ये विद्यार्थ्यांसाठी दिनांक १८ मार्च २००७ रोजी एका विधी साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले. १०० पेक्षा जास्त विद्यार्थी उपस्थित होते. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी होते. प्राचार्य श्री. मुळे हे अध्यक्षस्थानी होते.

(६)-४). फोरम व निर्माण मजदूर संघ, कल्याण यांच्या संयुक्त विद्यमाने रस्त्याचे काम करणाऱ्या स्त्री-पुरुष कामगारासाठी नाना भगत बंगला, मुंबा येथे दिनांक १ एप्रिल २००७ रोजी एका विधी कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले. १०० पेक्षा जास्त कामगार उपस्थित होते. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी व हिंदी होते. श्री. महादेव पटारिया हे अध्यक्षस्थानी होते.

(६)-५). फोरम व ठाकरसी महिला विद्यापीठ (P.V.D.T. College, Marine Lines) मुंबई यांच्या संयुक्त विद्यमाने पी. व्ही. डी. टी. महाविद्यालयामध्ये डी. एड. च्या विद्यार्थीनींसाठी एका विधी कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले होते. १०० पेक्षा जास्त विद्यार्थी उपस्थित होते. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी, हिंदी व इंग्रजी होते. प्राचार्या डॉ. मर्चंट ह्या अध्यक्षस्थानी होत्या.

(६)-६). फोरम व नवमहाराष्ट्र युवा आंदोलन, मुंबई यांच्या संयुक्त विद्यमाने ग्रामपंचायत सभागृह, अर्नाळा, जिल्हा - ठाणे येथे दिनांक २० मे २००७ रोजी स्त्री - पुरुषांसाठी एका विधी साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले होते. ७५ स्त्री-पुरुष उपस्थित होते. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी होते. गावचे सरपंच श्री. पाटील हे अध्यक्षस्थानी होते.

(६)-७). फोरम व पार्वतीबाई शंकर चव्हाण ट्रस्ट, गोरेगाव, मुंबई यांच्या संयुक्त विद्यमाने पाटकर महाविद्यालय, गोरेगाव येथे स्त्री - पुरुषांसाठी दिनांक ८ जुलै २००७ रोजी एक विधी



साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले होते. १०० पेक्षा जास्त स्त्री - पुरुष उपस्थित होते. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी व हिंदी होते. श्री. सचिन चव्हाण हे अध्यक्षस्थानी होते.

(६)-८). फोरम व कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, वाशी यांच्या संयुक्त विद्यमाने त्या महाविद्यालयामध्ये विद्यार्थ्यांसाठी दिनांक ८ जुलै २००७ रोजी एका विधी साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले होते. १०० पेक्षा जास्त विद्यार्थी (मुले व मुली) उपस्थित होते. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी होते. उपप्राचार्य डॉ. शिंदे हे अध्यक्षस्थानी होते. ठाणे जिल्ह्याचे जिल्हा न्यायाधीश श्री. हेमंत देशपांडे हे प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते.

(६)-९). फोरम व एम. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापूर, जिल्हा - कोल्हापूर यांच्या संयुक्त विद्यमाने त्या महाविद्यालयामध्ये विद्यार्थ्यांसाठी दिनांक २८ जुलै २००७ रोजी एका विधी साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले होते. १०० पेक्षा जास्त विद्यार्थी (मुले व मुली) उपस्थित होते. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी होते. प्राचार्य डॉ. अजित मगदुम हे अध्यक्षस्थानी होते.

(६)-१०). फोरम व एम. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापूर, कोल्हापूर यांच्या संयुक्त विद्यमाने जिल्हा दिनांक २९ जुलै २००७ रोजी शाहूवाडी तालुक्यातील स्त्री - पुरुषांसाठी एका विधी साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले होते. २०० पेक्षा जास्त स्त्री - पुरुष उपस्थित होते. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी होते. शाहूवाडी तालुका कोर्टाचे न्यायाधीश श्री. साळुंके हे प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते. प्राचार्य अजित मगदुम हे अध्यक्षस्थानी होते.

(६)-११). फोरम व वीर वजेकर महाविद्यालय, फुंडे, उरण यांच्या संयुक्त विद्यमाने त्या महाविद्यालयामध्ये विद्यार्थ्यांसाठी दिनांक ९ सप्टेंबर २००७ रोजी एका विधी साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले होते. १०० पेक्षा जास्त विद्यार्थी (मुले व मुली) उपस्थित होते. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी होते. रायगड जिल्ह्याचे जिल्हा न्यायाधीश श्री. पाटकर हे अध्यक्षस्थानी होते आणि मुंबई उच्च न्यायालयाचे विद्यमान न्यायमूर्ती मा. श्री. सय्यद हे प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते.

(६)-१२). फोरम व रोटरी क्लब ऑफ डोंबिवली यांच्या संयुक्त विद्यमाने रोटरी भवन, डोंबिवली येथे खास महिलांसाठी दिनांक २३ सप्टेंबर, २००७ रोजी एका विधी साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले होते. १०० पेक्षा जास्त महिला उपस्थित होत्या. व्याख्यानांचे माध्यम मराठी होते. डॉ. बैतुल हे अध्यक्षस्थानी होते आणि डॉ. काटकर (बालरोग तज्ज्ञ) हे प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते.

(६)-१३) शपथ कार्यक्रम :- वर दर्शविलेल्या सर्व विधी साक्षरता कार्यशाळेमध्ये हुंडाबंदी संबंधी शपथा घेण्यात आल्या. तसेच संविधानातील मूलभूत कर्तव्यपालना संबंधी शपथा घेण्यात आल्या. त्याचप्रमाणे संविधानाच्या प्रास्ताविकेचे सांघिक वाचन करण्यात आले.

७) संशोधनाचे काम : वर सांगितल्याप्रमाणे फोरमतेर्फे विधी संशोधनाचे कामसुद्धा केले जाते. सध्या महाराष्ट्र हुंडाबंदी नियम २००३ यामध्ये सुधारणा सुचविण्यासाठी संशोधन चालू आहे.

८) आगामी कार्यक्रम : राज्यातील पोलीस अधिकाऱ्यांसाठी खास विधी साक्षरता कार्यशाळेचे आयोजन करण्यासंबंधी प्रस्ताव विचाराधीन आहे.



“कायदा नसता तर”

कायदा नसता तर
दररोज झाल्या असत्या मारामान्या
हातात असत्या तलवारी सुन्या
कोणीही कोणाशी कसेही वागले असते.....
कायदा नसता तर॥१॥

दररोज झाली असती फसवा फसवी
खून दरोडेखोरी व अत्याचार
क्षणोक्षणी घडले असते...
कायदा नसता तर॥२॥

समता स्वातंत्र्य न्याय व बंधुता
भारतीय एकात्मता व अखंडता
यांचे काय झाले असते?
कायदा नसता तर॥३॥

मुलींची छेडछाड वाढली असती
विस्मरणात गेली असती सर्व नातीगोती
दररोज रॅगिंग झाले असते...
कायदा नसता तर॥४॥

या विधी साक्षरता कार्यशाळेत
होऊ आपण विधी साक्षर
शिकवू तयांना जे आहेत विधी निरक्षर
जनसामान्यांचे काय झाले असते?
कायदा नसता तर.....॥५॥

- प्रा. सुभाष दिनकर आहेर

(विधी साक्षरता कार्यशाळेत सहभागी होवून त्याचे महत्त्व जाणवल्यामुळे उत्स्फूर्तपणे प्रा. आहेर यांनी लिहिलेली ही कविता...)



यशवंतराव चव्हाण राष्ट्रीय ग्रंथालय

★ कार्यवृत्त ★

मा. यशवंतराव चव्हाण साहेब ग्रंथप्रेमी म्हणून प्रसिद्ध होते. या अनुषंगाने यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानने समृद्ध असे ग्रंथालय निर्माण करण्यावर लक्ष दिले आहे. यशवंतराव चव्हाण यांच्या जीवनाच्या विविध पैलूंचे दर्शन घडविणारी पुस्तके ग्रंथालयामध्ये आहेत. महान व्यक्तीचे विचार काळ उलटला तरी अढळ राहतात व भावी पिढ्यांना स्फूर्ती देत असतात. त्यांचे विचार आजच्या पिढीपर्यंत पोहोचवावे म्हणून आपल्या प्रतिष्ठानने 'सह्याद्रीचे वारे', विधीमंडळातील निवडक भाषणे यांचे प्रकाशन केले आहे. साहेबांनी प्रदर्शित केलेल्या महत्त्वाच्या विचारांचे प्रतिबिंब या निवडक भाषणामध्ये आले आहे. उद्याचा महाराष्ट्र राज्याचा कारभार व लौकिक कायम राहिला पाहिजे, हे राज्य लोककल्याणाकरिता झटेल असे साहेबांचे स्वप्न होते. साहेबांनी स्वतः लिहिलेली अनेक पुस्तके ग्रंथालयात आहेत. राजकीय विचारांच्या वेगवेगळ्या छटा आणि त्यांचा परस्परांशी संबंध याबाबत साहेबांनी त्यांच्या आत्मचरित्रात (॥ कृष्णाकाठ ॥) बौद्धिकदृष्ट्या उकल करुण सांगितला आहे. अशा त्यांच्या विषयाशी सुसंगत ग्रंथ ग्रंथालयांनी खरेदी केले आणि आणखी काही संबंधीत विषयांची

भर घातली. जेणे करून विद्यार्थी संशोधक आणि सर्वसामान्य वाचक यांना या ग्रंथाचा लाभ घेता यावा अशा प्रकारचा संग्रह ग्रंथालयामध्ये उपलब्ध आहे. तो पुढील प्रमाणे.

समाजशास्त्र, राज्यशास्त्र, शेती, सहकार, महाराष्ट्राची संस्कृती इतिहास, कायदा, ईअरबुक गॅझेट्डीअर, चरित्रे आत्मचरित्रे तसेच धर्मकोष, विश्वकोष: भारतीय संस्कृतीकोष, भारतीय समाजविज्ञान कोष, महाराष्ट्रीय ज्ञानकोष, मराठी विश्वकोष, मराठी विश्वचरित्रकोष, इत्यादी विषयावरील पुस्तकांचा संग्रह ग्रंथालयामध्ये उपलब्ध आहे. तसेच संबंधीत विषयाला अनुसरून नवीन पुस्तके ग्रंथालयामध्ये घेण्यात येतात.

सार्वजनिक दृष्ट्या महत्त्वाचे विषय असलेले आणि संदर्भाकरीता उपयोग व्हावा. या दृष्टीने ग्रंथालयांनी काही महत्त्वाची, कात्रणे काढून, वाचकांना हाताळता यावी यासाठी व्यवस्थित बांधणी केलेली आहे, ते विषय पुढील प्रमाणे :-

१) त्सुनामी, डिसेंबर २००४, २) मुंबई बॉम्बस्फोट लोकल ट्रेन २००६, ३) मुंबई महापुर २६ जुलै २००५ व ०६, ४) साहित्य अकादमी पुरस्कार ५) साहित्य सम्मेलन ६) महत्त्वाच्या व्यक्ती



आणि पुरस्कार ७) हिरक महोत्सव ८) १८५७ इतिहास ९) स्वातंत्र्याची ६० वर्षे १०) समर्थ रामदास स्वामी ११) महात्मा गांधी (गांधी कथाकथन) १२) मा. यशवंतराव चव्हाण १३) मा. शरद पवार १४) महाराष्ट्र टाईम्स सगुण - निर्गुण अशा दैनिक वृत्तपत्रामधून महत्त्वाच्या विषयांची कात्रणे संदर्भाकरीता उपयोगी पडतात.

विद्यार्थी, संशोधक यांच्या करिता अद्ययावत माहितीसाठी नियतकालीकाचा उपयोग होतो. नियतकालीकामधून प्रसिद्ध होणारे अनेक विषयावरील लेख अभ्यासकांना उपयोगी पडतात. या करिता ग्रंथालयांनी महत्त्वाच्या नियतकालीकांची बांधणी करून संदर्भाकरीता ठेवली आहे. ती पुढील प्रमाणे.

- १) All India Report 2) National Geographic 3) Sanctuy
- 4) One India one People 5) Compitions succes ६) साधना
- ७) सुधारक ई प्रकारचा संग्रह ग्रंथालयांनी अभ्यासकांना, संशोधकांना उपयोगी यावा या हेतुने केलेला आहे.

ग्रंथालयांचा जास्त सुलभतेने वापर व्हावा यासाठी तंत्रज्ञानाचा वापर करण्यात येतो. या करिता ग्रंथालयाचे संगणीकरणाचे काम चालू आहे. तसेच आधुनिक प्रणालीचा वापर करून ग्रंथालयातील पुस्तकांना BARCODE करून तालीकीकरणासारख्या क्षेत्रात देवघेव करता येणे शक्य झाले आहे.

आधुनिक माहिती तंत्रज्ञानाच्या वापरामुळे ग्रंथालय

व्यवस्थापनात अनेक बदल होत आहेत. ग्रंथालया अंतर्गत कार्यासाठी आणि सेवेसाठी तांत्रिक उपकरणाचा वापर होत आहे. संगणकाच्या आणि ग्रंथालय सॉफ्टवेअरच्या मदतीने ग्रंथालयाची सुची/तालिका अद्ययावत करण्याचे काम पूर्ण होण्याच्या मार्गावर आहे.

यशवंतराव चव्हाण ग्रंथालय हे संदर्भ ग्रंथालय असून सभासदांनी, संदर्भ ग्रंथ ग्रंथालयातच वाचावयाची आहेत. ग्रंथालयाची वार्षिक वर्गणी २५०/- इतकी असून, वाचकांना कथा, कांदबऱ्या, चरित्रे, आत्मचरित्रे घरी वाचण्यास नेण्याकरीता २५०/- रु. रक्कम भरून लाभ घेता येतो. महाविद्यालय विद्यार्थ्यांना नाममात्र वार्षिक वर्गणी रु. २५/- घेऊन संदर्भाकरिता ग्रंथालय उपलब्ध करून दिले आहे. तथापि प्रतिष्ठानच्या आजीव सभासदांना वर्गणी न आकारता यशवंतराव चव्हाण ग्रंथालय उपलब्ध करण्यात आले आहे.

यशवंतराव चव्हाण ग्रंथालयाचे आयोजन व व्यवस्थापन यावर प्रामुख्याने लक्ष केंद्रीत केले आहे.

ग्रंथालय व्यवस्थापनाचे काम ग्रंथपाल श्री. अनिल पु. पाझारे करतात. श्री. वासुदेव रा. कामत हे सल्लागार म्हणून काम पहातात. तसेच सौ. प्रियंका देसाई आणि श्री. अनिल चिंदरकर ग्रंथपालांना कामकाजात मदत करतात.

यावर्षी एप्रिल २००७ पासून काही महत्त्वाचे ग्रंथ ग्रंथालयाने खरेदी केली आहेत.



एप्रिल पासून काही महत्त्वाची पुस्तके खरेदी केली आहेत.

- I) Photobiogeaphy of Sharad Pawar / Beacon way (pub.)
- II) India After Gandhi / Guha, R.
- III) Buddha : his Life & Teachings / osho
- IV) India External Inteuigence / Singh, V.K.
- V) Myth and Reality / Kosambi, D.D.
- VI) God's Little Soldier / Nagorkar, K.
- VII) Hindu Nationalism & Governance
- VIII) 1965 War : The inside story / R.D. Pradhan
- IX) Law of Intellectual Property / Tarapovevala, V.J
- X) Never a dull Moment with menu of Honous Dishonour/ R.D.
- XI) Shorter Constitution of India / Basu, D.D.
- XII) Prattler's Tale /mitra Ashok
- XIII) भारतीय जलसंस्कृती स्वरूप आणि व्याप्ती / मोरवंचीकर, रा.
- XIV) ऐसा ज्ञानसागर (बखर मुंबई विद्यापीठाची) / टिकेकर, अ.
- XV) सार्थ वाल्मीकी रामायण खंड I-IV / डॉ. जोशी प्र. न.
- XVI) किमयागार / गोडबोले अच्युत
- XVII) अहिल्याबाई होळकर / खडपेडकर, वि.
- XVIII) टिपु सुलतानचे स्वप्न / कर्णाडगी.
- XIX) तत्त्वज्ञ - संख्याशास्त्र : / देशमुख चि.
- XX) निवडक साधना खंड १ ते ८ / प्रधान ग. प्र.



★ सृजन कार्यवृत्त ★

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान रंगस्वर विभागातर्फे शालेय विद्यार्थ्यांच्या विकासाकरता सृजन हा अभिनव उपक्रम चालविण्यात येतो. सृजनच्या माध्यमातून समाजातील मान्यवर व्यक्तींच्या सर्जनशीलतेचा अविष्कार विद्यार्थ्यांसोबत घडवून त्यांच्यामधील सुप्त कलागुणांना वाव देण्याचा हा प्रयत्न आहे.

सृजनची संकल्पना आणि संयोजन मा. सुप्रियाताई सुळे यांची असून यामध्ये सन्माननीय सल्लागार म्हणून सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री. डग्लस जॉन आणि सुलेखनकार श्री. शुभानंद जोग हे काम पहातात. दर महिन्याच्या पहिल्या रविवारी सृजन कार्यशाळा सकाळी ९.०० वाजता चव्हाण सेंटरमध्ये आयोजित करण्यात येते. श्री. विद्याधर खंडे त्यांना सहाय्य करतात.

दि. ५ ऑगस्ट २००७ - जादूगार सुनिल कामत यांनी विद्यार्थ्यांसमोर विविध जादूचे प्रयोग सादर केले.

दि. २ सप्टेंबर २००७ - स्वाती गांगल आणि त्यांच्या सहकाऱ्यांनी मुलांना मातीकाम विषयी माहिती दिली. यामध्ये मुलांनी मातीचे विविध आकाराचे मुखवटे तयार केले व नंतर चाकाच्या सहाय्याने पणती तसेच इतर भांडी बनवली.

मार्चपासून जूनपर्यंत परीक्षा व उन्हाळ्याच्या सुट्ट्यांमुळे सृजन कार्यशाळा घेण्यात आल्या नाहीत. त्यामुळे शाळा सुरू झाल्यानंतर सृजन कार्यशाळा घेण्यात आल्या.

“भारताच्या निरनिराळ्या भागात हिंडून आल्यावर आणि भारतातील विविधता पाहिली, तेव्हा भारत म्हणजे काय, याची मला कल्पना आली. कृष्णा, कोयना आणि गोदावरीच्या तीरांवरील भारत मी पाहिला होता. परंतु सिंधूच्या तीरावरील, लेहच्या परिसरातील भारत, ब्रह्मपुत्रेच्या दऱ्याखोऱ्यांतील भारत, गंगाकाठचा भारत, नागाभूमीत पर्वतराजीवर उभा असलेला भारत, नर्मदा, तापी व साबरमतीच्या तीरांवरील भारत आणि दक्षिणेत रामेश्वरापर्यंत पसरलेला, नारळ - पोफळींनी शाकारलेला भारत, गोमंतकातील काजूसारखा आटोपशीर भारत, सागराच्या धडका परत फिरविणारा लांबच लांब किनाऱ्याचा भारत, असा हा विविधतेने नटलेला भारत पाहिला ; डोळे भरून पाहिला. रोमहर्षक काव्य मनात साठवले. देशाटनाने बरेच काही साध्य झाल्याचा प्रत्यय आला. भारताचे वर्णन करणारी पुस्तके पुष्कळ वाचली होती. त्यामुळे भारत जेवढा समजला, त्याच्यापेक्षा किती तरी पटीने अधिक ज्ञान देशाटनाने मिळाले.”

- स्व. यशवंतराव चव्हाण



विभागीय केंद्र - कोकण

* कार्यवृत्त *

रत्नागिरी जिल्हा समिती

फेब्रुवारी २००७

(१)

दिनांक १८-०२-२००७ रोजी महालक्ष्मी बचतगट (य. च. प्र., कोकण समिती, रत्नागिरी) आणि श्री महालक्ष्मी उत्साही महिला मंडळ, काजरघाटी यांच्यावतीने काजरघाटी, रत्नागिरी येथे महिला विकासाबाबत विविध स्पर्धा आयोजित करण्यात आल्या. हा कार्यक्रम प्रतिष्ठानच्या सचिव श्रीमती प्राची शिंदे यांच्या उपस्थितीत संपन्न झाला.

(२)

दिनांक १९-०२-२००७ रोजी मौजे - वाघावळे, उचाट, ता. महाबळेश्वर येथे पर्यटन केंद्र होण्याच्या दृष्टीने तेथील ग्रामस्थासमवेत एक मेळावा आयोजित करण्यात आला.

वाघावळे हे गाव समुद्रसपाटीपासून ३००० फूट उंचीवर असून, वाघावळे, उचाट परिसरातील १६ गावे अतिदुर्गम ८५०० लोकवस्तीची आहेत. कोयना धरण प्रकल्पामुळे कोयना बँक वॉटरचा ९० कि. मी. चा 'शिवसागर जलाशयाचा' सुंदर परिसर या गावाला लाभला आहे. येथे कोणत्याही सुविधा नाहीत. येथील मल्लिकार्जुन शाळेतील सुमारे २०१ विद्यार्थ्यांची सोय ग्रामस्थांनी केली आहे. येथील ग्रामस्थ स्वतःला झोकून व जिद्दीने काम करण्याच्या मनोवृत्तीचे आहेत.

या मेळाव्यात ग्रामस्थांच्या अडचणी समजून घेऊन,

मा. श्री. राजाभाऊ लिमये यांनी येथे रस्ता होणे आवश्यक आहे असे मत व्यक्त केले. (तसेच य. च. प्र. च्या वतीने जे आम्हाला करता येईल, ते आम्ही करू असा विश्वास ग्रामस्थांना दिला.)

मा. डॉ. श्रीरंग कद्रेकर यांनी या परिसराची पाहणी करून, येथे चांगली जमीन व हवामान तसेच पाणी मुबलक असल्याचे सांगून येथे पारंपारिक शेतीबरोबर मधुमक्याचे तसेच गव्हाचे उत्पन्न काढता येऊ शकेल आणि दुग्ध व्यवसायाला चांगला वाव आहे असे सांगितले.

मा. सदस्य श्री. मोहनराव इंदुलकर यांनी सहकाराच्या माध्यमातून उदबोधन केले. तसेच प्रतिष्ठानच्या सचिव श्रीमती प्राची शिंदे यांनी महिलांच्या प्रगतीसाठी व बचतगट स्थापन करण्याच्यादृष्टीने प्रयत्न केले जातील असे आश्वासन दिले.

समारंभाचे अध्यक्ष श्री. हिराभाई बुटाला, खेड यांनी हा मेळावा म्हणजे शुभशकून आहे असे सांगितले. सदर मेळाव्याला य. च. प्र. रत्नागिरीतर्फे जिल्ह्यातील पत्रकारांना खारा गाडी करून येथे आणण्यात आले होते.

मार्च - २००७

(१)

दिनांक ०८-०३-२००७ रोजी महिला आर्थिक विकास महामंडळ आणि रोटरी क्लब यांच्या संयुक्त विद्यमाने जागतिक महिला दिनाच्या निमित्ताने बचत गटातील महिलांसाठी विक्री व प्रदर्शन आयोजित केले. या



कार्यक्रमाचे उद्घाटन जिल्हाधिकारी श्री. विकासचंद्र रस्तोगी व मा. सौ. जयाताई यांनी केले.

(२)

दिनांक १६-०३-२००७ रोजी कुवारबाव येथे रत्नभूमी प्रेसच्या हॉलमध्ये आवळ्यापासून आणि फणसापासून विविध विक्री योग्य पदार्थ बनविण्याचे प्रशिक्षण दिले. या कार्यक्रमाला कुरतडे येथील श्री. जोशी हे प्रशिक्षक लाभले होते.

(३)

दिनांक २२-०३-२००७ रोजी लांजा येथील सांस्कृतिक भवन हॉलमध्ये बचत गटातील महिलांसाठी, कोल्हापूर येथील स्वयंसिद्धा संस्थेच्या संचालिका श्रीमती कांचनताई परुळेकर यांच्या मार्गदर्शनाखाली विविध व्यवसायाचे प्रशिक्षण आयोजित करण्यात आले.

(४)

दिनांक २९, ३० व ३१ मार्च-२००७ रोजी य. च. प्र., गटातील महिलांकरिता, महिलांनी उत्पादित केलेल्या मालाला चांगली बाजारपेठ मिळावी या हेतूने बचत गटातील महिलांच्या मालाचे विक्री व प्रदर्शन भरविण्यात आले. या कार्यक्रमाचे उद्घाटन ज्येष्ठ स्वातंत्र्य सैनिक व समाजसेविका मा. श्रीमती कुमुदताई रेगे यांनी केले. श्रीमती रेगे यांनी या कार्यक्रमात मौलिक मार्गदर्शन केले. या कार्यक्रमाच्या उद्घाटनाला श्री. मोहनराव इंदुलकर, सदस्या श्रीमती नंदा शेलार, सौ. स्मितल पावसकर आणि श्रीमती प्राची शिंदे उपस्थित होत्या.

एप्रिल - २००७

(१)

दिनांक ४ व ५ एप्रिल रोजी बुनकर सेवा केंद्र मुंबई संयुक्त विद्यमाने महिलांसाठी स्वयंवर मंगल कार्यालय येथे

वस्त्रोद्योग कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. या कार्यशाळेचे उद्घाटन कोकण विभागीय केंद्र - रत्नागिरीचे उपाध्यक्ष मा. डॉ. श्रीरंग कद्रेकर यांनी केले. कोकण विभागीय केंद्र - रत्नागिरीचे अध्यक्ष श्री. राजाभाऊ लिमये यांनी हा उपक्रम स्तुत्य आहे असे सांगितले. बुनकर सेवा मुंबई संस्थेतर्फे आलेले टेक्नीकल अधीक्षक श्री. रविंद्र कोमू यांनी ब्लॉक प्रिंटिंगची माहिती दिली. या कार्यक्रमाला महिला वर्ग मोठ्या प्रमाणात उपस्थित होता.

(२)

दिनांक २०-०४-२००७ रोजी ता. संगमेश्वर येथे कृषीमेळावा आयोजित करण्यात आला. केंद्रीय नारळ विकास मंडळाचे उपाध्यक्षपदी मा. श्री. राजाभाऊ लिमये यांची निवड झाल्याबद्दल मोडें गावातील लोकांतर्फे श्री. राजाभाऊ लिमये यांचा शाल व श्रीफळ देऊन सत्कार करण्यात आले. या मेळाव्यात वृक्ष लागवडी संदर्भात डॉ. श्रीरंग कद्रेकर यांनी शेतकऱ्यांना मार्गदर्शन केले.

सप्टेंबर - २००७

दिनांक ०६-०९-२००७ रोजी खेड येथे कृषीमेळावा आयोजित करण्यात आला. डॉ. श्रीरंग कद्रेकर यांनी हा मेळावा भरविण्यामागचा उद्देश कथन केला. डोळे, कान व मन उघडे ठेऊन विचार करून शेती करावी लागेल आणि शेती किफायतशीर होण्यासाठी त्याची योजना केली पाहिजे असे त्यांनी सांगितले. या मेळाव्यात गोदरेज कंपनीचे अधिकारी श्री. बुटाला यांनी दुग्धव्यवसायाबद्दल शेतकऱ्यांना मोलाचे मार्गदर्शन केले. कोकण विद्यापीठाचे प्राध्यापक श्री. परचुपे यांनी दुग्धव्यवसायाबद्दल मार्गदर्शन केले, तसेच जनावरांना लसीकरण करून घेणे का आवश्यक आहे, ते सांगितले.



विभागीय केंद्र नागपूर

✧ कार्यवृत्त ✧

२, ३ व ४ फेब्रुवारी २००७ : ७३ वर्षांनंतर नागपुरात संपन्न झालेल्या ८० व्या अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलनात यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानचा महत्वाचा सहभाग होता. विभागीय केंद्राचे अध्यक्ष श्री. गिरीश गांधी या संमेलनाचे 'स्वागताध्यक्ष' होते. प्रतिष्ठानचे सचिव श्री. गणेश नायडू यांनी संमेलनाच्या कार्यालयीन कामकाजाची जबाबदारी सांभाळली. तसेच कार्यक्रमस्थळांची देखरेख करून ती सुशोभित करण्याचे काम केले.

सौ. मनिषा साधू ह्यांनी निमंत्रित सन्माननीय कविंच्या 'कविसंमेलनाचे' सूत्र-संचालन केले. डॉ. सुनील रामटेके ह्यांनी 'शिक्षणाचे माध्यम म्हणून मराठी निकालात निघाली आहे' या परिसंवादाचे सूत्रसंचालन केले. डॉ. चंद्रभान भोयर ह्यांनी विविध आयोजनात मोलाचे सहकार्य केले.

श्री. गिरीश गांधी यांनी आर्थिक सहाय्य मिळवून देण्यात तसेच संमेलन आशयसमृद्ध होण्यासाठी अहोरात्र कष्ट घेतले.

२० फेब्रुवारी २००७ : पौगंडावस्थेतील मुलांना त्यांच्यात होणाऱ्या मानसिक व शारिरीक परिवर्तनासंबंधी अवगत करण्यासाठी 'रेल्वेमेन्स हायस्कूल' मधील ८ वी व ९वी इयत्तांमधील विद्यार्थी - विद्यार्थीनींसाठी 'बोला डॉक्टरांशी' हा कार्यक्रम आयोजित केला. डॉ. निशिकांत कोतवाल, डॉ. प्रवीण

पागे आणि डॉ. सौ. उज्वला देशमुख परिवर्तनांची इत्यंभूत माहिती विद्यार्थ्यांना दिली. विद्यार्थ्यांनीही कुठलाही आडपडदा न ठेवता प्रश्न विचारलेत.

संचालन सौ. मनिषा साधू व श्री. गणेश नायडू यांनी केले.

महिला व्यासपीठ

८ मार्च २००७ : - जागतिक महिला दिनानिमित्त आंतरमहाविद्यालयीन अध्यापक (महिला) विद्यालयांसाठी 'माध्यमांच्या भडक चित्रणामुळे स्त्रीयांवरील अत्याचारात वाढ' या विषयावर वक्तृत्व स्पर्धा आयोजित करण्यात आली. या स्पर्धेत प्रिती इंगळे - प्रथम ; अपूर्वा सप्रे - द्वितीय आणि निशा मदरानी - तृतीय पारितोषिक विजेत्या ठरल्या. अध्यक्षस्थानी स्त्रीरोग-तज्ज्ञ डॉ. लीना बिरे होत्या. परीक्षक म्हणून डॉ. पल्लवी देशपांडे व श्री. गणेश नायडू यांनी काम पाहिले. संचालन कल्पना तिवारी यांनी केले. आभारप्रदर्शन शैल जैमिनी यांनी केले.

१० मार्च २००७ : सावित्रीबाई फुले स्मृतिदिनानिमित्त शिक्षिकांसाठी 'काव्य - स्पर्धा' आयोजित केली होती. चांगला प्रतिसाद लाभलेल्या या 'काव्य - स्पर्धेत' सौ. उज्वला अंधारे, सौ. सुमती बिसन आणि सौ. विजया मारोतकर प्रथम, द्वितीय आणि तृतीय पारितोषिक विजेत्या ठरल्या. अध्यक्षस्थानी



सामाजिक कार्यकर्त्या मा. सौ. उषा मिश्रा होत्या. परीक्षकांची जबाबदारी सौ. मनिषा साधू आणि सौ. संगीता महाजन ह्यांनी पार पाडली.

संचालन सौ. कल्पना तिवारी यांनी केले तर आभारप्रदर्शन श्रीमती शैल जैमिनी यांनी केले.

१२ मार्च २००७: मा. यशवंतराव चव्हाण यांच्या जयंतीनिमित्त मराठी, हिंदी व उर्दू कवींचे 'त्रिवेणी कविसंमेलन' आयोजित केले होते. अध्यक्षस्थानी प्रतिष्ठानचे प्रा. ज्ञानेश वाकुडकर होते. प्रा. सुमती वानखेडे, प्रा. अशोक थोरात, प्रा. नारायण सुमंत, शंकर बडे, जहीर आलम, जावेद नदीम, रसूल अनवर, डॉ. मोहम्मद असदुल्लाह यांनी मराठी, हिंदी व उर्दू कविता - ज्यातून, सामाजिक, राष्ट्रीय एकता वाढेल व मातीशी नाते सांगणाऱ्या कविता सादर करून प्रसंगाचे गांभीर्य कायम राखले.

सूत्रसंचालन डॉ. मोहम्मद असदुल्लाह व सुचिता खुळे यांनी केले. श्री. गिरीश गांधी यांनी सुरुवातीला मा. यशवंतरावांच्या उल्लेखनीय कार्याचा आढावा घेऊन त्यांना नम्र अभिवादन केले.

३१ मार्च व १ एप्रिल २००७:- मराठी बोली साहित्य संघ यांच्या संयुक्त विद्यमाने कथा संमेलन आयोजित करण्यात आले.

संमेलनाध्यक्ष डॉ. योगेन्द्र मेश्राम म्हणाले बोली - साहित्य चळवळीमागील हेतू, प्रयोजन आणि दृष्टीकोन यापुढे बुद्धिवादी पुरोगामी व्हावा. स्वागताध्यक्ष डॉ. बबनराव तायवाडे म्हणाले मराठी बोली भाषेला प्रतिष्ठा मिळवून देण्यासाठी मराठी लोकभाषेचा विकास व्हावा. राज्यातील सर्वच विद्यापीठात मराठी

लोकभाषा विभाग स्थापन करण्याची नितांत गरज आहे.

याप्रसंगी प्रतिष्ठानचे श्री. गिरीश गांधी, श्री. विजय जिचकार, डॉ. चंद्रभान भोयर उपस्थित होते.

दुसऱ्या दिवशी समारोपप्रसंगी 'मराठीचे संवर्धन करणारे विद्यापीठ स्थापन होऊ शकले नाही, ही राज्याची शोकांतिका आहे. परंतु येणाऱ्या काळात राज्यातील प्रत्येक विद्यापीठात लोकभाषांचे विभाग सुरू करण्यासाठी प्रयत्न व्हावे' हा ठराव संमत करण्यात आला.

दोन्ही दिवशी कथाविषयक अनेक कार्यक्रम झालेत. कार्यक्रम जसे भरगच्च होते तशीच गर्दीही होती. डॉ. श्रीपाद भालचंद्र जोशी, कथाकार अनिल धवड, डॉ. हरिश्चंद्र बोरकर, डॉ. प्रकाश खरात, प्रा. डॉ. बाळकृष्ण लळीत आदी मान्यवरांनी या संमेलनात मार्गदर्शन केले.

१५ एप्रिल २००७ - कवी श्रेष्ठ सुरेश भट यांच्या जयंतीनिमित्त महाराष्ट्रातील जुन्या - नव्या गजलांच्या अभिवाचनाचा 'ये लपेटून चांदणे' हा कार्यक्रम करण्यात आला

सर्वश्री वसंत बाभुळकर, विवेक अलोणी, निरंजन मार्कंडेयवार, रेणुका देशकर, स्नेहल खंडकर, वसंत वाहोकर, श्याम माधव धोंड यांनी अभिवाचन केले.

श्री. गिरीश गांधी यांनी प्रास्ताविक केले तर डॉ. अक्षयकुमार काळे यांनी सुरेश भटांच्या काव्यरचनेचे वैशिष्ट्य विशद करून सांगितले. प्रमुख अतिथी डॉ. सुलभाताई हेल्लेकर म्हणून अध्यक्षस्थानी असलेले ज्येष्ठ कवी डॉ. श्रीधर शनवारे होते.



संचालन सौ. मनिषा साधू यांनी केले तर डॉ. चंद्रभान भोयर यांनी आभारप्रदर्शन केले.

२१ एप्रिल २००७ :- प्रतिष्ठानच्यावतीने डॉ. सौ. सुनंदा देशपांडे यांच्या 'रंगवेध' या पुस्तकाचे प्रकाशन विदर्भ साहित्य संघाचे अध्यक्ष श्री. मनोहर म्हैसाळकर यांच्या हस्ते करण्यात आले.

यावेळी आचार्य अ. द. वेलणकर म्हणाले की 'रंगवेध ग्रंथातून मराठी रंगभूमी संदर्भातील माहितीच्या कक्षा निश्चित रुंदावतील.'

डॉ. सौ. संध्या अमृते व श्री. गिरीश गांधी म्हणाले मराठी नाट्यकलावंतांना 'रंगवेध' मार्गदर्शक आणि प्रेरणादायी ठरेल.

कार्यक्रमाची सांगता सौ. विणा कुळकर्णी यांनी गायिलेल्या पसायदानाने झाली. संचालन डॉ. शुभा साठे यांनी केले.

१ मे २००७ : महाराष्ट्र राज्य स्थापना दिन आणि कामगार - दिनानिमित्त प्रतिष्ठानने सप्तरंग संस्थेच्या सहकार्याने 'बिल्वदल' हा जुन्या-नव्या कवितांचा वारसा जपणारा कार्यक्रम आयोजित केला.

शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या, पांढरपेशा मध्यमवर्गीयांची कोती वृत्ती स्त्री विषयीचा दुय्यम दृष्टीकोन अशा विषयांवर आधारित आणि डोळ्यात झणझणीत अंजन घालणाऱ्या कविता यामुळे रसिक शेवटपर्यंत मुग्ध होते.

संकल्पना मिलींद देशपांडे यांची होती. कार्यक्रम खुलणारे संचालन सुनंदा पाटील वैद्य यांचे होते. उज्वला अंधारे, भास्कर पांडे, देवीदास इंदापवार, आनंद शेष, डॉ. वर्षा झाडे,

विष्णू मनोहरल या कवींनी हा कार्यक्रम यशस्वी केली. श्री. गणेश नायडू यांनी आभार व्यक्त केले.

१२ मे २००७ :- विभागीय केंद्र, नागपूरच्यावतीने श्री. नरेंद्र लांजेवार संपादीत 'शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या: चिंतन आणि उपाय' या पुस्तकाचे प्रकाशन ज्येष्ठ पत्रकार श्री. चंद्रकांत वानखडे यांच्या हस्ते करण्यात आले.

देशातील अनेक मान्यवर तज्ज्ञांचे लेख समाविष्ट असलेल्या या पुस्तकाच्या प्रकाशन प्रसंगी माकपचे सरचिटणीस कॉ. अशोक ढवळे, शेतकरी संघटनेचे नेते श्री. विजय जावंघिया विशेष अतिथी म्हणून तर श्री. गिरीश गांधी अध्यक्ष म्हणून उपस्थित होते.

अर्थ - शास्त्र तज्ज्ञ डॉ. श्रीनिवास खांदेवाले व अनेक मान्यवर याप्रसंगी उपस्थित होते.

डॉ. प्रमोद मुनघाटे यांनी संचालन केले तर गणेश नायडू यांनी आभारप्रदर्शन केले.

१४ मे २००७ :- यवतमाळ येथे होणाऱ्या चवथ्या राज्यस्तरीय मराठी बोली साहित्य संमेलनाच्या अध्यक्षपदी निवड झालेल्या ज्येष्ठ साहित्यिक, संशोधक आणि मराठी बोली चळवळीचे जनक डॉ. हरिश्चंद्र बोरकर यांचा विभागीय केंद्राच्यावतीने सत्कार करण्यात आला.

अध्यक्षस्थानी श्री. गिरीश गांधी होते. डॉ. राजन जयस्वाल, डॉ. रविंद्र शोभणे आणि प्रा. ईश्वर नंदापुरे यांनी मनोगत व्यक्त केले.

डॉ. बोरकर यांनी बोली भाषा बोलणारेच मराठी भाषा



टिकवून ठेवतील. बोली भाषांचे महत्त्व जाणूनच त्यांना एकत्र आणून मराठी भाषेला बळ देण्याचे प्रयत्न करित असल्याचे प्रतिपादन केले.

प्रास्ताविक सुभाष चांदूरकर यांनी केले. राजेंद्र बोकाडे यांनी संचालन केले तर डॉ. चंद्रभान भोयर यांनी आभारप्रदर्शन केले.

२२ मे २००७ :- ज्येष्ठ स्वातंत्र्य - संग्राम सेनानी व गांधीवादी नेते आदरणीय नेते रा. कृ. पाटील यांना महाराष्ट्र शासनाचा सर्वोच्च 'महाराष्ट्र भूषण' पुरस्कार जाहीर झाला यासाठी यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानच्या वतीने श्री. गिरीश गांधी यांनी त्यांच्या निवासस्थानी जाऊन त्यांचा सत्कार केला. याप्रसंगी सर्व पदाधिकारी उपस्थित होते.

राष्ट्रभाषा सभा व राष्ट्रवादी अकॅडेमी फॉर स्पोर्ट्स, कल्चर अँड एज्युकेशन यांच्या संयुक्त विद्यमाने 'आंतरक्रिया कार्यशाळेचे' आयोजन करण्यात आले होते.

प्रमुख पाहुणे म्हणून इंडियन मेडिकल असोसिएशनचे अध्यक्ष डॉ. शर्मा, डॉ. देवाशिष नाहा, श्री काशीप्रसाद चौरसिया, श्री. गणेश गांधी उपस्थित होते.

याप्रसंगी आशिष विद्यार्थी म्हणाले की कलावंताने आपलं अभिनय कौशल्य पणाला लावून प्रेक्षकांना आपल्यासोबत नेले पाहिजे. यासाठी अभिनयात समयसूचकता, थांबे आणि आवाजातील चढउतार हे महत्त्वाचे घटक आहेत. प्रश्नोत्तरे, अभिनय, हास्य - विनोद याद्वारे त्यांनी बहुसंख्येने उपस्थित रंगकर्मी, अभ्यासक, रसिक यांना अभिनयाचे बारकावे सांगितले.

३० जून २००७ :- रंगभूमीकडे केवळ 'रंगभूमी' म्हणून पाहण्यात

यावे. त्याची बाल, हौशी, व्यवसायिक, समांतर अशा विविध गट त विभागणी करू नये अशी मार्मिक प्रतिक्रिया प्रसिद्ध नाट्य - चित्रपट कलावंत पद्मश्री डॉ. मोहन आगाशे यांनी प्रकट मुलाखतीदरम्यान व्यक्त केली.

अ. भा. मराठी नाट्य परिषद, नागपूर शाखा, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, नागपूर आणि राष्ट्रवादी अकादमी फॉर स्पोर्ट्स, कल्चर अँड एज्युकेशन यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित प्रकट मुलाखतीत ते बोलत होते.

श्री. प्रकाश एदलाबादकर यांनी घेतलेल्या या मुलाखतीचा आनंद श्रेष्ठ नाटककार श्री. महेश एलकुचवार यांचेसह अनेक नाट्य रसिकांनी व श्री. गिरीश गांधी, नगरसेविका सौ. प्रतिभा पाटील व अनेक मान्यवरांनी घेतला.

आभार प्रदर्शन डॉ. अनिल लब्ध ड यांनी केले. प्रास्ताविक गणेश नायडू यांनी केले. श्री. विजय जिचकार, डॉ. चंद्रभान भोयर कार्यक्रमाला उपस्थित होते.

१ जुलै २००७ :- शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या रोखण्यासाठी समाज व्रतस्थ नाही असे प्रतिपादन श्री. गिरीश गांधी यांनी केले.

ऑंकार एज्युकेशनल फाऊंडेशन यांच्यावतीने आयोजित कर्मचारी महर्षी मा. श्री. म. वा. ऑंकार लिखित 'विदर्भातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येची कारणे व दीर्घकालीन उपाय' या पुस्तकाच्या प्रकाशन समारंभात ते बोलत होते.

विशेष अतिथी दै. तरुण भारतचे संपादक श्री. सुधीर पाठक म्हणाले, 'पुस्तकात शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या संदर्भातील दाहकता सांगताना ऑंकार यांनी विषयाला भावनेच्या दिशेने नेले नाही ही जमेची बाजू आहे.'



कार्यक्रमाचे अध्यक्ष पंजाबराव देशमुख कृषी विद्यापीठाचे माजी प्राध्यापक डॉ. वसंतराव कुबडे यांनी पुस्तकातील विविध पैलू सांगितले.

संचालन डॉ. चंद्रमान भोयर यांनी केले तर आभारप्रदर्शन डॉ. दिलीप ओंकार यांनी केले.

रविवार ८ जुलै २००७ :- डॉ. वि.भि. कोलते जन्मशताब्दी निमित्त वनराई संयुक्त विद्यमाने 'पावसाच्या सरी कवितेच्या दारी' हा मराठी - हिंदी कविताचा कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला.

डॉ. अक्षयकुमार काळे यांनी प्रास्ताविक केले. विशेष अतिथी ज्येष्ठ कवयित्री व समीक्षक डॉ. कविता शनवारे आणि डॉ. श्रीपाद भालचंद्र जोशी यांनी हिन्दी व मराठी कवींना मार्गदर्शन केले.

२० जुलै २००७ :- आर. एस. रुईकर इन्स्टिट्यूट ऑफ लेबर सोशियो - कल्चरल स्टडीज, नागपूर यांच्या संयुक्त विद्यमाने 'गजानन माधव मुक्तिबोध आणि समकालीनता' या विषयावर मराठीचे अग्रगण्य कवी आणि हिंदी साहित्याचे ख्यातकीर्त समीक्षक प्रा. चंद्रकांत पाटील यांचे व्याख्यान दैनिक भास्करचे संपादक श्री. प्रकाश दुबे यांच्या अध्यक्षतेखाली आयोजित केले.

३१ जुलै २००७ :- मराठी बोली साहित्य संध्याच्या संयुक्त विद्यमाने 'चारोळी संमेलन' आयोजित करण्यात आले.

या संमेलनात डॉ. हरिश्चंद्र बोरकर, प्रा. ज्ञानेश वाकुडकर यांनीही आपले विचार मांडले.

प्रास्ताविक श्री. सुभाष चांदुरकर यांनी केले तर आभारप्रदर्शन सौ. विजया मारोतकर यांनी केले. संचालन सुरेश

खेडकर यांनी केले.

१२ ऑगस्ट २००७ :- उत्तम वक्ते, सशक्त लेखक, मराठीचे गाढे अभ्यासक व राजकारणपटू असा लौकिक प्राप्त झालेले श्री. त्रिंबक गोपाळ देशमुख उर्फ 'टी. जी.' यांचा ८५ व्या वाढदिवसानिमित्त सत्कार करण्यात आला. हेच औचित्य साधून त्यांच्या 'फुलारी' या पुस्तकाचे प्रकाशनही करण्यात आले. प्रमुख अतिथी दत्ताजी मेघे. तर विशेष अतिथी प्रा. सुरेश द्वादशीवर यांची भाषणे झाली. प्रास्ताविक श्री. गिरीश गांधी यांनी केले. आभारप्रदर्शन सौ. शैल जैमिनी यांनी केले. संचालन श्री. विजय जिचकार यांनी केले.

५ सप्टेंबर २००७ :- महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, नागपूरच्या संयुक्त विद्यमाने कनिष्ठ महाविद्यालयीन विद्यार्थी आणि ९ वी व १०वीचे विद्यार्थी यांचेसाठी 'शिक्षक कसा असावा' या विषयावर हिन्दी - मराठी भाषेत निबंध स्पर्धा व वक्तृत्व स्पर्धा आयोजित करण्यात आल्या. या चारही स्पर्धांसाठी प्रत्येकी जवळपास ८० - ८० स्पर्धकांनी भाग घेतला.

वक्तृत्व स्पर्धेसाठी प्राथमिक स्पर्धा घेऊन अंतिम स्पर्धेसाठी मराठी व हिंदी भाषांसाठी प्रत्येकी १०-१० स्पर्धक निवडले गेले. शालेय गटातील निबंध स्पर्धेत - हिंदी भाषेसाठी कु. खुशबु शुक्ला - प्रथम, कु. मेघा मिलिंद खामगावकर - द्वितीय, प्रियंका दिनकरराव काळे - तृतीय, कु. नेहा सुनील गुप्ता - उत्तोजनार्थ, अतिंक्य नारायण जोशी - उत्तोजनार्थ व महाविद्यालयीन गटात शार्दुल शांतिदास लुंगे - प्रथम, कु. प्रांजली पुरुषोत्तम खोडे - द्वितीय, कु. समीक्षा सुधाकरराव तरवटकर - तृतीय कु. कृतिका बबनराव लाडे - उत्तोजनार्थ, कु. नेहा नरेश



धर्मिजवार - उत्तजेनार्थ अशी पारितोषिके व प्रशस्तीपत्रे देण्यात आली.

महाविद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धेत रवी शुक्ला - प्रथम, श्रुतिका आंभोरे - द्वितीय नेहा धर्मिजवार - तृतीय, ग्लेश अँथोनी - उत्तजेनार्थ, पांडुरंग आलुरकर - उत्तजेनार्थ व शालेय गटात यशश्री कुळकर्णी - प्रथम, सोनिया तायडे - द्वितीय, मेघा खांमगावकर - तृतीय, कु. अंजुम खान - उत्तजेनार्थ, रुचिका मेश्राम - उत्तजेनार्थ अशी पारितोषिके व प्रशस्ती पत्र देण्यात आली. एकूण तीन हजार चारशे रुपयांची रोख पारितोषिके मा. प्रा. डॉ. सोहनलाल सोमानी आणि हिंदीची प्रथितयश कवयित्री डॉ. सौ. सुधा काशीव यांच्या हस्ते देण्यात आली.

'संतती नियमनावरील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा दृष्टीकोन आणि त्याची आधुनिक भारताताली आवश्यकता' या विषयावरील शोध प्रबंधासाठी राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापीठाची 'आचार्य' पदवी आमदार श्री. नितीन राऊत यांना मिळाली यासाठी त्यांचा सत्कार खासदार श्री. दत्ताजी मेघे यांच्या हस्ते आणि प्रा. सुरेश द्वादशीवार यांच्या अध्यक्षतेखाली, प्रा. व कवी श्री. वामन निंबाळकर व श्री. गिरीश गांधी यांच्या विशेष उपस्थितीत करण्यात आला.

१ ऑक्टोबर व २ ऑक्टोबर २००७ :- राजहंस प्रकाशन, नागपूर यांच्या संयुक्त विद्यमाने राष्ट्रपती महात्मा गांधी जयंतीनिमित्त 'भारताची फाळणी' आणि 'महात्मा गांधी: एक पुनर्मांडणी' या विषयावरील ज्येष्ठ पत्रकार व विचारवंत प्रा. सुरेश द्वादशीवार यांची द्विदिवसयीय व्याख्यानमाला

आयोजित केली. अध्यक्षस्थानी श्री. गिरीश गांधी होते.

प्रास्ताविक डॉ. अक्षयकुमार काळे यांनी केले. आभारप्रदर्शन राजहंस प्रकाशनचे श्री. नरेश सबजीवाले यांनी केले. सौ. शुभदा फडणवीस यांनी संचालन केले.

या वैचारिक व्याख्यानमालेला न्यायमूर्ती चंद्रशेखर धर्माधिकारी, माजी कुलगुरू डॉ. मधुसुदन चान्सरकर, गांधी विचारक असित सिन्हा, डॉ. श्रीपाद भालचंद्र जोशी, डॉ. सुनिती देव प्रभूर्तीसह अनेक मान्यवर उपस्थित होते.

महिला व्यासपीठ

१२ ऑगस्ट २००७ :- क्रांतीदिनानिमित्त 'स्वातंत्र्याच्या चळवळीतील क्रांतीकारी महिला' या विषयावर परिसंवाद आयोजित केला होता. श्रद्धेय कस्तुरबा गांधी यांचेबद्दल ज्येष्ठ पत्रकार मा. श्री. उमेश चौबे, श्रद्धेय अरुणा आसफ अली यांचेबद्दल मा. वि. स. जोग, मॅडम भिकाजी कामा यांचेबद्दल डॉ. कुसुम पटोरिया आणि श्रद्धेय प्रमिलाताई ओक यांचेविषयी डॉ. अनंत अडावदकर यांनी विचार मांडले.

अध्यक्षस्थानी स्वातंत्र्यसेनानी व ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्या श्रीमती लिलाताई चितळे होत्या.

कार्यक्रमाचे संचालन सौ. रेखा घिया - दंडिगे यांनी केले. कार्यक्रमात श्री. विजय जिचकार, शैल जैमिनी, मनिषा साधू, ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्या सीमा साखरे, ज्येष्ठ पत्रकार श्रीकृष्ण चांडक, मामा हरकरे, हिरामण लांजे इत्यादी उपस्थित होते.



विभागीय केंद्र औरंगाबाद

★ कार्यवृत्त ★

व्हिजन करीअर फेअर-०७ हे शैक्षणिक प्रदर्शन दि. २८, २९, ३० मे ०७ रोजी औरंगाबाद येथील तापडिया नाट्य मंदिर येथे उत्साहात संपन्न झाले. या प्रदर्शनात ३८ शैक्षणिक संस्थांनी सहभाग घेतला होता. तसेच या तीनही दिवसात सुमारे पंधरा हजारच्या वर विद्यार्थी व पालकांनी व्हिजन करीअर फेअर प्रदर्शनाला भेट दिली.

या प्रदर्शनाचे उद्घाटन दि. २८ मे ०७ सोमवार रोजी महाराष्ट्र मनुष्यबळ व नगरविकास राज्यमंत्री मा. ना. राजेशजी टोपे यांच्या हस्ते झाले यावेळी कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई विभागीय केंद्र औरंगाबादाचे सल्लागार मा. मधुकर अण्णा मुळे होते. तर प्रमुख पाहुणे म्हणून प्रसिद्ध अभिनेते मा. डॉ. गिरीश ओक तर मा. बापुसाहेब काळदाते (सल्लागार, यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई विभागीय केंद्र औरंगाबाद) व मा. दत्ता बाळसराफ (संयोजक, नवमहाराष्ट्र युवा अभियान) उपस्थित होते.

प्रदर्शनाचे उद्घाटन झाल्यानंतर मुख्य नाट्यगृहात नवमहाराष्ट्र अभ्युदय कलापथकाने महात्मा फुले यांचे स्मृती गायन करून कार्यक्रमाची सुरुवात केली. आदरणीय

यशवंतराव चव्हाण यांच्या प्रतिमेस पुष्प अर्पण करून व फलकावरती मान्यवरांच्या हस्ते युवक युवतींकरिता प्रेरणादायी असा संदेश लिहून कार्यक्रमाचे औपचारिक उद्घाटन करण्यात आले. यावेळी प्रतिष्ठानच्या विभागीय केंद्राचे अध्यक्ष मा. नंदकिशोर कामलीवाल यांनी कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक केले व नवमहाराष्ट्र युवा अभियानाचे विभागीय समन्वयक विजय कान्हेकर व विभागीय सहसंघटक तसेच या प्रदर्शनाचे मुख्य समन्वयक निलेश राऊत यांनी आयोजना मागची भूमिका मांडली. कार्यक्रमाचे प्रमुख पाहुणे प्रसिद्ध अभिनेते डॉ. गिरीश ओक यांनी करीअरच्या व भविष्य निवडीच्या संदर्भाने उपस्थित विद्यार्थी-विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन केले. यावेळी व्यासपीठावर प्रतिष्ठानच्या विभागीय केंद्राचे कोषाध्यक्ष मा. सचिन मुळे, तसेच मा. अंजली काटे, सुहास तेंडुलकर यांची उपस्थिती होती. कार्यक्रमाचे सुत्रसंचालन प्रा. बालाजी फड यांनी केले, तर आभार प्रतिष्ठानच्या विभागीय केंद्राचे सचिव मा. मुकुंद भोगले यांनी मानले. कार्यक्रमाची सांगता राष्ट्रगीताने झाली. या कार्यक्रमाला ५०० वर विद्यार्थी - पालक व नागरिकांची उपस्थिती होती.



प्रदर्शनाच्या तीनही दिवसांच्या कालावधीत शैक्षणिक व्याख्यानमालेचे आयोजन करण्यात आलेले होते. पहिल्या दिवशी सायंकाळी पोलीस उपअधिक्षक मा. डॉ. संदीप भाजीभाकरे यांचे एम. पी. एस. सी., यु. पी. एस. सी. परीक्षांची तयारी या विषयावरती व्याख्यान आयोजित करण्यात आले होते. त्याच दिवशी सायंकाळी औरंगाबाद येथील यश अॅकॅडमी फॉर इंग्लीशचे संचालक मा. सचिन तायडे यांचे 'इंग्जीची भिती कशी टाळावी?' या विषयावरील व्याख्यान संपन्न झाले. त्यानंतर सायंकाळी मा. प्रा. सुनील चव्हाण (कुंदनानी फार्मसी कॉलेज, ठाणे) यांचे फार्मसी क्षेत्रातील करिअरच्या संधी या विषयावरील व्याख्यान आले.

सदर प्रदर्शन तीन ही दिवस सकाळी १० ते रात्री १० या वेळेत भेटीसाठी खुले होते. पहिल्यादिवशी सुमारे साडेतीन हजार विद्यार्थ्यांनी प्रदर्शनाला भेट दिली. प्रदर्शनाच्या दुसऱ्या दिवशी व्हिजन व्याख्यानमालेचे चौथे पुष्प अंतरराष्ट्रीय कृषीतज्ञ मा. फिरोझ मसानी यांनी 'कृषी क्षेत्रातील करिअरच्या आधुनिक संधी' या विषयावरती गुंफले. व्याख्यानमालेतील पाचवे व्याख्यान मा. जे. के. जाधव (माजी उद्योग संचालक) यांचे 'खावलंबी व्हा, श्रीमंत व्हा' या विषयावरती संपन्न झाले. दुसऱ्या दिवशीचे शेवटचे व्याख्यान डॉ. बा. आ. म. विद्यापीठातील जनसंवाद

व वृत्तपत्र विभागाचे प्रमुख मा. डॉ. सुधीर गव्हाणे यांचे "प्रिंट मिडीया, इलेक्ट्रॉनिक मिडीया" या विषयावरती संपन्न झाले. दुसऱ्या दिवशी सुमारे चाराहजार विद्यार्थी व पालकांनी प्रदर्शनाला भेटी दिल्या. संध्याकाळच्या व्हिजन व्याख्यानमालेत मा. राहुल बोधनकर यांचे "हॉस्पिटॅलीटी व हॉटेल मॅनेजमेंट" या विषयावरती व्याख्यान संपन्न झाले. सायंकाळी अॅनिमास्टर संस्थेचे संचालक मा. अविनाश छडिदार यांचे "अॅनिमेशन - करिअरची एक नवी वाट" या विषयावरील व्याख्यान संपन्न झाले. या नंतर मा. डॉ. आर. आर. शिंदे विभाग प्रमुख प्रिन्व्हेटीव्ह अॅण्ड सोशल मेडिसीन, के. ई. म. हॉस्पिटल, मुंबई यांचे "वैद्यकीय क्षेत्रातील करिअरच्या संधी" या विषयावरील व्याख्यान संपन्न झाले. व्याख्यानमालेतील शेवटचे पुष्प मा. आर. सी. जोशी संचालक (व्हिजन कोटा) यांनी दहावी नंतर करिअर कसे निवडावे? या विषयावरती गुंफले. प्रदर्शनाच्या शेवटच्या दिवशी साडेसात हजार विद्यार्थी व पालकांनी भेट दिली. तत्पूर्वी नवमहाराष्ट्र युवा अभियानाच्या सर्व साठ कार्यकर्त्यांनी प्रत्येक स्टॉलधारकांचा स्मृतीचिन्ह, झाडाचे रोप व पुस्तक देऊन सत्कार केला. या प्रदर्शनाचे माध्यम प्रायोजकत्व झी- २४ तास वृत्त वाहिनी, दै. लोकमत, एम. सी. एन. स्थानिक वाहिनी यांनी स्वीकारलेले होते.



★ बी. रघुनाथ काव्यसंध्या ★

नाथ उद्योगसमुहाच्या सहकार्याने प्रतिष्ठानच्या औरंगाबाद विभागीय कार्यालयाने मराठवाड्यातील ज्येष्ठ कवी (कै.) बी. रघुनाथ यांच्या स्मृतिदिन बी. रघुनाथ काव्यसंध्येचे आयोजन केले. "बी. रघुनाथ यांनी निजामी राजवटीत अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितीतही मराठी भाषेत कविता, कथा, नाटके लिहून साहित्यात मोलाची भर घातली. दुर्दैवाने त्यांचे अकाली निधन झाले. परंतु अल्पकाळात आपल्या दर्जेदार साहित्याने मराठी भाषेची सेवा केलेल्या बी. रघुनाथांचे योगदान मोलाचेच आहे. त्यांची स्मृती काव्यसंध्येच्या रूपाने जागविली जात असून त्याद्वारे नव्या पिढीस बी. रघुनाथ यांच्या कार्याची ओळख करून देण्याचा नाथ उद्योगसमुह आणि यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान औरंगाबाद विभागीय केंद्राच्या या उपक्रमाचेही सांस्कृतिक संदर्भाचे आगळे मोल आहे!" अशा शब्दात काव्यसंध्येचे प्रमुख पाहुणे ख्यातनाम ज्येष्ठ कवी श्री. श्रीनिवास दिगंबर इनामदार यांनी प्रतिष्ठानच्या कार्याचा गौरव केला. व्यासपीठावर विभागीय केंद्राचे अध्यक्ष नंदकिशोर कागलीवाल, विभागीय समन्वयक श्री. विजय कान्हेकर, कोषाध्यक्ष श्री. सचिन मुळे, उद्योगपती सतीश कागलीवाल हे उपस्थित होते.

याप्रसंगी श्री. विसुभाऊ बापट यांनी त्यांच्या 'कुटुंब रंगलय काव्यात' या काव्यसादरीकरणाच्या कार्यक्रमाने श्रोत्यांना मनमुराद हसविले. मराठी कविता कशी समृद्ध आहे. विविधांगी आहे हे सोदाहरण त्यांनी विषद केले. तापडिया रंगमंदिरात संपन्न झालेल्या या दिमाखदार कार्यक्रमासाठी काव्यरसिक श्रोत्यांनी एकच गर्दी केली होती. कार्यक्रमाचे

शैलीदार सूत्रसंचालन श्री. सुधीर सेवेकर यांनी केले. बी. रघुनाथ काव्यसंध्येच्या यशस्वीतेसाठी यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानचे सर्वश्री निलेश राऊत, सुबोध जाधव, लक्ष्मण अय्यर, आर्दीनी परिश्रम घेतले. कार्यक्रमास अनेक मान्यवरांची उपस्थिती होती.

युवा स्वातंत्र्योत्तर रॅली

दि. १४ ऑगस्टच्या मध्यरात्री प्रतिष्ठानच्या विभागीय केंद्रातर्फे युवा स्वातंत्र्योत्तर रॅली काढण्यात आली. त्यात सुमारे दोनशे युवक - युवतींचा उत्साहपूर्ण सहभाग, औरंगाबादकरांचे लक्ष वेधून गेला. शहराच्या क्रांतीचौक भागातून निघालेली ही रॅली भारतीय स्वातंत्र्याचा जयजयकार करीत पैठण गेट येथे पोहचली. तिथे शहरातील ज्येष्ठ स्वातंत्र्यसैनिकांचा सत्कार करण्यात आला. भारतीय संविधानाचे जाहीर वाचनही याप्रसंगी केले गेले. युवा स्वातंत्र्योत्तर रॅलीच्या यशस्वी आयोजनात सर्वश्री निलेश राऊत, सुबोध जाधव, विजय कान्हेकर, सुहास तेंडूलकर आणि कोषाध्यक्ष सचिन भय्या मुळे यांचा मोलाचा सहभाग होता. शहरातील युवावर्गामध्ये आणि आम नागरिकांमध्ये स्वातंत्र्यदिनाच्या निमित्ताने एक चेतना निर्माण करण्याचे मोलाचे कार्य या रॅलीतून घडून आले. तसेच विविध महाविद्यालयांच्या शेंकडो युवक युवतीपर्यंत यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, नवमहाराष्ट्र युवा अभियान यांचेविषयी जागरूकता निर्माण झाली.



कृषी सहकार व्यासपीठ व विभागीय केंद्र पुणे

★ कार्यवृत्त ★

पुणे विभागीय केंद्राचे व कृषी सहकार व्यासपीठाचे कामकाज विश्वस्त निमंत्रक श्री. ज्ञानेश्वरबापू खैरे आणि श्री. अंकुश काकडे माजी महापौर पुणे यांच्या मार्गदर्शनाखाली चालते. या सर्व कार्यक्रमांना पद्मविभूषण मा. मोहन धारिया साहेब यांचे प्रमुख मार्गदर्शन मिळते. दैनंदिन कामकाजात श्री. शं. त्रि. भिडे, प्रा. प्र. त्र्यं. पंडित यांचा मोठा सहभाग असतो.

कृषी विभाग

१) दिल्ली येथील सिटाच्यावतीने श्री. भागवतराव पवार हे 'शरद कृषी' मासिकाचे संपादन करतात. त्यांनी प्रतिष्ठानच्या ऑफिसला भेट देऊन चाललेल्या कामाबाबत सविस्तर चर्चा केली.

२) अॅगोवन दैनिकाचे संपादक श्री. निशिकांत भालेराव यांची भेट घेऊन प्रतिष्ठानचे चालू असलेल्या कामाबाबत श्री. भिडे आणि प्रा. पंडित यांनी वेळोवेळी चर्चा केली.

३) शासनाचे साहाय्य शेतकऱ्यांना मिळणेबाबत एक दिवसाचे चर्चासत्र घेण्यात आले. त्यातील मा. बापूसाहेब खैरे यांचे प्रमुख भाषणास बहुतेक सर्व वृत्तपत्रांनी विशेष प्रसिद्धी दिली.

४) कृषी सहकार व्यासपीठाच्या अभ्यास मंडळाच्या नियमित बैठका होतात त्यामध्ये श्री. ज्ञानेश्वरबापू खैरे यांच्या अध्यक्षतेखाली चर्चा होतात, त्यामध्ये श्री. भिडे आणि

प्रा. पंडित यांचा विशेष सहभाग असतो. पाणी प्रश्नावर काम करणाऱ्या 'गोमुख' आणि 'सोपे कॉम' या संस्थांचा सहभाग मोठ्या प्रमाणावर मिळतो. चिकोत्रा खोऱ्यातील समन्यायी पाणी परिषदेच्या सर्व कार्यशाळा व अन्य कार्यक्रमात प्रा. पंडित यांनी सहभाग घेतला.

५) स्वामीनाथन कृषी आयोगाने दिलेल्या अहवालावर अभ्यास मंडळात सविस्तर चर्चा करून अनेक शिफारसी माननीय अण्णासाहेब धारिया यांच्या सहीने पाठविल्या होत्या. त्या शिफारशींची नोंद घेतल्याचे आयोगाचे विशेष कार्यकारी अधिकारी यांनी प्रतिष्ठानाला कळविले आहे. त्यावर पाठपुरावा म्हणून मा. धारिया यांच्यावतीने वनराईत झालेल्या सर्व कार्यक्रमात प्रा. पंडित व श्री. भिडे उपस्थित राहिले व चर्चेत सहभाग घेतला.

६) शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या या विषयावर अभ्यास करणाऱ्या प्रबोधन मंचाच्या कृती गटाबरोबर सहकार्य साधून एक चर्चासत्र भरविण्यात आले होते. तसेच या विषयावर 'यशदा' ने केलेल्या संशोधन पुस्तिकेवर उपसरव्यवस्थापकांशी प्रा. पंडित यांनी चर्चा केली.

७) पुणे कृषी मंच (अॅग्रीकल्चर फोरम) यांच्या सहकार्याने विशेष आर्थिक क्षेत्राबाबत (सेझ) चर्चा करून एक निवेदन तयार केले. याच विषयावर एम. आय. टी. पुणे, तसेच अर्थबोध



या संस्थेने आयोजित केलेल्या परिसंवादात प्रा. पंडित आणि श्री. भिडे यांनी सहभाग घेतला.

८) पुणे जिल्हा सहकारी दुध उत्पादक संघ यांच्या ऑफीसमध्ये जाऊन दुध उत्पादन आणि विक्री याबाबत श्री. भिडे आणि प्रा. पंडित यांनी प्रश्न समजावून घेतले.

९) नवीन खोरे व्यवस्थापना संबंधी मा. माधवराव चितळे व संबंधीत नियंत्रक प्राधिकरणाचे प्रमुख मा. निंबाळकर यांचे नेतृत्वाखाली चर्चासत्रात श्री. भिडे व प्रा. पंडित यांनी सहभाग घेतला. यापैकी एका सत्राचे निवेदक म्हणून प्रा. पंडित यांनी काम केले.

१०) बाजार समिती अधिनियमातील सुधारणांसंबंधीचे चर्चासत्रात श्री. भिडे व प्रा. पंडित यांनी विषय मांडणी केली.

११) भूमाता कृषीमंच व व्यासपीठ यांच्या संयुक्त विद्यमाने केंद्राच्या कृषी योजनावर चर्चासत्र घेण्यात आले. त्यात डॉ. बुधाजीराव मुळिक यांनी प्रमुख मार्गदर्शन केले. मा. बापुसाहेब खैरे यांनी समयोचीत समारोप केला. प्रा. पंडित व श्री. भिडे यांचा सहभाग होता.

सहकार विभाग

१) व्यासपीठातर्फे तज्ञांचे अभ्यासमंडळ, दरमहा भरवण्यात येते. यांचे काम श्री. ज्ञानेश्वर बापू खैरे यांच्या अध्यक्षतेखाली चालते. याचे आयोजन श्री. भिडे व प्रा. पंडित करतात. चर्चेत श्री. रथ साहेब, श्री. कोरान्ने साहेब, डॉ. कामत, प्रा. नाडकर्णी, डॉ. घाणेकर व इतर तज्ज्ञ मंडळी चर्चेत भाग घेतात. काही चर्चासत्रात भारत सरकारमधील निवृत्त अधिकारी डॉ. पद्माकर

दुभाषी साहेब हे हजर असतात.

२) भारत सरकारने सहकार विषयक आणलेल्या घटना दुरुस्ती बिलावर अभ्यास करण्यासाठी राष्ट्रीय साखर कारखाना फेडरेशनचे अध्यक्ष, माजी मंत्री श्री. शिवाजीराव गिरधर पाटील यांच्या अध्यक्षतेखाली केंद्र शासनाने एक सहकार विषयक उच्चाधिकार समिती नेमली आहे. मा. शिवाजीराव पाटील यांनी व्यासपीठाच्या अभ्यास मंडळ सदस्यांच्या बरोबर बसून तीन तास सखोल चर्चा केली आणि व्यासपीठाच्या सूचनांची नोंद घेतली.

३) मध्यंतरी सर्वोच्च न्यायालयाने हाऊसिंग सोसायटीचा संबंधात क्रांतीकारक निर्णय दिला आहे. या निर्णयामुळे समाजात दुफळी माजेल व हा निर्णय राज्याच्या निर्देशीत धोरणाचे विरुद्ध आहे. या ज्वलंत विषयावर अभ्यास मंडळात सविस्तर चर्चा झाली आणि त्याप्रमाणे व्यासपीठामार्फत ना. सहकार मंत्री, मा. सहकार आयुक्त, ना. शरदराव पवार सहकार मंत्री, केंद्र सरकार यांच्याशी पत्रव्यवहार केला आहे.

४) महाराष्ट्र राज्य सहकारी संघाने आयोजित केलेल्या धनंजयराव गाडगीळ स्मृती कार्यक्रमात श्री. भिडे व प्रा. पंडित यांनी सक्रिय सहभाग घेतला.

५) कृषी पतपुरवठा या विषयात केंद्र सरकारने नेमलेल्या वैद्यनाथन कमिटीने सहकारी चळवळीवर विशेषतः बँकाच्या कार्यवाहीवर लांब मुदतीचे दुष्परिणाम होतील अशा शिफारसी केल्या आहेत.

६) श्री. भिडे व प्रा. पंडित सहकार विषयावर लेखनही



करतात. या कालावधीत कै. ध. रा. गाडगीळ संस्थेचे 'संघशक्ती' वार्षिक राज्यसंघाचे हे 'को-ऑपरेटीव्ह कॉर्टरली' विदर्भ सहकारी मंडळाचे 'सहकारी विदर्भ' आदींमध्ये दोघांचे मिळून सुमारे १० लेख प्रसिद्ध झाले आहेत.

७) भारतीय सहकारीता अनुसंधान संस्थेच्या (आय. एस. एस. सी.) वार्षिक अधिवेशनात प्रमुख वक्ते मिळवणे, कार्यक्रम संयोजन यात प्रा. पंडित यांनी विशेष सहाय्य केले. तसेच श्री. भिडे व प्रा. पंडीत यांनी दोन विषयांवर निबंध वाचन केले.

८) मानवाधिकार आयोगाच्या धर्तीवर सहकारी संस्थाधिकार आयोगाचे आवश्यकतेसंबंधी व्यासपीठाच्या वतीने चर्चासत्र घेण्यात आले. मा. बापूसाहेब खैरे अध्यक्षस्थानी होते. त्यात श्री. भिडे यांनी प्रास्ताविक केले. प्रा. पंडीत यांनी समारोप केला.

९) चिकोत्रा खोऱ्यात स्थापन करावयाच्या पाणलोट विकास व पाणी वापर संस्थांच्या संघाचे पोटनियम व्यासपीठाच्यावतीने तयार करून देण्यात आले. त्यासाठी श्री. लोखंडे व देशपांडे या निवृत्त अधिकाऱ्यांचे व प्रारूपावर संस्कार करणेसाठी निवृत्त इंजिनियर श्री. लेले, निवृत्त तज्ज्ञ श्री. आर. के. पाटील, श्री. भिडे व प्रा. पंडित यांच्या चार बैठका घेण्यात आल्या.

१०) सहकार भारतीच्या पतसंस्थेचे या कालावधीत तीन अभ्यासवर्ग घेण्यात आले. त्यात प्रा. पंडित यांनी सहभाग घेतला.

११) मायक्रो फायनान्शियल सेक्टर (डेव्ह. अँड रजि.)

बील विषयक मिटींग दि. २५ ऑगस्ट ०७ रोजी घेण्यात आली. त्यावरील अभिप्राय जरूर त्या कार्यवाहीसाठी केंद्र शासनास मा. बापूसाहेब खैरे व मा. श्री. मोहन धारिया यांचे सहीने पाठविण्यात आले.

माहितीचा अधिकार

१) भारत सरकारने माहितीचा अधिकार कायदा मंजूर केला आहे. त्याचा जनमानसात मोठ्या प्रमाणावर प्रसार व प्रशिक्षण होणे जरूर आहे, याचा विचार करून एक पुस्तिका प्रसिद्ध केली आहे. प्रबोधनाचे कार्य शासनाच्या 'यशदा' या संस्थेमार्फत चालते. सहकार्यांने काम करण्यासाठी प्रतिष्ठानने 'यशदा' बरोबर एक सामंजस्य करार केला आहे. यशदाबरोबर सतत सहकार्य करण्यात येते. राज्याचे माहिती आयुक्त श्री. सुरेश जोशी यांनी आयोजित केलेल्या बैठकीला प्रतिष्ठान तर्फे श्री. भिडे हजर होते.

२) सजग नागरिक मंच संस्थेच्या दरमहा पहिल्या रविवारी होणाऱ्या सभेत प्रा. प्रभाकर पंडित यांनी उपस्थित राहून प्रतिष्ठानमधील माहितीच्या अधिकार कामाची माहिती दिली.

३) याशिवाय या कालावधीत या विषयावर श्री. भिडे व प्रा. पंडित यांनी मिळून माहिती अधिकारावर दहा व्याख्याने दिली.

४) सुराज्य संघर्ष समितीच्यावतीने झालेल्या मा. श्री. विजय कुवळेकर विभागीय माहिती आयुक्त यांच्या व्याख्यानास प्रा. पंडित उपस्थित राहिले.



५) महिला आर्थिक विकास महामंडळाच्या संयोगिनींसाठी वनराईच्या सहयोगाने चर्चासत्र आयोजित करण्यात आले. श्री. भिडे व पंडीत यांनी मार्गदर्शन केले. मा. मोहन धारीया अध्यक्षस्थानी होते.

महिला व्यासपीठ

१) महिला अत्याचार या विषयावर भारत सरकारने एक कायदा केला आहे. महिला वर्गात याचा विशेष प्रचार होण्याच्या दृष्टीने श्री. भिडे यांनी एक पुस्तिका तयार केली असून त्याच्या प्रकाशनाचे काम श्रीमती शैला लिमये पहातात.

२) सुहासिनी करंडक स्पर्धा प्रतिवर्षीप्रमाणे घेण्यात आली. त्यास प्रतिष्ठानाने सहकार्य केले.

पुणे विभागीय केंद्र

१) या केंद्राचे काम श्री. ज्ञानेश्वरबापू खैरे, माजी महापौर अंकुश काकडे आणि माजी महापौर शांतीलाल सुरतवाला हे पहातात.

२) छोटा गंधर्व संगीत समारोह व मा. भालचंद्र पेंढारकर पुरस्कार हा महत्वाचा कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला.

३) 'स्वप्ने यशवंतरावांची' हा विशेष कार्यक्रम मा. अंकुशराव काकडे व मा. शांतीलाल सुरतवाला यांनी आयोजित केला. चर्चासत्रात डॉ. शां. व. मुजुमदार, मा. राम प्रधान यांनी उद्बोधन केले.

४) पुणे येथील गाजलेल्या 'रेव्ह पार्टी'च्या निमित्ताने एक व्यापक विचारमंथनाचा कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला. त्यात मा. ना. अजित पवार यांचे हस्ते तडफदार पोलीस अधिकारी श्री. विश्वास नांगरे पाटील

यांचा सत्कार करण्यात आला.

५) ज्येष्ठ चरित्र अभिनेत्री शांता तांबे यांची अमृत महोत्सवी वर्षात पदार्पण केल्याबद्दल सौ. सुकन्या कुलकर्णी मोने यांनी प्रकट मुलाखत घेतली. त्यावेळी श्रीमती तांबे यांनी अनेक प्रसिद्ध नाटकातील बहारदार प्रवेश सादर केले.

६) प्रतिवर्षाप्रमाणे काही हजार वारकरींसाठी फराळाचा कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला. त्यावेळी मा. अंकुशराव काकडे, प्रा. पंडीत व महिला संयोजिका डॉ. शेवाळे हे उपस्थित होते.

७) खासदार सौ. सुप्रिया सुळे यांनी नागालँडमधील कलाकारांचा एक कार्यक्रम पुणे येथे आयोजित केला होता. त्यात पुणे केंद्रातर्फे श्री. अंकुश काकडे, श्री. शांतीलाल सुरतवाला व श्री. ज्ञानेश्वर बापू खैरे यांनी सक्रीय सहभाग घेऊन कार्यक्रम यशस्वी केला.

नव महाराष्ट्र युवा अभियान, पुणे

नव महाराष्ट्र युवा अभियान, पुणे यांचे काम श्री. भैय्यासाहेब खैरे, समन्वयक पुणे विभाग आणि श्री. विलास लोंढे संघटक हे पहातात. या विभागातर्फे सावित्रीबाई फुले जयंती, शिवणवर्ग प्रमाणपत्र वाटप व स्वयंरोजगार माहिती कार्यक्रम असे कार्यक्रम घेण्यात आले. तसेच खानापूर पुणे येथे दोन दिवसांचे युवतींचे शिबीर आयोजित करण्यात आले होते. तसेच खराडी, तालुका हवेली येथे बालदिन महोत्सव, धर्मनिरपेक्षता यावर एक कार्यशाळा पुणे येथे सद्ब्याद्री सभागृहात आयोजित केली होती. श्री. भैय्यासाहेब खैरे अध्यक्ष होतो. प्रा. पंडित उपस्थित होते.



(१६/०८/०७) बोपोडी - पुणे येथे भैय्यासाहेब खैरे यांचे अध्यक्षतेखाली महिला सक्षमीकरण कार्यक्रम घेण्यात आला. कोंढवा येथे युवकांसाठी उद्योजकता मेळावा भरविण्यात आला होता. भारती विद्यापीठ समाजकार्य विभाग यांच्यातर्फे 'माहिती अधिकार' चर्चासत्र आयोजित केले होते. त्यात श्री. भिडे आणि प्रा. पंडीत यांनी मार्गदर्शन केले.

मौजे दराडे तालुका पुरंदर येथे एन. एस. एस.च्या कॉलेज विद्यार्थ्यांच्या कॅम्पचे उद्घाटन पुणे विभागाचे समन्वयक श्री. भैय्यासाहेब खैरे यांच्याहस्ते झाले. मराठवाडा कॉलेज पुणे व पुना कॉलेज पुणे येथे मुल्यशिक्षण या विषयावर संघटक श्री. विलास लोंढे यांनी मार्गदर्शन केले.

अन्य संस्थांच्या कार्यक्रमात सहभाग

१) मराठा - चेंबरच्या वतीने केंद्रशासनाच्या मा. सचिवांच्या वतीने प्रक्रिया संस्थांच्या डिरेक्टरीचे प्रकाशनाचे तसेच अन्य कार्यक्रमास प्रा. प्रभाकर पंडीत उपस्थित राहिले व सहभाग घेतला. तसेच चेंबरच्या पारखे मान पारितोषिक कार्यक्रमात प्रतीवर्षीप्रमाणे सहभाग घेतला.

२) पुणे कृषीचर्चागट - या कृषीतज्ज्ञांच्या प्रत्येक महिन्यांच्या शेवटच्या गुरुवारी होणाऱ्या सभेत श्री. भिडे व प्रा. पंडीत यांनी उपस्थित राहून त्यात मुद्दे मांडले व उपस्थितांना शरदकृषी या सिटाच्या मासिकाचे अंक वितरीत केले.

३) चाणक्य मंडळ : यांच्या संकल्पदिनाच्या डॉ. नरेंद्र जाधव, कुलगुरु, पुणे विद्यापीठ यांचे प्रमुखत्वाखाली झालेल्या कार्यक्रमात प्रा. पंडीत सहभागी झाले.

४) किसान प्रदर्शन : यांच्या वतीने झालेल्या किसान बाजार परिषदेस प्रा. पंडीत उपस्थित राहिले.

५) इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजिनिअर्स - पाणीमंच (वॉटर फोरम) यांच्या साप्ताहिक सभात प्रा. पंडीत सहभागी होऊन मुद्दे मांडतात. त्यात या कालावधीत त्यांनी 'जैव इंधन (बायोडिझेल)' व 'पाणी बचतीवर पाण्याचे भवितव्य अवलंबून आहे' अशी स्वतंत्र व्याख्याने दिली. त्याचे वृत्तांत मासिक पत्रिकेत आले. तसेच पाणी विषयावरील त्यांचे एक व्याख्यान विजय वल्लभ स्कूलमध्येही झाले. त्यास प्राधान्यक्रमाने शालेय नियतकालिकात स्थान मिळाले.

६) लुपीन फाऊंडेशन - संस्थेच्या बचतगट सदस्यांच्या मेळाव्यात प्रमुख मार्गदर्शनपर भाषण अध्यक्ष पदावरून प्रा. पंडित यांनी दिले. याच कार्यक्रमात महिला व्यासपीठाच्या पुणे केंद्राच्या अध्यक्ष श्रीमती. शैला लिमये यांचेही व्याख्यान झाले.

७) सेंटर फॉर स्ट्रॅटेजिक स्टडीज - या संस्थेच्या सभा व व्याख्यानांना मुंबई मुख्यालयाचे सुचनेवरून प्रा. पंडित उपस्थित राहिले. त्यांच्या अहवालात तसा उल्लेख करण्यात आलेला आहे. तसेच या संस्थेच्यावतीने एअर मार्शल मेजर यांचे व्याख्यानासही प्रा. पंडित उपस्थित राहिले.

८) 'अफार्म' - वनराई या संस्थांबरोबर अनेक संयुक्त कार्यक्रमात श्री. भिडे व प्रा. पंडित यांनी सहभाग घेतला. 'वनराई' मधील जागतिक पर्यावरण दिनाच्या व इको क्लब कार्यक्रमास प्रा. पंडित उपस्थित राहिले.



९) 'लाईफ ट्रस्ट' या संस्थेच्या कार्यक्रमास श्री. भिडे व प्रा. पंडित उपस्थित राहिले. श्री. पंडित यांनी 'कामगार शेतकरी संयुक्त कृती' या विषयावर भाषण केले.

१०) महाराष्ट्र वृक्ष संवर्धिनी संस्थेच्या सर्व मासिक सभात प्रा. पंडित यांनी प्रास्ताविक, संचालन व समारोप केला.

११) श्री. अनिल शिंदेरे व त्यांच्या सहकाऱ्यांनी महाराष्ट्रात दुष्काळयात्रा काढली होती. त्यांचेबरोबर मा. बापूसाहेब खैरे, श्री. भिडे व प्रा. पंडित यांनी तीन वेळा सविस्तर चर्चा केली. तसेच प्रतिष्ठान मध्ये त्यासंबंधी कृषी - सहकार व्यासपीठाने एक चर्चासत्र घेतले.

१२) आरती संस्थेच्या प्रात्यक्षिक कार्यक्रमास प्रा. पंडित सहभागी झाले व त्यांनी अॅरडेन पारितोषिक विजेते डॉ. कर्वे व अन्य कार्यकर्त्यांशी ग्रामीण उपक्रमासंबंधी मा. बापूसाहेब यांच्या सूचनांनुसार उपयुक्त चर्चा केली.

१३) अहिल्याराणी महाराष्ट्र महिला बचतगट सूची प्रकाशन - मा. ना. उपमुख्यमंत्री आर. आर. पाटील, न्या. (निवृत्त) धर्माधिकारी व डॉ. गोवारीकर यांचे उपस्थितीतील कार्यक्रमास प्रा. पंडित उपस्थित राहिले. सूचिकर्त्यांनी मा. बापूसाहेब खैरे, श्री. भिडे व प्रा. पंडित यांचेशी चर्चा केली.

१४) हुजुरपागा - या संस्थेच्या नवीन इमारतीच्या उद्घाटनाच्या कार्यक्रमात मा. ना. मुख्यमंत्री व मा. ना. उपमुख्यमंत्री यांनी शैक्षणिक स्थिती बद्दल मार्गदर्शन केले. त्यावेळी प्रा. पंडित उपस्थित होते.

१५) महाराष्ट्र ज्ञान महामंडळाच्या माध्यमातून मा. डॉ. राम

ताकवले यांच्या मार्गदर्शनाखाली आभासी शिक्षणाच्या (व्हर्चुअल एज्युकेशन) अभिनव तंत्रज्ञानपर प्रयोगाबद्दलच्या अभ्याससत्रात प्रा. पंडित यांनी उपस्थित राहून सहभाग घेतला.

१६) सेंटर फॉर सोशल मार्केट्स दिल्ली व उष्ण प्रादेशिक मोसम विषयक संस्थेच्या 'लोक, ग्रह (पृथ्वी) यांच्या लाभासाठी पर्यावरण' या कार्यक्रमास प्रा. पंडित उपस्थित राहिले व आयोजकांशी चर्चा केली.

१७) मराठी विज्ञान परिषद - संस्थेच्या वतीने आयोजित श्रीमती सुनिता विल्यम्स यांचेसंबंधी 'दिनचर्या अवकाशयात्रींची' या उद्बोधक व्याख्यानास प्रा. पंडित उपस्थित राहिले.

१८) निसर्गसेवक - संस्थेच्या वार्षिक सर्वसाधारण सभेत अन्य मान्यवरांबरोबर प्रा. प्रभाकर पंडित यांचा सत्कार करण्यात आला.

१९) पुण्यभूषण पुरस्कार प्रदान - डॉ. श्रीराम लागू यांना श्री. गिरीष कर्नाड यांचे हस्ते देण्यात आला. मा. मोहन धारिया यांचे भाषण झाले. त्यांचे सूचनेवरून प्रा. पंडित या कार्यक्रमास उपस्थित होते.

२०) सोस्वा/स्पाटी संस्थेच्या प्रशिक्षण कार्यक्रमात 'माहितीचा अधिकार' विषयावर प्रा. भिडे व प्रा. पंडित यांनी या कालावधीत तीन वेळा व्याख्याने दिली.

२१) बाल विज्ञान चळवळीच्या या कालावधीत झालेल्या दहा कार्यक्रमात प्रा. पंडित यांनी सहभाग घेतला. आता नव्याने श्री. विजय भटकर या संस्थेचे अध्यक्ष झाले आहेत. वार्षिक सर्वसाधारण सभेत प्रा. पंडित यांनी सहभाग घेतला.



विभागीय केंद्र - कराड

✧ कार्यवृत्त ✧

१ स्व. यशवंतरावजी चव्हाण ९४ वी जयंती - दि. १२/०३/२००७

स्व. यशवंतराव चव्हाण यांची ९४ वी जयंती विविध उपक्रमाने मोठ्या उत्साहात साजरी करण्यात आली. १२ मार्च २००७ ला स्वर्गीय यशवंतरावजी चव्हाण साहेबांच्या भव्य प्रतिमेची चार चाकी चांदीने मढविलेल्या बगातून सवाद्य मिरवणूक सौ. वेणूताई चव्हाण स्मृतिसदनापासून 'विरंगुळा' बंगला मार्गे कराड शहरातील प्रमुख रस्त्यावरून प्रीतिसंगमावरील यशवंतरावजी चव्हाण साहेबांच्या समाधी स्थळापर्यंत नेण्यात आली. यावेळी सायन्स कॉलेजचे प्राचार्य मा. एस. ए. पाटील, सौ. वेणूताई चव्हाण कॉलेजचे प्राचार्य मा. बी. एन. कालेकर, श्री. शंकर आप्पा सौसुंदी सर्व प्राध्यापक, प्राध्यापिका, शिक्षक, शिक्षकेत्तर, कॉलेजचे कर्मचारी, विद्यार्थी, यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानचे व सौ. वेणूताई चव्हाण ट्रस्टचे सर्व मान्यवर, पदाधिकारी, कर्मचारी मिरवणूकीत सहभागी होते.

प्रीतिसंगमावरील समाधीस्थळी आदरणीय पी. डी. पाटील गौरव प्रतिष्ठानच्यावतीने सकाळी १२००० विद्यार्थी-विद्यार्थीनींनी शब्द सुराची भावपूर्ण श्रद्धाजंली वाहिली यावेळी 'यशवंत गौरव गीत' गाण्यात आले.

सौ. वेणूताई स्मृतिसदनातील सौ. वेणूताई चव्हाण व स्व. यशवंतरावजी चव्हाण यांच्या पुतळ्यास मा. आमदार

बाळासाहेब पाटील, नगराध्यक्षा सौ. सुषमाताई लोखंडे यांनी पुष्पहार अर्पण केले. 'विरंगुळा' बंगल्यातील साहेबांच्या प्रतिमेस मा. आमदार साहेबांनी पुष्पहार अर्पण करून आदरांजली वाहिली.

सायंकाळी दैनिक प्रीतिसंगम यांच्या संयुक्त विद्यमाने यशवंतराव चव्हाण यांच्या ९४ व्या जयंती निमित्त आदरणीय पी. डी. पाटील साहेब यांच्या अध्यक्षतेखाली प्रा. नितीन बानुगडे (पाटील) यांचे यशवंतरावजींच्या जीवनावर अत्यंत हृदयस्पर्शी व्याख्यान झाले. या कार्यक्रमासाठी उपनगराध्यक्ष मा. अल्ताफ शिकलगार, दैनिक प्रीतिसंगमचे संपादक श्री. शशिकांत पाटील, प्रा. प्रमोद सुकरे उपस्थित होते. मा. मुकुंदराव कुलकर्णी यांनी प्रास्ताविक केले. सर्व मान्यवरांचे स्वागत श्री. मोहनराव डकरे यांनी केले.

कराड शहरातील हुतात्मा स्मारक, सहकारी संस्था, बँका, महाविद्यालये यामध्येही जयंती सोहळा चांगल्या प्रकारे आयोजित केला होता.

२. शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर ग्रंथालय प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम वर्ग १५ एप्रिल २००७ ते १५ जुलै २००७ :

शिवाजी विद्यापीठ प्रौढ आणि निरंतर शिक्षण केंद्र कोल्हापूरच्या यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई, विभागीय केंद्र कराड संचलित 'ग्रंथालय व्यवस्थापन प्रमाणपत्र



अभ्यासक्रम' वर्गाचे उद्घाटन मा. विभागीय कार्यकारी सदस्य श्री. विलासराव पाटील (बापू), वाठारकर यांच्या शुभहस्ते १५ एप्रिल २००७ रोजी संपन्न झाले. अध्यक्षस्थानी प्रतिष्ठानचे विभागीय सचिव मा. श्री. मोहनराव कृष्णाजी डकरे होते.

प्रकल्प अधिकारी श्री. अनिल पाटील यांनी प्रास्ताविकामध्ये प्रतिष्ठानच्या विविध उपक्रमाची व ग्रंथालय अभ्यासक्रम वर्गाच्या कामकाजाची माहिती सांगितली.

ज्येष्ठ ग्रंथपाल पालेकर यांनी आपले मनोगत व्यक्त करताना आधुनिक काळात वाचकांची आणि ग्रंथाची वाढती संख्या, त्यांच्या बदलत्या गरजा, ज्ञान साहित्याचे विविध प्रकार व त्यांचे व्यवस्थापन करणारे ग्रंथपाल व त्यांची जबाबदारी इत्यादी माहिती सांगितली.

मा. श्री. विलासराव पाटील (बापू) वाठारकर यांनी आपल्या भाषणात मा. यशवंतराव चव्हाण साहेब उत्तम राजकर्त्यांपेक्षाही उत्तम साहित्यिक होते, अशा साहित्यिकाच्या स्मारकात साहित्याचा अभ्यास करण्याची संधी मिळाल्याने प्रवेश घेतलेल्या विद्यार्थ्यांचे अभिनंदन करून हा अभ्यासक्रम चांगल्या पद्धतीने पूर्ण करण्यासाठी सर्वांना शुभेच्छा दिल्या.

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानच्या माध्यमातून विविध शैक्षणिक उपक्रम राबवले जातात. याच मालिकेतील ९० दिवसाचा हा उपक्रम विद्यार्थ्यांनी उत्तम रितीने पार पाडावा, यासाठी प्रतिष्ठानने तज्ज्ञ अनुभवी प्राध्यापकाची नियुक्ती केलेली आहे. एकूण ३३ विद्यार्थ्यांनी या अभ्यासक्रमासाठी प्रवेश

घेतला.

३ . ग्रंथालय व्यवस्थापन वर्गाची सहल :

दि. २३ मे २००७ रोजी ग्रंथालय अभ्यास वर्गाची सहल कोल्हापूर या ठिकाणी गेली होती. यावेळी विद्यापीठ लायब्ररी. करवीरनगर वाचन मंदिर, मेहता बुक स्टॉल, कोल्हापूर इन्स्टिट्यूट टेक्नालॉजी इंजिनियरींग कॉलेज (के. टी. आय) इत्यादी ग्रंथालयाना अभ्यास भेट दिली.

करवीरनगर वाचन मंदिरला भेट दिली. या ग्रंथालयाच्या ग्रंथपाल वासंती लिमये यांनी ग्रंथालयाचा इतिहास, कामकाजाची माहिती दिली. १५ जून १८५० रोजी ग्रंथालयाची स्थापना झाली, ग्रंथालयात ८५००० ग्रंथ आहेत इतर योजना व कामकाजाची संपूर्ण माहिती विद्यार्थ्यांनी घेतली.

विद्यापीठ ग्रंथालयात २५४८२९ ग्रंथ ६५०० हस्तलिखिते, नियतकालीके इत्यादीची माहिती विद्यापीठाचे ग्रंथपाल मा. पी. बी. बिलावर यांनी दिली. विद्यार्थ्यांनी या ग्रंथालयाचे कामकाज, देवाणघेवाण, विविध योजना इत्यादी विषयी सुमारे २.३० तास ग्रंथालयाच्या विषयी चर्चा अभ्यास केला.

कोल्हापूर इन्स्टिट्यूट टेक्नालॉजी इंजिनियरींग कॉलेजचे (को. टी. आय) ग्रंथपाल आर. के. जमाले यांनी महाविद्यालयीन २६४२४ ग्रंथाची माहिती सांगितली महाविद्यालयीन ग्रंथालयात कामकाज कसे करावे या संबंधी विद्यार्थ्यांना अभ्यासपूर्ण चर्चा केली.



४. ग्रंथालय मार्गदर्शन व्याख्यान :

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई, विभागीय केंद्र - कराडच्या ग्रंथालय व्यवस्थापन प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम वर्गातील विद्यार्थ्यांसाठी विशेष मार्गदर्शन कार्यशाळा दि. २३/०५/२००७ रोजी प्रौढ व निरंतर विस्तार कार्य विभाग शिवाजी विद्यापीठात आयोजित करण्यात आली होती. या कार्यशाळेचे अध्यक्ष ज्येष्ठ ग्रंथपाल मा. श्री. बी. आर. पालेकर होते व विशेष मार्गदर्शक म्हणून मा. श्री. सुतार सर, ग्रंथपाल यशवंतराव चव्हाण कॉलेज, कोल्हापूर व प्रौढ व निरंतर विभागाचे प्रमुख मा. काबंळे सर यांची विशेष उपस्थिती होती.

या कार्यशाळेत सुमारे २ तास तालिकीकरण प्रात्यक्षिक विषयाची सविस्तर माहिती सांगून आढावा घेण्यात आला. कॅटलॉग कार्ड कशी बनवायची त्याची शास्त्रीय माहिती सांगण्यात आली.

मा. काबंळे सर यांनी प्रौढ विभागाची विविध उपक्रमाची माहिती सांगून ग्रंथालय व्यवस्थापन प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम वर्गाच्या आयोजना मागील हेतू सांगितला.

५. सौ. वेणूताई चव्हाण स्मृती दिन : १ जून २००७

स्व. सौ. वेणूताई यशवंतराव चव्हाण यांच्या २४ व्या पुण्यतिथी दिनानिमित्त यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान व सौ. वेणूताई चव्हाण ट्रस्ट यांच्या संयुक्त विद्यमाने सकाळी ७.३० वाजता सौ. वेणूताईंच्या व साहेबांच्या प्रतिमेस पुष्पहार घालून कार्यक्रमाची सुरुवात झाली. यावेळी आदरणीय पी. डी. पाटील

साहेब, आमदार बाळासाहेब पाटील, मा. अशोकराव चव्हाण, जनता बँकेचे प्रमुख मा. विलासराव पाटील (बापू) वाठारकर, अॅड. मानसिंगराव पाटील, मा. प्रकाश पाटील (बापू) विविध मान्यवर, प्रतिष्ठीत व्यक्ती, शाळा, महाविद्यालये (तील शिक्षक व विद्यार्थी) मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

६. स्व. यशवंतरावजी चव्हाण यांनी सौ. वेणूताई चव्हाण यांना स्वहस्ताक्षरात लिहिलेल्या पत्रांचे प्रदर्शन -

मा. अध्यक्ष राम प्रधान साहेब यांनी सुचवल्याप्रमाणे ज्येष्ठ पत्रकार मा. रामभाऊ जोशी यांनी दिलेल्या स्वर्गीय चव्हाण साहेबांनी देशविदेशातून लिहिलेल्या मूळ पत्रांचे प्रदर्शन दि. १ जून २००७ रोजी सकाळी ९ वाजता झाले. या प्रदर्शनामध्ये साहेबांच्या मूळ पत्रा बरोबर साहेबांच्या विविध भावमुद्राचे, छायाचित्रांचे प्रदर्शन, छायाचित्रांचे ७५ अल्बम, २५० दुर्मिळ फोटो अत्यंत कलात्मक पद्धतीने मांडण्यात आले होते. विविध कार्यवृत्तांत, मान्यवरांच्या भेटीचे फोटोप्रदर्शन व वृत्तांत लोकांना पाहण्यासाठी दोन दिवस खुले ठेवले होते.

विविध मान्यवर, प्रतिष्ठीत बंधू भगिनी या प्रदर्शनाला भेट दिली. हळदी कुंकवाचा कार्यक्रम अत्यंत उत्स्फूर्तरीतीने झाला. दिनांक १ जून व २ जून २००७ रात्री १२ पर्यंत स्मृतीसदनाचा परिसर, स्त्रीया पुरुष, विद्यार्थ्यांनी गजबजून गेला होता.

७. डॉ. सौ. शिल्पा बहुलेकर - शास्त्रीय संगीताची सुश्राव्य मैफिल :

स्व. सौ. वेणूताई चव्हाण यांच्या २४ व्या स्मृतीदिना



निमित्त मुंबईच्या डॉ. सौ. शिल्पा बहुलेकर यांचा 'स्मृतिगंध' हा गायनाचा कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला होता. या कार्यक्रमास कराडकराचा उत्तम प्रतिसाद मिळाला. ज्येष्ठ नेते आदरणीय पी. डी. पाटील साहेब यांच्या हस्ते दीपप्रज्वलन करून कार्यक्रमाचे उद्घाटन झाले. आमदार मा. बाळासाहेब पाटील, मा. विलासराव पाटील (बापू) वाठारकर, मा. अशोकराव चव्हाण, मा. सुनिल पवार इत्यादी विविध मान्यवरांची कार्यक्रमास उपस्थिती होती.

शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, नाट्यगीत आणि भजन अशा बहुविध गीत प्रकाराचा समावेश केल्याने मैफलीची रंगत उत्तरोत्तर वाढतच गेली. एकाच मैफलीत बडा ख्याल, द्रुत बंदीश, ठुमरी, दादरा, नाट्यगीत, तराणा आणि संत मीराबाईची, संत कबरांची निर्गुण भजने असा विविधपूर्ण स्वराचा खजिना रसीकांना ऐकायला मिळाला.

८. इलेमेंट्री ग्रेड व इंटरमिजिएट ड्रॉइंग ग्रेड परिक्षा मार्गदर्शन कार्यशाळा दि. ५/८/२००७ ते २३/९/२००७

सृजनसृष्टी, कराड यांच्या संयुक्त विद्यमाने 'चित्रकला' मार्गदर्शन कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यशाळेचे उद्घाटन दि. ५/८/२००७ रोजी झाले.

कलेमुळे सृजनशिलता व एकाग्रता वाढते व बघता बघता ती जीवनाचा आधारच बनून जाते हा उपक्रम म्हणजे उद्याच्या भावी चित्रकाराच्या निर्मितीसाठी सुरू असलेली एक प्रकारची प्रेरणा मानावी लागेल.

सौ. वेणूताई चव्हाण सांस्कृतिक सभागृहात प्रत्येक

रविवारी सकाळी ८ ते ११ या वेळेत प्रशिक्षण वर्ग चालू असतो. कोणत्याही प्रकारची शुल्क न घेता कराड व आसपासच्या शाळेतील १५७ विद्यार्थी चित्रकलेचे प्रशिक्षण घेत होते. श्री. सतिश गायकवाड व श्री. विकास शेवाळे, प्रा. सतिश उपळावे, सौ. योगिता सुतार, श्री. प्रशांत मुठेकर, सुर्यकांत भिसे, प्रतिक भोसले, सोनाली पालेकर इत्यादी रंगकर्मींचे मार्गदर्शन व सहकार्य कार्यशाळेस मिळत आहे.

मुलांना विविध निसर्ग, वस्तू, स्मरण, मुक्तहस्त, संकल्प, भूमिती अशा प्रकारातील चित्राचे बारकाव्याने प्रशिक्षण दिले जाते. चित्रकलेबरोबर लहान मुलांच्या सृजनशिलतेत भर पडावी यासाठी विविध उपक्रम प्रतिष्ठानच्यावतीने राबवले जातात.

विशेष रंगकर्मींचे मार्गदर्शन

दि. १९/८/२००७ रोजी गौरीशंकर कला महाविद्यालय साताराचे प्राचार्य श्री. विजय धुमाळ व प्रा. सागर बोंद्रे यांचे विशेष मार्गदर्शन या कार्यशाळेस लाभले. रविवारी सकाळी ८ ते १ यावेळेत चित्रकलेविषयी चर्चात्मक मार्गदर्शन करून स्मरणचित्र, स्थिरचित्र इत्यादी विविध रेखांकने काढून दाखविली त्याचबरोबर चित्र काढताना विविध तर्कसंगती, रचना प्रमाण, रंगसंगती इत्यादीबाबत मार्गदर्शन केले.

या कार्यशाळेचा समारोप रविवार दि. २३/९/२००७ रोजी संपन्न झाला.

९. डॉ. एस. आर. रंगनाथन - जन्मदिन : ०९ ऑगस्ट ०७

भारतीय ग्रंथालय चळवळीचे जनक पद्मश्री डॉ. एस.



आर. रंगनाथन यांचा जन्मदिन सौ. वेणूताई चव्हाण संशोधन ग्रंथालयात संपन्न झाला. यावेळी श्री. शिवाजी मुळे, मा. रामभाऊ रेपाळ (लिबर्टी क्लब) इत्यादी मान्यवर बहुसंख्य वाचक ग्रंथालय व्यवस्थापन प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम वर्गाचे विद्यार्थी, विद्यार्थीनी तसेच प्रतिष्ठान व ट्रस्टचे सर्व कर्मचारी उपस्थित होते.

डॉ. एस. आर. रंगनाथन यांच्या ११५ व्या जयंतीनिमित्त मा. मोहनराव डकरे यांनी त्यांच्या कार्याचा छोटेखानी आढावा घेतला. एक ग्रंथपाल म्हणून देशाचे नाव आंतरराष्ट्रीय स्तरावर नेण्याचे काम रंगनाथन यांनी केल्याचे त्यांनी स्पष्ट केले उपसचिव श्री. अनिल पाटील यांनी आभार मानले.

१०. ६० व्या स्वातंत्र्यदिन : १५ ऑगस्ट २००७ :

देशाचा ६० वा स्वातंत्र्य दिन प्रतिष्ठानचे सचिव मा. मोहनराव डकरे यांच्या शुभहस्ते प्रतिष्ठानच्या विरंगुळा कार्यालयात व सौ. वेणूताई चव्हाण पब्लिक चॅरिटेबल ट्रस्ट कराडमध्ये ध्वजारोहण कार्यक्रमाने संपन्न झाला.

यावेळी शिवाजी हायस्कूलचे शिक्षक, विद्यार्थी प्रतिष्ठानचे व ट्रस्टचे सर्व कर्मचारी, विविध मान्यवर, नागरिक उपस्थित होते. यावेळी ध्वजारोहणानंतर विद्यार्थ्यांना खाऊ वाटप करण्यात आले.

११. ति. विठामाता स्मृतिदिन :

स्व. यशवंतरावजी चव्हाण यांच्या मातोश्री स्व. विठामाता यांचा ४२ वा स्मृतिदिन त्यांच्या जन्मगावी देवाराष्ट्रे

ता. कडेगाव, जि. सांगली, यशवंतराव चव्हाण हायस्कूल व कला विज्ञान कनिष्ठ महाविद्यालय देवाराष्ट्रे या ठिकाणी दि. १८/८/२००७ रोजी संपन्न झाला.

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई, विभागीय केंद्र कराड महिला व्यासपीठ व यशवंतराव चव्हाण कला विज्ञान कनिष्ठ महाविद्यालय यांच्या संयुक्त विद्यमाने कोल्हापूरच्या प्राचार्या सौ. विजयाताई पाटील कोल्हापूर यांनी स्व. विठामाताच्या अविस्मरणीय कार्याचा भावपूर्ण आढावा घेतला. प्रारंभी प्रतिष्ठानचे सचिव श्री. मोहनराव कृष्णाजी डकरे यांनीही हृदयस्पर्शी भाषण केले. मा. श्री. संग्रामसिंह देशमुख यांनी आपल्या अध्यक्षीय भाषणामध्ये स्व. चव्हाण साहेबांच्या जन्मस्थळाच्या विकासासाठी सर्वांनी एकत्रीत प्रयत्न करण्याची अपेक्षा व्यक्त केली. यावेळी महाविद्यालयातील होतकरू गरीब विद्यार्थ्यांना गणवेश वाटप करण्यात आले.

१२. विज्ञान कार्यशाळा : स्पेसशटल ते स्पेस स्टेशन (कल्पना ते सुनिता) दि. १९/९/२००७ :

डॉ. कल्पना चावला केंद्र, कराड यांच्या संयुक्त विद्यमाने विज्ञान व तंत्रज्ञान विषयक स्लाईड शो सह विशेष प्रा. मोहन आपटे खगोलशास्त्रज्ञ, मुंबई यांनी स्पेसशटल ते स्पेस स्टेशन 'कल्पना ते सुनिता' यांच्या कार्याचा आढावा घेणारे व्याख्यान दिले.

प्रा. मोहन आपटे यांनी सांगितले की, "स्पेस शटल हे मानवी बुद्धीचा विलक्षण आविष्कार असून आत्तापर्यंत १७९ उड्डाणे झाली आहेत. त्यातून ८३३ लोकांनी प्रवास केला. या



माध्यमातून खगोलशास्त्राचे ज्ञान प्राप्त झाले आहे. त्यांनी यावेळी स्लाईड शोद्वारे स्पेस शटल व ते तयार कसे केले जाते.' या संबंधीची सर्वकष माहिती दिली. ते म्हणाले, 'पहिले स्पेस शटल हे झरिया म्हणजे (उषःकाल) हे १९९८ साली पाठविण्यात येऊन स्पेस स्टेशन उभारणीला आता गती प्राप्त होत आहे. ९० फूट उंच व २४० फूट लांब अशा या स्पेस स्टेशनमध्ये ३ जण रहात असतात. एकूणच २०१० मध्ये हे स्पेस स्टेशन पूर्ण होईल. या संबंधीची सर्वकष माहिती त्यांनी स्लाईड शो द्वारे अवकाश यंत्रणेतील संशोधनाच्या अनुषंगाने पाहता आता अवकाश पर्यटन ही संकल्पना रुजली गेली आहे.' यावेळी कल्पना चावला ते सुनिता विल्यम यांनी केलेल्या अंतराळ संशोधनाची माहिती डॉ. आपटे यांनी दिली.

कार्यक्रमाच्या प्रारंभी विज्ञान गीत सादर केले. प्रा. सौ. शोभना रैनाक यांनी प्रास्ताविक केले. प्रतिष्ठानचे सचिव श्री. मोहनराव डकरे यांनी आभार मानले. कार्यक्रमास मोठ्या संख्येने विज्ञान रसिक शालेय विद्यार्थी विद्यार्थीनी उपस्थित होते. सातारा, इस्लामपूर, सांगली येथूनही लोक आले होते. १३. पद्मश्री डॉ. एस. आर. रंगनाथन : स्मृतिदिन - २७ सप्टेंबर २००७

ग्रंथालय शास्त्राचे जनक पद्मश्री डॉ. एस. आर. रंगनाथन यांचा ३५ वा स्मृतिदिन संपन्न झाला. याप्रसंगी कराडमधील ज्येष्ठ ग्रंथपाल प्रा. बाळकृष्ण पालेकर व प्रतिष्ठानचे सचिव श्री. मोहनराव डकरे यांनी स्व. यशवंतराव चव्हाण, स्व. सौ. वेणूताई चव्हाण व स्व. डॉ. एस. आर.

रंगनाथन यांच्या प्रतिमेस पुष्पहार अर्पण केले.

प्रा. बाळकृष्ण पालेकर यांनी कै. डॉ. एस. आर. रंगनाथन यांच्या ग्रंथालय शास्त्रातील योगदाना विषयी गौरवपूर्ण शब्दात आदरांजली वाहिली. उपसचिव श्री. अनिल पाटील यांनी कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन केले.

१४. महात्मा गांधी जयंती - दि. २ ऑक्टोबर २००७

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी यांच्या १३८ व्या जयंतीचे औचित्य साधून माजी उपपंतप्रधान दिवंगत यशवंतराव चव्हाण यांच्या ग्रंथ संग्रहातील गांधीजीची दुर्मिळ छायाचित्रे गांधीजींनी स्वताः लिहिलेली व त्यांच्यावर इतरांनी लिहिलेली पुस्तके यांचे अनोखे प्रदर्शन कराडकरांना अनुभवायास मिळाले.

सौ. वेणूताई चव्हाण स्मारकात हे प्रदर्शन भरवण्यात आले होते. या प्रदर्शनाचे उद्घाटन यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानचे सचिव श्री. मोहनराव डकरे यांच्या हस्ते करण्यात आले.

स्व. चव्हाण साहेबांच्या संग्रहात असलेली व स्वतः गांधीजींनी लिहिलेली पुस्तके "पंचायतराज", १९५९ ची आवृत्ती मेरे सपनो का भारत, कुदरती उपचार, हित् स्वराज्य, आश्रम-जीवन, मंगल-प्रभात, समाजमे स्त्रियोंका स्थान और कार्य, अीसा-मेरी नजरमें. आत्मकथा सत्याचे प्रयोग, मराठी व हिंदी आवृत्ती इत्यादी अनेक स्वतः लिहिलेली व त्यांच्या विषयी इतरांनी लिहिलेली GANDHI A STUDY IN REVOLUTION - Geoffery Ashe, म. गांधीजींची अखेरची चार वर्षे, आधुनिक जगतमें गांधीजीकी कार्य - पद्धतीया, राम राज्य, कैसे हो, हमला



गांधी पर, संस्थाए मात्र बहाना है, चलो रे, सबके बापू, अन्तिम झोंकी, संक्षिप्त आत्मकथा, गांधी रहित मानस, आशाका, अेक मार्ग, गांधीजीकी जीवन निष्ठा, मुलांचे गांधीजी, दारूबंदी का?, गांधीजी ओणि लोकस्वराज्य, बापू - कथा, गांधीजी मानव मानव नि महामानव, गांधीजीके पावन, प्रसंग, अैसे थे बापू, गांधीजीचा खंड १-२ इत्यादी इतरांनी लिहिलेली अत्यंत दुर्मिळ पुस्तके, गांधीजीची वचने, फोटो असा दिवंगत चव्हाण साहेबांच्या संग्रहातील अत्यंत दुर्मिळ खजिना कराडकरांना पहायला मिळाला हे प्रदर्शन दिवसभर पाहण्यासाठी नागरिकांची मोठी गर्दी होती.

१५. चव्हाण प्रतिष्ठानचा ग्रंथालय व्यवस्थापन प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम वर्गाचा निकाल १००%

कोल्हापूर शिवाजी विद्यापीठाचा प्रौढ आणि निरंतर शिक्षण व विस्तारकार्य योजने अंतर्गत घेण्यात आलेल्या ग्रंथालय व्यवस्थापन प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम परीक्षेमध्ये यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई, विभागीय केंद्र कराडच्या केंद्राचा निकाल १०० टक्के लागला. यामध्ये

- १) प्रथम क्रमांक कु. थोरात गीतांजली सदाशिव ७१.००%
- २) द्वितीय क्रमांक कु. डोईफोडे आदिती धनंजय ७०.४२%
- ३) तृतीय क्रमांक कु. शिंदे वर्षा रामचंद्र ७०.४२%

यांनी पटकावला केंद्रातर्फे एकूण ३३ विद्यार्थी परीक्षेस बसले होते. त्यापैकी २२ विद्यार्थी विशेष प्राविण्यासह प्रथम श्रेणीत उत्तीर्ण झाले व ११ विद्यार्थी द्वितीय श्रेणीत उत्तीर्ण झाले आहेत. निकाल १००% लागला.

सदर अभ्यासक्रम वर्गाचे प्रकल्प अधिकारी म्हणून श्री. अनिल पाटील यांनी काम पाहिले. या अभ्यासक्रमासाठी प्रा. बाळकृष्ण पालेकर, श्री. श्रीधर कुलकर्णी, सौ. अबोली उमराणी, श्री. योगेश मुळे, दीपक पाटील, कल्पना पाटील इत्यादी शिक्षकांचे मार्गदर्शन लाभले.

१६. स्वर्गीय चव्हाण साहेबांच्या छायाचित्रांचे प्रदर्शन -

सौ. वेणूताई चव्हाण सांस्कृतिक सभागृहात स्वर्गीय यशवंतराव चव्हाण यांचे निवडक फोटो, सौ. वेणूताई चव्हाण ट्रस्ट, यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान इत्यादीबाबत विविध कार्यक्रमांचे फ्लॅश बॅक फोटो प्रदर्शन आयोजित केले जाते.

स्वर्गीय चव्हाण साहेबांच्या विविध भावमुद्रा, मान्यवरांनी दिलेल्या भेटी, त्यांचे अभिप्राय, दुर्मिळ छायाचित्रांचे प्रदर्शन, त्यांची मानपत्रे, ग्रंथ, त्यांच्यावर लिहिलेली निवडक २००० काव्ये, इत्यादींचे सातत्याने प्रदर्शन घेऊन त्यांच्या कार्याची ओळख फ्लॅश बॅक प्रदर्शनातून लोकांच्यासमोर ठेवण्याचे कार्य यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान विभागीय केंद्र कऱ्हाड करत असते. साहेबांची निवडक १००० छायाचित्रे आठवड्यातून बदलून वर्षभर या छायाचित्रांच्या प्रदर्शनाचे कामकाज चालू असते.

१७. मान्यवरांच्या भेटी

यशवंत विचारांनी पुनित झालेल्या सौ. वेणूताईच्या स्मृतीनी सुगंधीत झालेल्या "विरंगुळा" (केंद्र, य. च. प्र.) व वेणूताई चव्हाण स्मृती मंदिराला देशभरातून व महाराष्ट्रातून विविध मान्यवर, शाळा, संस्था, संघटना भेट देत असतात.



विभागीय केंद्र, नाशिक

* कार्यवृत्त *

१. अपंग कल्याण आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य पुणे, क्रीडा व युवक संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य पुणे, नाशिक महानगरपालिका नाशिक, जिल्हा परिषद नाशिक, यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई, नवमहाराष्ट्र युवा अभियानाचे अपंग हक्क विकास मंच यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित अपंग मुला/मुलींच्या राज्यस्तरीय क्रीडा स्पर्धा दि. १७ व १८ फेब्रुवारी २००७ रोजी संपन्न झाल्या. महाराष्ट्रातील सुमारे दोन हजार विविध प्रवर्गातील अपंगांनी सहभाग नोंदविला.

अपंगांच्या दृष्टीने विशेष सोयी-सुविधा उपलब्ध कराव्यात, यासाठी केंद्र शासनातर्फे नाशिक महानगरपालिकेला राजे संभाजी स्टेडीयमसाठी एक कोटी रुपयांची व जलतरण तलावासाठी पंचवीस लाख रुपयांची मदत देण्याचे मान्य केलेले आहे. त्याचा पाठपुरावा प्रतिष्ठानच्या विश्वस्त सुप्रिया सुळे व्यक्तिशः करित आहेत. या स्पर्धेच्या उद्घाटनास भारत सरकारचे अपंग कल्याण विभागाचे आयुक्त डॉ. मनोज कुमार, अपंग कल्याण आयुक्त आर. के. गायकवाड, नाशिक विभागाचे महसूल आयुक्त डॉ. संजय चहांदे, जिल्हाधिकारी एस. चौक्कलिंगम, महापालिका आयुक्त विलास ठाकूर, जिल्हा परिषद मुख्य कार्यकारी अधिकारी ज्ञानेश्वर राजूरकर यांची विशेष उपस्थिती लाभली.

या स्पर्धेचा समारोप व पारितोषिक वितरण सोहळा क्रिकेटपटू विनोद कांबळी यांच्या शुभहस्ते, मा. रमेश उबाळे, प्रधान सचिव - सामाजिक न्याय, महाराष्ट्र राज्य यांच्या अध्यक्षतेखाली, आर. के. गायकवाड, आयुक्त - अपंग कल्याण, सिनेअभिनेता अरुण नलावडे व राष्ट्रीय खेळाडू निलेश शिंदे, डॉ. सुजाता चहांदे, सौ. भावना राय, सौ. विजया चौक्कलिंगम, सौ. वर्षा ठाकूर, सौ. पद्मा राजूरकर, सौ. नीता चौधरी, सौ. संध्या व्यंकेश्वर यांच्या प्रमुख उपस्थितीत संपन्न झाला.

२. यशवंतराव चव्हाण यांच्या ९४ व्या जयंतीच्या पूर्वसंध्येस (रविवार दि. ११ मार्च २००७) दिशा क्लासेसच्या संचालिका श्रीमती सुधा मेहता यांच्या मार्फत आनंदवल्ली परिसरातील शेतमजूर/कामगार/ घरगुती काम करणाऱ्या महिला यांच्या मुला-मुलींना शिक्षण देण्याचे कार्य केले जाते. या आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल असलेल्या ७२ मुला - मुलींना टी-शर्ट/ टोपी व लहान मुलांच्या पुस्तकांचे वाटप मा. सौ. वर्षा विलास ठाकूर यांच्या शुभहस्ते संपन्न झाले.

३. यशवंतराव चव्हाण यांच्या ९४ व्या जयंतीनिमित्त (सोमवार दि. १२ मार्च २००७) नाशिक जिल्हा आदिवासी महिला हक्क संरक्षण समिती पेठ संचालित मुलींचे वसतीगृह/



बालसदन मु. कापुरसिरा पाडा, पो. पेठ, ता. पेठ, जि. नाशिक या आदिवासी मुलांच्या वसतीगृहासाठी पिण्याच्या पाण्याचा विभागीय केंद्रामार्फत वीस हजार लिटरच्या चार पाण्याच्या टाक्या पुरविण्यात आल्या.

४. भारत - पाकिस्तान मैत्रीसाठी जि. १ मार्च २००७ रोजी पनवेलहून सायकलवर निघालेले नऊ युवक - युवती हे दि. २ मार्च २००७ रोजी नाशिक येथे आले. पनवेल निसर्ग मित्र मंडळाच्यावतीने या सायकल यात्रेचे स्वागत करण्यात आले होते. या सायकल यात्रेचे स्वागत यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई, विभागीय केंद्र नाशिकमार्फत करण्यात आले.

५. सातारा येथील प्रतिष्ठानचे विश्वस्त मा. लक्ष्मण माने यांच्या मार्गदर्शनाखाली कै. शारदाबाई पवार आश्रमशाळा, सातारा, क्रांती ज्योती सावित्रीबाई फुले प्राथमिक आश्रम शाळा, उपडी, साथी एस. एम. जोशी माध्यमिक आश्रम शाळा करंजे येथील विद्यार्थी - विद्यार्थिनीना स्पोर्ट्स टी - शर्टचे वाटप करण्यात आले.

६. एका अस्सल नाशिककराच्या नजरेतून टिपलेलं.... मनातल्या आठवणींसह लेखणीतून झिरपलेलं डॉ. कैलास कमोद लिखित तसेच यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई,

विभागीय केंद्र नाशिक व राजहंस प्रकाशन निर्मित 'माझे नाशिक' या पुस्तकाचा प्रकाशन सोहळा रविवार, दि. १५ एप्रिल २००७ रोजी परशुराम सायखेडकर नाटयगृह, नाशिक. येथे सायंकाळी मा. डॉ. नरेंद्र जाधव, कुलगुरू पुणे यांच्या शुभहस्ते, मा. ना. छगन भुजबळ, सार्वजनिक बांधकाम मंत्री, महाराष्ट्र शासन यांच्या अध्यक्षतेखाली व मा. श्री. उत्तम कांबळे, संपादक - सकाळ न्यूज नेटवर्क यांच्या प्रमुख उपस्थितीत संपन्न झाला.

७. यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबईचे नवमहाराष्ट्र युवा अभियान, कुसुमाग्रज प्रतिष्ठान नाशिक व विश्वास को - ऑप. बँक यांच्या संयुक्त विद्यमाने इयत्ता दहावीमध्ये इंग्रजी, गणित व विज्ञान या विषयात नापास झालेल्या विद्यार्थ्यांसाठी 'विशेष मार्गदर्शन वर्ग' बुधवार, दि. १ ऑगस्ट २००७ पासून आयोजित करण्यात आला.

नापास झालेल्या विद्यार्थ्यांना नैराश्याच्या गर्तेतून बाहेर काढण्यासाठी विशेष मार्गदर्शन वर्गाचे आयोजन करण्यात आले होते. इंग्रजी, गणित व विज्ञान या विषयातील तज्ज्ञ ११ शिक्षकांना मार्गदर्शनासाठी खास आमंत्रित केले होते. या विशेष मार्गदर्शन वर्गास एकूण ३० विद्यार्थ्यांनी लाभ घेतला.

“दुनियेच्या सफरीत मी अनेक लहान - मोठे देश पाहिले, परंतु त्यांतील काही देशांची स्मृती, विशिष्ट कारणांमुळे, तिथे जे पाहिले, अनुभवले, ऐकले, त्यामुळे कायमची टिकून राहिली आहे. सामान्यतः मी जिथे जातो, तेथील इतिहासप्रसिद्ध स्थळे पाहतो आणि सांस्कृतिक जीवन समजून घेण्याचा प्रयत्न करतो.”

- स्व. यशवंतराव चव्हाण



विभागीय केंद्र, लातूर

★ कार्यवृत्त ★

- १) दि. १४ एप्रिल २००७ - मंगरूळ ता. औसा येथे नवजीवन विद्यालय मंगरूळ व यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई विभागीय केंद्र, लातूर यांच्या संयुक्त विद्यमाने भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर जयंती उत्सव साजरा करण्यात आला. या कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी या भागातील थोर समाजसेवक मा. श्री. खादर पटेल साब गुबाळ हे होते. प्रमुख पाहुणे म्हणून प्रा. शाम आगळे यांची उपस्थिती होती.
- २) दि. ६ मे २००७ - लातूर विभागीय केंद्राच्यावतीने राजर्षी शाहू महाराज यांचा स्मृतीदिन साजरा करण्यात आला.
- ३) दि. १७ मे २००७ भारताचे पहिले पंतप्रधान जवाहरलाल नेहरू यांचा स्मृतीदिन साजरा करण्यात आला.
- ४) दि. १७ जून २००७ :- राष्ट्रमाता जिजाऊ यांचा स्मृतीदिन साजरा करण्यात आला. या कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी विभागीय केंद्राचे कोषाध्यक्ष मा. श्री. भाऊसाहेब गोरे हे होते. तर प्रमुख पाहुणे म्हणून लातूर येथील ज्येष्ठ विधीज्ञ अॅड. मनोहरराव गोमारे हे होते. या कार्यक्रमास लागत लातूर शहरातील व परिसरातील महिला बचत गट संमेलन घेण्यात आले. या कार्यक्रमास माता-भगिनी बहुसंख्येने उपस्थित होत्या.
- ५) दि. २६ जून २००७ :- या दिवशी राजर्षी शाहू महाराज यांच्या १३३ व्या जयंतीनिमित्त सामाजिक न्याय दिवस प्रतिष्ठानच्यावतीने पाळण्यात आला. या कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी विभागीय केंद्राचे सचिव श्री.हरिभाऊ जवळगे हे होते तर प्रमुख पाहुणे म्हणून माजी प्राचार्य डॉ. सोमनाथ रोडे हे होते.
- ६) दि. १० जुलै २००७ - नांदेड येथे विभागीय केंद्राचे सचिव श्री. हरिभाऊ जवळगे यांच्या उपस्थितीत, माजी गृहराज्यमंत्री मा. डॉ. माधवराव किन्हाळकर यांच्या अध्यक्षतेखाली बैठक संपन्न होऊन नांदेड जिल्ह्यातील पुढील कार्यक्रमाची रुपरेषा ठरविण्यात आली. यावेळी प्रा.रामचंद्र भिसे, प्रा. पंजाबराव चव्हाण, इंजिनिअर अशोकराव बिरादार यांनी उपयुक्त अशा सुचना मांडल्या.
- ७) दि. ११ जुलै २००७ - कळमनुरी जि. हिंगोली येथे प्रा. कस्तुरे यांच्या निवासस्थानी विभागीय केंद्राची बैठक प्रा. कस्तुरे यांच्या अध्यक्षते खाली घेण्यात येऊन हिंगोली जिल्ह्यातील विभागीय केंद्राच्या कार्यक्रमाची रुपरेषा ठरविण्यात आली. यावेळी विभागीय केंद्राचे सचिव



श्री. हरिभाऊ जवळगे यांनी विभागीय केंद्राच्या कार्याची सविस्तर माहिती दिली.

८) दि. ३१ जुलै २००७ - साहित्यसम्राट अण्णाभाऊ साठे यांच्या जयंतीचा कार्यक्रम घेण्यात आला. या कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी लातूरचे सामाजिक कार्यकर्ते मा. श्री. शंकरभारती हे होते. तर प्रमुख पाहुणे म्हणून प्रा. डॉ. माधवराव गाडेकर हे होते.

९) दि. १२ ऑगस्ट २००७ - श्री. हरिभाऊ जवळगे यांच्या उपस्थितीत तुळजापूर येथील यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालयात प्रा. अनंतराव भाने यांच्या अध्यक्षतेखाली बैठक घेऊन उस्मानाबाद जिल्ह्यातील विभागीय केंद्राच्या कार्यक्रमाची रुपरेषा ठरविण्यात आली.

१०) दि. १३ ऑगस्ट २००७ - या दिवशी अहिल्यादेवी होळकर यांचा स्मृतीदिन साजरा करण्यात आला. या कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी विभागीय केंद्राचे अध्यक्ष प्रा. डॉ. जे. एम. वाघमारे सर हे होते तर प्रमुख पाहुणे म्हणून डॉ. शिवराज नाकाडे, आशाताई भिसे, मिनाताई सूर्यवंशी इत्यादी माता-बंधू उपस्थित होते.

११) दि. २७ ऑगस्ट २००७ - भारतीय स्वातंत्र्याच्या हिरक महोत्सवानिमित्ताने विभागीय केंद्राच्यावतीने मराठवाड्यातील नामवंत कथाकथनकारांच्या कथा कथनाचा कार्यक्रम घेण्यात आला. या कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी विभागीय केंद्राचे अध्यक्ष डॉ. जे. एम. वाघमारे सर तर प्रमुख पाहुणे म्हणून प्रा. डॉ. नागोराव कुंभार, प्राचार्या

शाहीन पठाण, प्रा. सुर्यनारायण रणसुंभे हे उपस्थित होते. यावेळी तरुण व वयोवृद्ध कथाकार, बंधु- भगिनींनी आपल्या आवडत्या कथेचे कथाकथन केले.

१२) दि. २ सप्टेंबर २००७ - यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई विभागीय केंद्र लातूरच्यावतीने कायदेविषयक चिकित्सा केंद्राचा शुभारंभ करण्यात आला. या कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी विभागीय केंद्राचे अध्यक्ष डॉ. जनार्दन वाघमारे हे होते तर प्रमुख पाहुणे म्हणून मा. श्री. अॅड. उदय गवारे अध्यक्ष लातूर जिल्हा वकील मंडळ व भाऊसाहेब गोरे कोषाध्यक्ष विभागीय केंद्र लातूर यांची उपस्थिती होती. या केंद्राचा शुभारंभ मा. श्री. अनंतराव लव्हुळकर प्रमुख जिल्हा व सत्र न्यायाधीश लातूर यांच्या शुभहस्ते करण्यात आला.

१३) दि. १७ सप्टेंबर २००७ - लातूर जिल्हा स्वातंत्र्यसैनिक संघटनेचे जिल्हा अध्यक्ष मा. श्री. चंद्रशेखरदादा वाजपेयी यांचा मराठवाडा मुक्तीसंग्राम दिनाचे औचित्य साधून 'यशवंत तुमच्या दारी' या विभागीय केंद्राच्या संकल्पनेप्रमाणे थोर स्वातंत्र्यसेनानी वयोवृद्ध व यशवंतरावजी चव्हाण यांचे सहकारी वाजपेयीदादा यांचा त्यांच्या लातूर येथे निवासस्थानी जाऊन विभागीय केंद्राचे अध्यक्ष डॉ. जे. एम. वाघमारे सरांच्या हस्ते यथोचित सत्कार करण्यात आला. यावेळी विभागीय केंद्राचे सचिव श्री. हरिभाऊ जवळगे व विभागीय केंद्राचे हितचिंतक, लातूर येथील ज्येष्ठ विधिज्ञ अॅड. मनोहरराव गोमारे इत्यादींची उपस्थिती होती.



Yashwantrao Chavan Pratishthan's Academy of Information Teechnology

(Report - January 2007 to October 2007)

General

1. The YCP's Academy of Information Technology continued its IT training programmed during the year 2006-2007 and achieve good results.

2. Even though there was considerable attrition in managing staff levels the quality of training continued to be maintained.

3. The entire AIT moved to the basement of the building during Jan-Feb. 2007 due to renovation work on the fourth floor and construction of fifth floor. The AIT will be housed on the fifth floor by end 2007, with vast improvements in infrastructure and technical operations.

Diploma in Advanced Computing (DAC)

4. The DAC February 2007 Course was concluded on 02 nd February 2007. A farewell was organized for the students. The 1st YCP Cash Prize of Rs. 2000/- was awarded to Mr. Tanveer Momin, 2nd YCP Cash Prize of Rs. 1,500/- was awarded to Ms. Prema Bhagatⁱ and 3rd YCP Cash Prize of

Rs. 1,000/- was awarded to Mr. Vikas Gupta.

5. DAC course is a 6 Months fulltime course. Students will be admitted to the course on the basis of Common Entrance Test (CET). Technical abilities and HR Interview are part of their admission procedure. The Technical Interview and HR Interview for DAC August 2007 Batch were conducted between 9th and 14th July 2007. 80 students are admitted for DAC August 2007 Batch. The Batch commenced on 20th August 2007 and will conclude on 2nd F0ebruary 2008.

6. Dates for DAC Feb. 08 Batch CETs are as follows:

CET # 1 CET # 2

27/10/07 to 29/10/07 24/11/07 to 28/11/07

Diploma in Information Technology (DIT)

7. Six batches of DIT were conducted and 79 candidates trained.

8. New DIT batches will be starting from 22nd October 2007. Timings for these batches are



respectively 8.00 a.m. and 6.00 p. m. to 8.00p.m.

9. The DIT batch which started on 16th August 2007 will be concluded on 10th November 2007.

Timing is 4.00 p. m. to 6.00 p. m.

Diploma in Multimedia Creations (DMC)

10. Three batches of DMC were conducted.

11. New batch for DMC would be starting in the Third week of October 2007. Timings would be from 8. a. m. to 10 a.m.

12. DMC batch had started on 1st August 2007 and will be concluded on 28th November 2007.

Timing for this batch is 2.00 p.m. to 4.00 p.m. 5 Students are admitted for the same.

Diploma in Advanced Computer Arts (DACA)

13. DACA Feb 07 batch concluded on 21st July

07. DACA Feb 07 batch visited the Kala Ghoda Festival on 6th Feb 2007 for studying different

forms of Arts. These different forms of Arts are inclusive of Paintings, Illustrations, Installation,

sculptures and Creative works. Students had great interaction with various artists and learned about

the various art forms. Students learned about different styles of painting like abstract painting

and realistic painting. Students even experienced

live portrait sketching. Creative work consisted of tattoo designing, creative interiors, gift wrappers & paper jewellery.

14. DACA course is a 6 Months fulltime course.

Students are admitted to the course on the basis of their performance in the Common Entrance Test (CET) and interview during which their drawing skills and creative abilities are tested.

Interview for DACA August 2007 Batch was conducted on 20th July 07 and 17th August 07, 18 students are admitted for DAC August 2007

Batch. The Batch commenced on 27th August 2007 and will be concluded on 16th February 2008.

15. A Cartoonist "Vikas Sabnis" shared his views on caricature for DACA August 07 batch on 28th September 07

16. DACA Feb. 07 batch will be attending ASIF India's Animation Day on 21st October 07.

17. Date for DACA Feb. 08 Batch CET are as follows:

CET # 1 CET # 2

28/10/07 17/10/07

Certificate course in programming using C (CCPC)

18. A Certificate course in Programming using C



had started on 17th September 2007 and will go on till 12th November 07. Timings for this batch is 6.00 pm to 9.00 pm. This course prepares students for the DAC Course.

Corporate Training

19. We are running Special LINUX Course for E. S. I. C (Employees State Insurance Corporation) From 4th June 2007 to since date. We have conducted Ten Batches and trained 165 executives. Training for Ten more batches will be conducted.

20. We had conducted two batches of CCCO for DGNP department of Naval Dockyard. 27 candidates successfully completed their training. One batch was held from 26 February 2007 to 09 March 2007 & another from 18 June 2007 to 30 June 2007. Timings for these batches were from 2.30 pm to 5.30 pm.

21. We also trained 20 executives of Arya Offshore

Pvt. Ltd between 18 August 2007 and 8 September 2007 (only on Saturday). Timings for this batch were 9.00 am to 5.00 pm

22. We are running CCIT Course for Door Steps School's Executives (Only on Mon. Wed. & Fri). 16 Executives are participating. It started from 01st August 2007 and will be continuing till 31st December 2007.

23. We are also running CCCO Course for executives of Food Corporation of India. We have trained 300 candidates till date.

Award for Consistent Best Performance

24. 28th Convocation Ceremony was held on 27th January 2007 at Pune. Yashwantrao Chavan Pratishthan's Academy of Information Technology was awarded for Consistent Best Performance among all C-DAC training centers in the country. In three institutes were awarded in the ceremony.

“उद्योगधंद्यांची वाढ, नव्या शेतीचे आगमन व शिक्षणप्रसार यांनी पूर्वीची गावे व शहरे यांच्यामध्ये काही मौलिक फरक होत चालला आहे. त्याची दखल घेऊन शहरे व गावे यांच्यामध्ये एक नवा संवाद सुरू केला पाहिजे. आचार - विचारांची देवाणघेवाण वाढविली पाहिजे. हे झाले, तर एकजिनसी समाजजीवन निर्माण करण्याच्या दिशेने बरीचशी प्रगती होईल.”

- स्व. यशवंतराव चव्हाण



आतापर्यंत 'यशवंतराव चव्हाण राज्यस्तरीय पारितोषिक' प्रदान करण्यात आलेल्या

★ मान्यवरांची नावे ★

| | | | |
|----|------------|-------------------------|--|
| १ | १२.३.१९९० | मा. तात्यासाहेब कोरे | कृषी-औद्योगिक समाजरचना पारितोषिक |
| २ | १२.३.१९९१ | डॉ. बाबा आढाव | सामाजिक एकात्मता पारितोषिक |
| ३ | १९९२ | मा. विजय बोराडे | ग्रामीण विकास पारितोषिक |
| ४ | १२.३.१९९३ | मा. नारायण सुर्वे | मराठी साहित्य-संस्कृती पारितोषिक |
| ५ | २५.११.१९९४ | मा. आप्पासाहेब चमणकर | कृषी-औद्योगिक समाजरचना पारितोषिक |
| ६ | १२.३.१९९६ | श्रीमती शांताबाई दाणी | सामाजिक एकात्मता पारितोषिक |
| ७ | २५.११.१९९६ | मा. अरुण निकम | ग्रामीण विकास पारितोषिक |
| ८ | २५.११.१९९७ | मा. शंकरराव खरात | मराठी साहित्य-संस्कृती पारितोषिक |
| ९ | २५.११.१९९८ | डॉ. जयंतराव पाटील | कृषी-औद्योगिक समाजरचना पारितोषिक |
| १० | २५.११.१९९९ | मा. दादासाहेब रुपवते | सामाजिक एकात्मता पारितोषिक |
| ११ | २५.११.२००० | सर्च-शोधग्राम, गडचिरोली | ग्रामीण विकास पारितोषिक |
| १२ | २५.११.२००१ | कवयित्री शांता शेळके | मराठी साहित्य-संस्कृती पारितोषिक |
| १३ | २५.२२.२००२ | 'प्रयोग' परिवार संस्था | कृषी-औद्योगिक समाजरचना पारितोषिक |
| १४ | २५.११.२००३ | डॉ. यू.म.पठाण | सामाजिक एकात्मता पारितोषिक |
| १५ | २५.११.२००४ | डॉ. चित्रा नाईक | ग्रामीण विकास/आर्थिक- सामाजिक विकास |
| १६ | २५.११.२००५ | पं. भीमसेन जोशी | मराठी साहित्य-संस्कृती/ कला,क्रीडा पारितोषिक |
| १७ | २५.११.२००६ | श्री. भवरलाल जैन | कृषी-औद्योगिक समाजरचना/व्यवस्था प्रशासन पारितोषिक |
| १८ | २५.११.२००७ | डॉ. अनिल काकोडकर | विज्ञान तंत्रज्ञान पारितोषिक |



Yashwantrao Chavan Pratishthan's
Academy Of Information Technology



"Take Full Advantage of the IT Boom"
Start Your Drive Now To Cover The Miles Of IT

AUTHORISED TRAINING CENTER OF C-DAC

Admission Open

(For Part Time and Weekend Batches)

CCIT
(Certificate Course in IT)

- Computer Fundamentals
- Configuring and using a PC
- Office Automation Tools
(MS Word, MS Excel, MS Power Point)
- Internet
- Personality Development

DMC
(Diploma In Multimedia Creation)

- Graphics Visualization
- Integration of Text & Graphics
 - Slide Presentations
 - Digital Multimedia
 - HTML Scripting & Web Animation
- Note: (Software: MS Word, MS PowerPoint, Adobe Illustrator, Photoshop, Indesign, Premiere, Macromedia Director, Dream weaver, Flash, Sound Forge, HTML)

DIT
(Diploma In IT)

- Computer Fundamentals
- Configuring and using a PC
 - Office Automation Tools
(MS Word, MS Excel, MS Power Point)
 - Database Concepts using MS-Access
 - Communication using PC
 - Common Utilities (Scanning, Printing, Win Zip, CDROM, Floppy Disk etc.)

**Certificate course in
Programming using C**

- Programming in C
- Data Structures in C
- Introduction to OOPs
- Visual Basic
- Mock CET
- General Aptitude

**"ADVANCED COURSES
FOR ENGINEERS /
NON ENGINEERS"**

**Certificate Course in
PC Assembling**

- Introduction
- PC Assembling
- Peripherals
- Installation and using software

Y.B Chavan Pratishthan's Academy Of Information Technology, 4th Floor, Gen.J.B. Marg, Mantralaya,
Nariman Point, Mumbai - 21

Web Site: www.ycpait.org • Email: ycpait@vsnl.com • Tel: 22043619/22817975



प्रतिष्ठानची विक्रीसाठी अक्सलेली प्रकाशने :

| | किंमत रुपये |
|--|------------------|
| ०१. यशवंतराव चव्हाण : विधी मंडळातील निवडक मराठी भाषणे भाग १ संकलन : डॉ. व्ही. जी. खोबरेकर | २००.०० |
| ०२. वाय. बी. चव्हाण : सिलेक्टेड स्पीचेस-विधीमंडळ भाग २ संकलन : डॉ. व्ही. जी. खोबरेकर | २५०.०० |
| ०३. सिलेक्टेड स्पीचेस इन पार्लमेंट-वाय. बी. चव्हाण खंड १ ते ४ संपादन : राम प्रधान | प्रत्येकी २५०.०० |
| ०४. यशवंतराव चव्हाण यांचे मौलिक विचार संकलन - ना. धों. महानोर | ३.५० |
| ०५. सह्याद्रीचे वारे - यशवंतराव चव्हाण | ३०.०० |
| ०६. म. ज्योतिबा फुले यांचे निवडक विचार संकलन - प्रा. गजमल माळी | १२.०० |
| ०७. बेकारी निर्मूलनातून ग्रामीण विकास - संपादक - वि. स. पागे | ३५.०० |
| ०८. महाराष्ट्रातील दुष्काळ आणि जलसंपत्तीचे नियोजन - संपादन - अण्णासाहेब शिंदे | ६०.०० |
| ०९. महाराष्ट्र : एक दृष्टीकोन - शरदराव पवार - भाषणसंग्रह - संपादन - दादासाहेब रुपवते | ७५.०० |
| १०. पंचायत राज, जिल्हा नियोजन आणि ग्रामीण विकास - संपादन पी. बी. पाटील | १००.०० |
| ११. नवभारत : परिवर्तनाची दिशा - संपादन - पी. बी. पाटील | १००.०० |
| १२. विमुक्तायन : महाराष्ट्रातील विमुक्त जमाती : चिकित्सक अभ्यास - संशोधक / लेखक - लक्ष्मण माने | २५०.०० |
| १३. महिलांसंबंधीचे धोरण : स्वयंसिद्धतेकडे वाटचाल - डॉ. नीलम गोन्हे | १५.०० |
| १४. यशवंतराव चव्हाण - चरित्र - लेखक - अनंतराव पाटील | ८०.०० |
| १५. शब्दाचे सामर्थ्य - संपादन. राम प्रधान | ३७५.०० |
| १६. महाराष्ट्राची चार दशकांतील वाटचाल : एक आढावा (इंग्रजी) (यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई व महाराष्ट्र आर्थिक विकास मंडळ यांचे संयुक्त प्रकाशन) | २५०.०० |
| १७. बाऊंटीफूल बनियन - डॉ. कर्मवीर भाऊराव पाटील चरित्र खंड ४ (इंग्रजी) - व्ही. पी. जी. पाटील | ८००.०० |
| १८. ज्येष्ठ नागरिकांसाठी पुस्तिका | ३५.०० |
| १९. अजिंठा - (काव्यसंग्रह) लेखक - ना. धो. महानोर (इंग्रजी) | १५०.०० |
| २०. 'ई' बुक (मराठी/इंग्रजी) (यशवंत साहित्य / फोटो) | १५०.०० |
| २१. न्यायालयीन व्यवहार आणि मराठी भाषा | ४००.०० |

• व्हिडीओ कॅसेटस् •

- ★ मी. एस.एम. : एस. एम. जोशी यांचा जीवनपट
- ★ तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी : तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी यांचा जीवनपट
- ★ प्रवासी पक्षी : सुप्रसिद्ध साहित्यिक कुसुमाग्रज यांचा जीवनपट
- ★ पुल वृत्तांत : पु. ल. देशपांडे यांचा जीवनपट
या चारही व्हिडीओ कॅसेट्स्ची निर्मिती यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानने केली असून दिग्दर्शनाची जबाबदारी सुप्रसिद्ध दिग्दर्शक डॉ. जब्बार पटेल यांनी पार पाडली.
- ★ कॉ. केशवराव जेधे : कॉ. केशवराव जेधे यांचा जीवनपट, दिग्दर्शन - श्री. राम गबाले
- ★ येस् आय एम कम्युनिस्ट : कॉ. श्रीपाद अमृत डांगे यांच्या जीवनावरील अनुबोधपट
दिग्दर्शन - विनय नेवाळकर

क्षणचित्रे

कराड विभागीय केंद्राचे सचिव श्री. मोहनराव डकरे, सहसचिव - श्री. अनिल पाटील, श्री. मारुती मोहिते, श्री. व्ही. बी. पाटील (मुख्याध्यापक - देवराष्ट्रे हायस्कूल), श्री. पी. एम्. डुकळे व मान्यवर.



यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठानच्या कायदेविषयक सहाय्य व सल्ला फोरमचे सदस्य-सचिव मा. श्री. एम. बी. पवार कार्यशाळेत मार्गदर्शन करतांना. सोबत व्यासपिठावर मा. अॅड. प्रमोद ढोकळे व मान्यवर.

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई, विभागीय केंद्र लातूर तर्फे दि. २७ ऑगस्ट २००८ रोजी भारतीय स्वातंत्र्याच्या हिरक महोत्सवानिमित्त घेण्यात आलेल्या 'कथा - कथन' स्पर्धेत आपली कथा सादर करताना कु. अंजली, व्यासपिठावर विभागीय केंद्राचे अध्यक्ष डॉ. जे. एम. वाघमारे, मार्गदर्शक अॅड. मोहनराव गोमारे, श्री. भाऊसाहेब गोरे व प्राचार्य शाहीन पठाण.



नवमहाराष्ट्र युवा अभियान, मुंबई, राष्ट्रसेवा दल व आदिवासी सहज शिक्षण परिवार, मासवण, ता. पालघर, जि. ठाणे यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित 'किशोर - किशोरी शिबीरात' सहभागी झालेले विद्यार्थी.

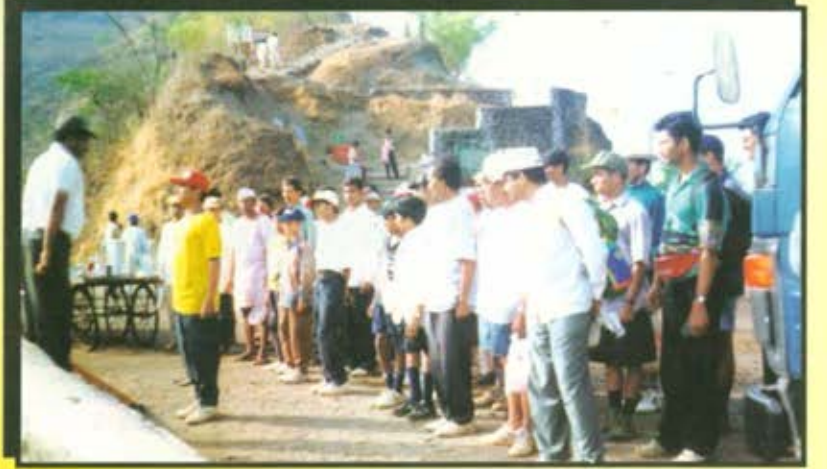
01/01/2005

क्षणचित्रे



यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई, विभागीय केंद्र औरंगाबाद तर्फे आयोजित केलेल्या 'व्हिजन करियर - २००७' चे उद्घाटन करताना मा. राजेशभैय्या टोपे, नगरविकास राज्यमंत्री, सोबत सिनेकलाकार डॉ. गिरीश ओक, अध्यक्ष श्री. नंदकिशोर कागलीवाल, मा. श्री. मधुकरअण्णा मुळे, श्री. विजय कान्हेकर, श्री. निलेश राऊत व सहभागी.

श्री शिवछत्रपती अॅडव्हेंचर ऑर्गनायझेशन व नवमहाराष्ट्र युवा अभियान यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित १३व्या राज्यस्तरीय साहसी रायगड प्रदक्षिणा मोहिमेमध्ये चितदरवाजा येथे मुंबई महानगरपालिका नागरी पुरस्कार सन्मानित मोहिम प्रमुख श्री. अनिल चाळके, उपमोहिमप्रमुख श्री. प्रमोद पाडावे व सहभागी.



यशवंतराव चव्हाण तंत्रज्ञान प्रबोधिनी (सी - डॅक) ने आयोजित केलेल्या कार्यक्रमात सहभागी झालेले विद्यार्थी.

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई, विभागीय केंद्र पुणे तर्फे दिनांक १७-०७-०७ रोजी सकाळी वारकऱ्यांना चहा - नाष्टा देण्यात आला. वाटप करताना श्री. भैय्यासाहेब खैरे व कार्यकर्ते.

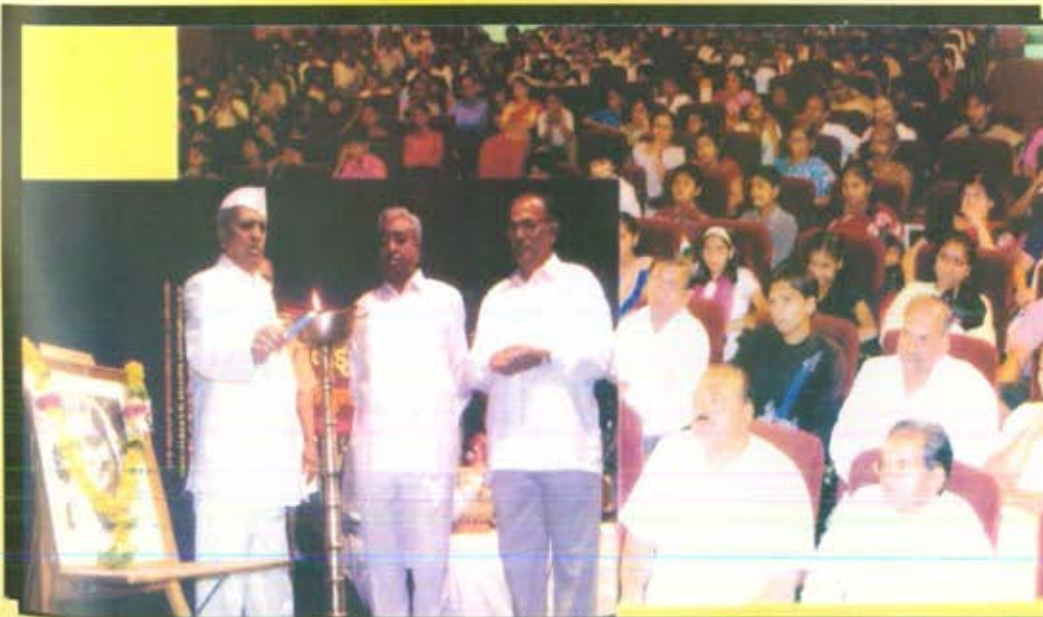


क्षणचित्रे



यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई, पुणे विभागीय केंद्राच्या महिला व्यासपीठातर्फे दिनांक १४-८-०७ रोजी स्वातंत्र्य दिनाच्या पूर्वसंधेला आयोजित कविसंमेलनात भाग घेतलेल्या स्पर्धाकांचे कविता वाचन व व्यासपीठावर बसलेले डॉ. आस्मिता शेवाळे, श्री. आनंदराव पाटील, मा. श्री. वापूसाहेब खैरे, प्रा. पंडित व श्री. भिडे

'माझं नाशिक' पुस्तक प्रकाशन करतांना डावीकडून मा. हिमांशु राॅय - पोलीस आयुक्त, मा. ना. छगन भुजबळ - सार्वजनिक बांधकाम मंत्री, लेखक डॉ. कैलास कमोद, मा. श्री. उत्तम कांबळे, संपादक -सकाळ न्यूज नेटवर्क, मा. डॉ. वसंत पवार, डॉ. शोभा वच्छाव व राजहंस प्रकाशनचे श्री. सदानंद बोरसे तसेच मा. विनायकदादा पाटील, श्री. विश्वास ठाकूर व मान्यवर.



१ जून २००७ रोजी सौ. वेणूताई चव्हाण यांच्या २४व्या स्मृतीदिन कार्यक्रमाचे उद्घाटन करताना आदरणीय मा. पी. डी. पाटीलसाहेब, मा. विलासराव पाटील (बापू), मा. अशोकराव चव्हाण व उपस्थित श्रोतृवृंद.



अपंग
मुला/मुलींच्या
राज्यस्तरीय
क्रीडा स्पर्धा

२००६-०७

नाशिक



अपंग



• अपंग कल्याण आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे • क्रीडा व युवक संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे • चक्रवंतराव धन्वाण प्रतिष्ठान, मुंबई, नवमहाराष्ट्र युवा अभियानाचे 'अपंग हक्क विकास मंच'
• नाशिक महानगरपालिका, नाशिक • जिल्हा परिषद, नाशिक • विश्वास को-ऑप.बँक लि., नाशिक

कार्यालय : जे. जगन्नाथराव भोसले मार्ग, मंत्रालयासमोर, मुंबई - ४०० ०२१. दुरध्वनी : ०२२-२२०२ ८५९८, २२८५ २०८९. फॅक्स : ०२२-२२८५३०८२

वित्तव्यवस्थापन व प्रचार : सत्यम प्रिंटींग प्रेस, मुंबई - ४०० ०६२.